इकाईः 9 संबंध और काल्पनिक नातेदारी*

संरचना

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 नातेदारी अध्ययन में संबंध की संस्कृति

9.2.1 जेनेट कार्स्टनः नातेदारी में संबंध शब्द का उपयोग

9.2.2 मलय नातेदारी का 'प्रतीक'और 'पदार्थ'

9.2.3 मलय नातेदारी के प्रमुख सिद्धांत

9.3 सहायता प्राप्त प्रजनन में संबंध

9.3.1 अंडा और वीर्य दान के माध्यम से संपर्क

9.3.2 सरोगेसी (गर्भ) के माध्यम से संबंध का अनुभव

9.4 काल्पनिक नातेदारी का अर्थ और प्रासंगिकता

9.5 काल्पनिक नातेदारी के रूप

9.6 सारांश

9.7 संदर्भ

9.8 बोध प्रश्नों के उत्तर के नमूने

9.0 उद्देश्य

- नातेदारीके अध्ययन में एक नई दिशा के रूप में संबंध और काल्पनिक नातेदारी की अवधारणा की व्याख्या करना।
- परीक्षण करना कि कैसे ये इन अवधारणाओं द्वारा जीव विज्ञान और विवाह पर आधारित नातेदारी के सिद्धांतों की चुनौती का परीक्षण करना।

* डॉ. महिमा वर्मा और डॉ. अर्चना प्रसाद, दिल्ली विष्वविद्यालय द्वारा लिखित एवं डॉ. धर्मराज कुमार द्वारा अनूदित

- नृवंशविज्ञान संबंधी अध्ययन के माध्यम से संबंध की सांस्कृतिक समझ के अनुप्रयोग की व्याख्या करना।
- काल्पनिक नातेदारी की दृष्टि से स्थापित होने वाली नातेदारी की स्थानीय समझ के महत्त्व को स्वीकार करना।

9.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम नातेदारी अध्ययन की अवधारणा से पहलेक्या था को समझने के लिए इस अध्ययन में हुए प्रमुख परिवर्तनों को सर्वप्रथम सांस्कृतिक दृष्टिकोण से देखेंगे,जिसके अगुआ डेविड श्नाइडर हैं। उसके बाद हमजेनेट कार्स्टन द्वारा किये गए मलय प्रायद्वीप के अध्ययन में सांस्कृतिक दृष्टिकोण के प्रयोग केकुछ तरीकों का अध्ययन करेंगे। इस इकाई में नई प्रजनन प्रौद्योगिकियाँया सहायक प्रजनन के माध्यम सेबदलते नातेदारीके अर्थ का भी अध्ययन करेंगे।

1980 के दशक की शुरुआत में,नातेदारीअध्ययन में नातेदारी अध्ययन के दृष्टिकोण के रूप में संबंध की अवधारणा का उभार हुआ।संबंध के विचार के उद्भव से पहले नातेदारी अध्ययन में मौलिक परिवर्तन हुए, जिन रिश्तों की पहचान पहले वंश और बंधन के पारंपरिक निर्भरता से सुनिश्चित होती थी उन नातों का आधार अब सांस्कृतिक विशिष्टता को समझने में थी।पूर्व में,मॉर्गन,डब्ल्यू. एच. आर रिवर्स,लेवी–स्ट्रॉस,मैलिनोवस्की,ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन,फोर्ट्स जैसे सिद्धांतकारों ने नातेदारी पर अपने लेखन के माध्यम से उत्तरी अमेरिकी,यूरोपीय और ब्रिटिश स्कूलों में बहुमूल्य योगदान दिया। वे नातेदारी के वंश और गठबंधन प्रथा के दायरे में काम करते थे,जो दरअसल रक्त या विवाह से जुड़ा होता था।

बाद में, 1970के दशक में नातेदारीके दृष्टिकोण के रूप मेंसांस्कृतिक दृष्टिकोणउभरा। वंश और गठबंधन के सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को,जिसका उद्भव पश्चिमी नातेदारी सिद्धांतों में पश्चिम और विशेषतः पश्चिम से बाहर के मिश्रित संस्कृति को समझने के लिए हुआ था, जबरन फिट करने की कोशिश करने के बजाय,सांस्कृतिक दृष्टिकोण ने रोजमर्रा के जीवन में अनुभव किये जा रहे नातेदारी को समझने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया। नातेदारीकी संरचना की व्याख्या करने के बजाय, नातेदारी के प्रचलन में परिवर्तन किया गया। नातेदारी के इस दृष्टिकोण के प्रवर्तक डेविड श्नाइडर थे। श्नाइडर मानदंडों के लिएमूल्य और प्रतीक महत्त्वपूर्ण थे, अतः नातेदारी सांस्कृतिक है। उन्होंने बताया कि नातेदारीको समझने के लिए वंश और गठबंधन सिद्धांतों को ही केवल नातेदारी की व्याख्या के रूप में स्वीकार करना नातेदारीके बहुत सीमित दृष्टिकोण का परिचायक है। उन्होंने नातेदारी के पश्चिमी मानवशास्त्रीय अध्ययनों पर निर्भर होने के बजाय नातेदारी और संबंध के सांस्कृतिक विशिष्टता पर बल दिया।

श्नाइडर के नातेदारी अध्ययन के सांस्कृतिक दृष्टिकोण ने मानवशास्त्रीय अध्ययनों, जो संस्कृति पर अधिक ध्यान ध्यान देता है, का पुनरुत्थान किया । इन अध्ययनों को 'नई नातेदारीअध्ययन'के रूप में संदर्भित किया गया है क्योंकि वे गैर–जैविक रूप से निहित संबंध का पता लगाते हैं,जिसमें समय के साथ देखभाल के संबंधों के माध्यम से नातेदारीके उभार और सकारात्मक 'विकल्प'के जवाब में नातेदारी संबंध निर्मिती पर ध्यान केंद्रित किया जाता है (वेस्टन,2013)। इन अध्ययनों ने पश्चिम में नातेदारीके नए और उभरते रूपों को उजागर किया है। नातेदारी अध्ययन के क्षेत्र में विषमलैंगिक विवाह में अस्थिरता और तलाक,समान–लिंग विवाह का आगमन,लैंगिक समानता,समलैंगिक अधिकार,गिरती प्रजनन दर, अकेले वाले लोगों की बढ़ती संख्या आदि जैसे कुछ मुद्दे हैं। गैर–जैविक तरीके से निर्मित रिश्तों की व्यापकता को समझने में 'संबंध'की अवधारणा प्रासंगिक हो गई। इससे विद्वानों और सामाजिक वैज्ञानिकों में यह जागरूकता पैदा हुई कि नातेदारीकेवल शारीरिक संबंधों से ही नहीं बल्कि विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भों में सामाजिक रूप से निर्मित होती है।

बोध प्रश्न 1

1. सांस्कृतिक दृष्टिकोण नातेदारी को समझने में किस प्रकार सहायता करता है?

.....

.....

.....

.....

2. सांस्कृतिक दृष्टिकोण के लिए माने जाने वाले सिद्धांतवादी का नाम बताएँ।

.....

.....

.....

.....

9.2 नातेदारी अध्ययन में संबंध से तात्पर्य

संस्कृतियों की व्याख्या और संबंध का पालन करने के विभिन्न तरीकों का पहचान कर,पारंपरिक नातेदारी सिद्धांतों से परे जाने के लिए नातेदारी का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है। हाल के वर्षों में उन रिश्तों को समायोजित करने के लिए नातेदारी की परिभाषा को व्यापक बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है जो रक्त या विवाह पर आधारित नहीं हैं,लेकिन फिर भी रिश्तेदारों की ही तरह महत्त्व,मान और मान्यता का आनंद लेते हैं क्योंकि वे उन कार्यों का

अनुपालन कर रहे होते हैं जोनातेदारी की भूमिकाओं में सन्निहित होती थी,यही स्थिति काल्पनिक नातेदारी के मामले में हैं। नातेदारीमें खुलेपन का श्रेय नातेदारी पर सांस्कृतिक दृष्टिकोण के भीतर नृविज्ञान में विकास को दिया जा सकता है जो स्थानीय दृष्टिकोण, जो इसे अपने रोजमर्रा के जीवन में अनुभव करते हैं, से नातेदारीको समझने की आवश्यकता पर बल देता है। हम जिन लोगों का अध्ययन करते हैं,वे कैसे संबंध की अपनी धारणाओं को परिभाषित और निर्मित करते हैं और वे उनका मूल्य निर्धारण कैसे करते हैं?

1990के दशक में नातेदारी अध्ययन के संदर्भ में संबंध का उभार उन परिभाषाओं को चुनौती देने के लिए हुआ,जिसके अंतर्गत नातेदारीके मानदंडों का निर्धारण सिर्फ सगोत्रता (रक्त संबंध) या आत्मीयता (विवाह संबंध) तक ही प्रतिबंधित थी। इस शब्द का इस्तेमाल पहली बार जेनेट कार्स्टन ने अपनी पुस्तक 'संबंध की संस्कृति'में किया था,जिसमें तर्क दिया गया था कि नातेदारी को केवल जीव विज्ञान और प्रजनन के संदर्भ में नहीं समझा जा सकता है। संबंध का अर्थ है कि नातेदारीव्यापक अर्थ में सामाजिक है क्योंकि रिश्ते गैर–जैविक तत्त्वों से इतर देखभाल और साझा के माध्यम से भी निर्मित होते हैं। यह रक्त संबंधों और गठबंधन के आधार पर औपचारिक और प्रतिबंधित नातेदारी की परिभाषाओं से हटकर अनौपचारिक रूप से जुड़े रहने के कारणनिर्मित नातेदारी को दर्शाता है। अनजान लोगों के बीच नातेदारी संबंधों के निर्माण के माध्यम से संबंध स्थापित किया जा सकता है। इसमें जैविक और वैवाहिक संबंधों के बाहर निर्मित संबंध शामिल हैं। ऐसे बने रिश्तों के स्वभाव में प्रवाह और परिवर्तनशीलता है। ऐसे रिश्ते जो आविष्कृत पारिवारिक बंधनों और परंपराओं के साथ संबंध बनाकर रक्त,विवाह और संपत्ति के कारण बनेनातेदारीप्रथा को बदल देते हैं हैं,उन्हें काल्पनिक नातेदारी कहा जाता है (वी.गीता, 2007:86)। जेनेट कार्स्टन के अनुसार,उस संबंध का विश्लेषण श्रेयस्कर होगा जिसमें लोग कार्य करते हैं और महसूस करते हैं। यह नृविज्ञान में नातेदारी के एक नए और अधिक लचीले अध्ययन को सक्षम बनाता है (कार्स्टन,1995:236)।

कार्स्टन के लिए, संबंध की संस्कृति 'व्यक्तित्व और नातेदारी का प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण'प्रदान करती है,जिसमें लोग रिश्ते निर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से समाज में पूर्ण सामाजिक प्राणी बन जाते हैं।

इसलिए नातेदारी को ना तो निश्चित या प्रदत्ततत्त्व या रक्त संबंध में खोजी जाने वाली प्रक्रिया के रूप में ना ही आत्मीय जाल के संदर्भ में समझा जाता था। नातेदारी एक ऐसी प्रक्रिया है जो रोजमर्रा के जीवन में भोजन,निवास और मित्रता इत्यादि को बाँटने के माध्यम से निर्मित और निर्दिष्ट होती है। नातेदारी वास्तव में लोगों के दैनिक जीवन औरउनकी दृष्टि में सबसे महत्त्वपूर्ण रिश्तों को कैसे सोचते हैं के बारे में है।

बोध प्रश्न 2

1. संबंध को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

2. संबंध नातेदारी के पुराने सिद्धांतों की आलोचना कैसे करता है?

.....

.....

.....

.....

9.2.1 जेनेट कार्स्टनः नातेदारी के 'प्रतीक' और 'पदार्थ'

श्नाइडर के विचारों से प्रेरित होकर,जेनेट कार्स्टन ने इस विचार का अनुसरण किया कि संबंध का अर्थ प्रत्येक विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भ में अलग है और मिश्रित–सांस्कृतिक सन्दर्भों में नातेदारी की दृष्टि लिंग,शरीर और व्यक्तित्व जैसे पूर्व अपरिचित तत्त्वों की प्रासंगिकता को ढूँढा। कार्स्टन ने मलय नातेदारी प्रणाली का अध्ययन किया,जिनका मत है कि लोगों के बीच भोजन और निवास जैसे आपसी पदार्थों के आदान–प्रदान और स्थानांतरण सेउनके बीच संबंध और नातेदारी का आधार बना। उनके लिए साझा सहभोजता के प्रति उनकी वचनबद्धता संबंध पर बल देने का एक तरीका है।

जेनेट कार्स्टन ने लैंगकॉवी में एक मलय परिवार के साथ 18 महीने और बाद में चार महीने और रहकर अपना अध्ययन किया। अपने प्रवास के दौरान,कार्स्टन ने उनके साथ भोजन साझा किया और घरेलू गतिविधियों में भाग लिया,जिसके कारण उन्हें एक नातेदार के रूप में पहचाना जाने लगा। पुलुआ लैंगकॉवी में मलेशियाई लोगों के बीच अपने नृवंशविज्ञान अध्ययन में,कार्स्टन ने पाया कि एक व्यक्ति बनने और सामाजिक संबंधों में भाग लेने के मामले में संबंध भोजन कराने यानीपोषण देना या पोषित होना और रहने को जगह देने पर आधारित है। यह जैविक और सामाजिक के बीच खींची गई स्पष्ट रेखा को चुनौती देता है।

पश्चिमी समाज में सह–निवास को सामाजिक माना जाएगा,जबकिपुलुआ लैंगकॉवी के मलय लोगोंजैसे अन्य समाजों में, जेनेट कार्स्टन के अध्ययन के अनुसार,स्थानीय समझ में जैविक और सामाजिक के बीच कोई अंतर नहीं दिखता। मलय भोजन और निवास के माध्यम से पूर्ण

रूप से पारिवारिक सदस्य बन जाते हैं। पहचान और पदार्थ परिवर्तनशील और तरल हैं। ये धारणाएँ नातेदारी और व्यक्तित्व के एक प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। ये नातेदारी की मानवशास्त्रीय परिभाषाओं को चुनौती देते हैं,जो प्रजनन पर केंद्रित होती हैं और जो "जैविक" और "सामाजिक"(कार्स्टन,1995:223)के बीच एक सार्वभौमिक विभाजन को मानती हैं। व्यक्तित्व,संबंध और भोजन पदार्थ के माध्यम से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं ––– रक्त जिसके माध्यम से लोग एक–दूसरे से जुड़े होते हैं। कार्स्टन ने अपने अध्ययन में मलय लोगों के बीच जैविक और सामाजिक के बीच नातेदारी के प्रवाह को सामने रखा है। उसने पाया कि पुलुआ लैंगकॉवी के लोगों के बीच नातेदारी के संबंध भी "घरों में एक साथ रहने और भोजन साझा करने से बनते हैं। समय के साथ,लम्बे समय तक साझा भोजन और एक साथ रहने से मूलतः असंबंधित लोगों, जो प्रवास, पालन–पोषण या विवाह द्वारा लाये गए थे, के बीच 'प्राकृतिक'संबंध स्थापित हो जाता है। इस प्रकार,जैविक और सामाजिक के बीच हमेशा विरोध नहीं होता ––– बल्कि दोनों एक ही समाज में समायोजित होजाता है (कार्स्टन, 2000:687)।

एक अवधारणा के रूप में सार्थक होने के लिए,नातेदारी को साझा शारीरिक पदार्थ के माध्यम सेनिर्मित संबंध की सांस्कृतिक विशिष्टता की धारणा से समझा जाना चाहिए। पश्चिम और कई गैर–पश्चिम समाजों में, यौन प्रजनन के परिणाम के रूप में इसकी व्याख्या की गई,अन्य संस्कृतियों में,यह भोजन औरएक ही घर में साथ रहने के परिणामस्वरूप हो सकता है।

9.2.2 मलय नातेदारी के 'प्रतीक' और 'पदार्थ'

पुलाऊ लैंगकॉवी के क्षेत्र में रहने वाले मलय लोगों में,भोजन साझा करना और एक ही घर में रहना प्रजनन की ही तरह नातेदारी के लिए मौलिक हैं। नातेदारी को केवल जैविक प्रजनन के संदर्भ में परिभाषित नहीं किया जा सकता है,बल्कि सामाजिक भी है क्योंकि सहभोजता को नातेदारी स्थापित करने के रूप में मान्यता दी गई है। जन्म केवल अस्तित्व में होने की प्रक्रिया की शुरुआत को परिभाषित करता है। संबंधित होना एक सतत प्रक्रिया है जो जीवनपर्यंत चलती रहती है,जब तक लोग घरों में एक साथ भोजन करते हैं। चूँकि लोग अपने जीवन में कई बार परिवर्तन के साथ खाते हैं,इसलिए नातेदारी स्थिर होने के बजाय परिवर्तनशील और तरल होती है। नातेदारी में स्पष्ट रूप से पदार्थों का आपस में बाँटना शामिल है। यह पदार्थ पिता से गर्भाधान के समय बीज के रूप में हो सकता है जिसे गर्भावस्था के दौरान माँ के रक्त द्वारा पोषित किया जाता है। लेकिन जैविक प्रजनन का यह तरीका संबंध स्थापित करने का केवल एक रूप है। व्यक्ति जन्म लेता है लेकिन शारीरिक पदार्थ तक सीमित नहीं रहता। पदार्थ की धारणा भोजन के माध्यम से प्राप्त की जाती है। इसलिए,मलय में संबंध साथ खाने पर आधारित है,जिसका अर्थ है सामान्य रक्त।

रक्त के माध्यम से नातेदारी की पहचान की जाती है और चूँकि भोजन से रक्त बनता है,खिलाना, मलय के बीच, नातेदारीनिर्मिति का एक अनिवार्य आधार है। पोषण–आहार को बाँटना पारिवारिक समूह में स्वीकृति का एक साधन है। साझा पदार्थ रक्त बंधन की स्थापना से जुड़ा है,जबकि जैविक अर्थों में यह अनिवार्य नहीं है। रक्त संबंध आम चूल्हे पर बनाए भोजन और माँ के दूध के रूप में साझा किए जा सकते हैं। साझा रक्त साझा स्त्री पदार्थ है,यह कभी पितृ रक्त नहीं होता। भोजन,रक्त और दूध के बीच एक निरंतरता होती है। माँ भोजन के रूप में चावल खाती हैंजिससे उनका रक्तसमृद्ध होता है। माँ का स्वस्थ शरीर बच्चे के लिए दूध का उत्पादन करता है। निम्न प्रकारों से भोजन संबंध का निर्माण करता है:

1. एक ही घर के चूल्हे में पके चावल कोहर रोज साथ भोजन शरीर में रक्त को बढ़ाता है। भोजन से ही रक्त बनता है। इसलिए, जिनके साथ रोज घर में भोजन करते हैं,उन्हें रक्त संबंधियों के बराबर माना जाता है।

2. माँ का दूध माँ के खून से बनता है। रक्त,दूध और चावलयुक्त भोजन माँ से ही प्राप्त होता है। महिलाओं के माध्यम से संबंध संचालित होता है। दूध पिलाना न केवल शारीरिक शक्ति का साधन मात्र है,बल्कि माँ–बच्चे के बंधन को मजबूत बनाने का भी एक तरीका है। जब कोई महिला ऐसे बच्चे को दूध पिलाती है जो उसकी जैविक संतान नहीं है,तो वह बच्चा उसके परिवार का हिस्सा बन जाता है और उसके जैविक बच्चों का भाई–बहन बन जाता है,जिससे वे दूध वाले भाई–बहन या पालक भाई–बहन बन जाते हैं। इस प्रकार,उन्हें बाद में एक–दूसरे से शादी करने की मनाही हो जाती है क्योंकि इस तरह के निर्णय को अनाचार माना जाता है।

मलय लोगों में कई मामलों में दूधमुँहा भाई–बहन बनना पाया जाता है,क्योंकि वहाँ ननिहाल के अलावा अन्य घरों में बचपन बिताना काफी आम है।औपचारिक और अनौपचारिक पालन–पोषण की व्यवस्था बहुत आम है। शिशुओं को जन्म देने वाली माँ के अलावा भी अन्य पड़ोसी या दूर की रिश्तेदार दूध पिला देती हैं। पदार्थों के हस्तांतरण से स्पष्ट होता है कि नातेदारी सुनिश्चित नहीं थी। बल्कि,यह गतिशील एवं दूसरों के साथ व्यक्ति के संबंधों पर परिवर्तनकारी प्रभाव डाल सकता है (कार्स्टन, 2011:25)। बाद में यह चिंता का विषय बन जाता है कि एक ही माँ द्वारा दूध पिलाए बच्चों में से कोई बच्चा व्यस्क होकर जीवनसाथी बन सकता है, जिसे अनाचार माना जाएगा। अनाचार से बचने के सिद्धांत के कारण,इन दिनों, अब अपने बच्चे के अलावा किसी और को दूध पिलाने की प्रथा नहीं है।

9.2.3 मलय नातेदारी के प्रमुख सिद्धांतदृघर,चूल्हा,खाना,स्त्रियाँ और भाई–बहन सब आपसे में घनिष्ठता से जुड़े हैं।

i. घर–मलय सहित दक्षिण एशियाई समाजों में घरकी एक केंद्रीय विशेषता सामाजिक संगठन है, इस हद तक कि लेवी–स्ट्रॉस ने मलय को 'घर–आधारित'समाज कहा है (कार्स्टन, 1991: 426)। मलय के अनुसार,परिजन माने जाने के लिए एक साथ रहना एक आवश्यक पैमाना है। पारिवारिक एकता के सिद्धांत सिद्धांत पर उनके रहन–सहन के तरीके पर बल दिया गया है:

- स्थानिक व्यवस्थाएँ न्यूनतम विभाजन दर्शाती हैं।
- एकीकृत कारक के रूप में एक ही चूल्हा या दापुर का अस्तित्व

कई जोड़े एक ही घर में साथ–साथ रहते हैं,लेकिन उनके पास एक ही चूल्हा (दापुर) होता है,जिसपर पर वे साथ–साथ खाना बनाते खाते हैं। घर की एकता और नातेदारी के बंधन कमजोर पड़ने के कारण, वेघर से बाहर दूसरों के घरों में खाने से परहेज करते हैं। बच्चों को कम उम्र से ही चावल के भोजन के लिए घर आने को सिखाया जाता है। यह सहभोजता ही घर के अर्थ को सार्थक करता है। यदि माँ की मृत्यु हो जाती है,तो बच्चे को अधिक से से अधिक घर के चूल्हे में उबाला हुआ पानी दिया जा सकता है। इस प्रकार, बच्चे अपनी माँ से निकटतम रूप से संबंधित होते हैं।

ii. महिलाओं की भूमिका – मलय घरों में महिलाओं की महती भूमिका है क्योंकि वे अपना अधिकांश समय वहीं बिताती हैं। महिलाएँ चूल्हे से––– घर का केंद्र बिंदु जहाँ महिलाएँ खाना बनाती हैं, दिन में अपनी मुख्य गतिविधियां करती हैं और खाली समय बिताती हैं, जुड़ी होती हैं। महिलाओं की उपस्थिति महत्वपूर्ण है,जैसा कि मलय समाज में देखा गया है कि एक विधवा अकेली रह सकती है,लेकिन विधुर नहीं क्योंकि एक महिला के बिना घर में 'घर की माँ'की कमी होती है। नए घर की स्थापना और निर्माण के दौरान महिलाएँ केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। घर बनाने के साथ ही वहाँ रहने वाली उम्रदराज महिला को प्रमुख पद (तियांग सेरी) धारण के लिए तैयार किया जाता है। माना जाता है कि इस पद में गृह आत्मा (सुमंगत रुमाह) भी बसती है,जो खुद एक महिला है। महिलाओं की तरह ही घरों को सजाया जाता है।

संबंध महिलाओं के माध्यम से ही संचालित होता है। नातेदारी के उद्भव के केंद्र में महिलाएँ ही होती हैं क्योंकि खाद्य पदार्थों जैसे रक्त (माँ के गर्भ और दूध के माध्यम से)का सेवन और चावल पकाकर खिलाना महिलाओं द्वारा ही किया जाता है। खिलाना गर्भ में ही शुरू हो जाता है जिससे बच्चे का पोषण माँ के खून से और जन्म के बाद माँ के दूध से होता है। माँ द्वारा स्तनपान बच्चे के शारीरिक और भावनात्मक विकास के साथ–साथ माँ–बच्चे के बीच के रिश्तों को मजबूत करने में मदद करता है। इससे माँ को पहचानने में बच्चा सक्षम बनता है,जिससे नातेदारी स्थापित होती है ।

निर्माण की प्रक्रिया अर्थात् खाद्य पदार्थ लेने की प्रक्रिया स्त्री के शरीर और क्रियाओं से होती है। औरत का खून बच्चे को बनाता है,माँ का दूध बच्चे का पोषण करता है और चूल्हे पर महिला द्वारा पकाया गया खाना परिवार का भरण–पोषण करता है और जिनके साथ वे हर दिन अपना भोजन करते हैं,वे आपस में एक करीबी नातेदार के रूप में शामिल हो जाते हैं।

iii. बच्चों का महत्वदृ घर और बच्चों के बीच का संबंध प्रगाढ़ होता है। नए घर का निर्माण सिर्फ जोड़ों की शादी से ही नहीं तय होता,बल्कि पहले बच्चे के जन्म के बाद ही होता है। यही कारण है कि विवाह में संतान महत्त्वपूर्ण होते हैं। प्रसव के दौरान जब दाई गर्भनाल को काटती है तो बच्चे की सेमांगट (आत्मा) अस्तित्व में आती है। जब बच्चा माँ से शारीरिक रूप से अलग होता है,तो दाई बच्चे का नाम रखती है। इस प्रकार,बच्चा अपने स्वतंत्र पहचान के साथ एक व्यक्तित्व बनता है। शारीरिक अंगों से प्रवेश करने वाली आत्माओं के प्रकोप से बचाने के लिए संस्कार किए जाते हैं। यही कारण है कि जीवन के पहले कुछ हफ्तों के दौरान बच्चे को कसकर लपेटा जाता है और उसके पास एक लोहे की वस्तु रखी जाती है जिससे आत्माओं के हमले को रोका जा सके। आत्माएँ 'बच्चे के जन्म के समय की गंदगी'से आकर्षित होती हैं,जिसे बच्चे के मुंडन और नहलाने से दूर किया जाता है। इन विचारों से पता चलता है कि बच्चा अपनी माँ पर अत्यधिक निर्भर होता है।

पश्चिमी नातेदारी अपने बच्चों पर अधिकार जैविक माता–पिता के अधिकारों को पूर्ण रूप से त्याग ने का संकेत देती है,जबकि मलय समाज के लालन–पालन में,जन्म देने वाले माता–पिता के साथ संबंध बनाए रखा जाता है,जिससे बच्चे में पहचान का संकट,जैसा कि पश्चिम मेंगोद लिए हुए बच्चों को सामना करना पड़ता है, पैदा नहीं होता है(कार्स्टन, 2007)।मलय समाज में बच्चों का पालन–पोषण प्रमुख घटक है और ये एक या दोनों माता–पिता की मृत्यु,तलाक या बाँझपन के कारण, तलाक से बचने के प्रयास के रूप में,लड़के और लड़कियों की लगभग समान संख्या में लिंग अनुपात को संतुलित करने के लिए और यदि वह कई गर्भधारण से गुजरती है तो माँ को बच्चों की देखभाल से मुक्त रखने के लिए भी किया जाता है(कार्स्टन,1991)। जिस बच्चे का पालन–पोषण किया जाता है,उनमें पोषण करने वाले लोगों के चारित्रिक लक्षण और गुण आ जाते हैं, भले ही उनका कोई जैविक संबंध साझा न हो क्योंकि वे सब एक ही चूल्हे पर पका हुआ भोजन करते हैं। सहभोजिता बच्चे और उसके पालक परिवार के बीच नातेदारी संबंध स्थापित करता है।

iv. सहोदर– मलय समाज में सहोदर भाई–बहनों के बीच के रिश्ते को सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है इस रिश्ते को प्राथमिकता दी जाती है (कार्स्टन 2011:22)।लैंगकॉवी में, जब लोगों काआपसी संबंध पूछा जाता हैतो वे हमेशा पूर्वजों के बीच सहोदर बंधन का हवाला देते। मिथकों और किंवदंतियों में अनेक आत्माओं कोसहोदर के रूप में उल्लेख किया गया है।

सहोदरों में आपसी सहयोग और जीवन भर साथ रहने की अपेक्षा रहती है, खासकर तब जब वे लगभग हमउम्र होते हैं। सहोदर संबंध को बनाए रखने और झगड़े से बचने के लिए,शादी के बाद सहोदरोंको एक ही घर में रहने से हतोत्साहित किया जाता है। सहोदर बहनों में, विवाहित पति को स्नेह के प्राकृतिक क्रम में व्यवधान माना जाता है,और प्रथानुसार इसकी भरपाई की जाती है। इससे सहोदर संबंध कोप्राथमिकता दी जाती है।

भाई–बहन की धारणा जन्म से पहले ही चलन में आ जाती है और जीवन भर व्यक्ति के भाग्य को प्रभावित करती रहती है। गर्भ में बच्चे को पोषित करने वाली गर्भनाल (यूरी) बच्चे की सहोदर मानी जाती है। भ्रूण और प्लेसेंटा मिलकर एक 'सहोदर'या "जन्म से सहोदर" बनाते हैं। इसीलिए जब बच्चे का जन्म होता है,तो उरी (जिसे 'छोटा'माना जाता है) को धोया जाता है,एक बुने हुए टोकरी में प्रथानुसार अन्य वस्तुओं के साथ रखकर पिता द्वारा घर के परिसर में, यह दर्शाने के लिए किया जाता है कि सहोदर हमेशा जुड़े हुए हैं (कार्स्टन,1991: 428),अंतिम संस्कार की तरह दफनाया जाता है। गर्भाशय को सहोदर भाई–बहन का पहला घर माना जाता है और प्लेसेंटा सहोदर माँ के रक्त से पोषण के माध्यम से बच्चे का पहला खाद्य पदार्थ साझा करने वाला संबंध है,क्योंकि वे पोषित रहने के लिए एक ही माँ के शरीर से भोजन प्राप्त करते हैं। ऐसे में, इकलौते बच्चों के भी प्लेसेंटा सहोदर होते हैं। जन्म के बाद घर की अवधारणा गर्भ में निर्मित सहोदरता का ही नकल है।

बोध प्रश्न 3

1. मलय समाज में संबंध महिला केंद्रित क्यों है? दो कारण दें।

.....

.....

.....

.....

2. 'सहोदर' को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

9.3 सहायता प्राप्त प्रजनन में संबंध

नई प्रजनन तकनीकों की सहायता से बनाए गए परिवारों में नातेदारी जाल होता है जिसमें माता–पिता या निर्धारित संख्या से अधिक सदस्य शामिल होते हैं। सहायता प्राप्त प्रजनन के लिए प्रौद्योगिकी के माध्यम से संपर्क बन जाते हैं। ये सदस्य अंडे,शुक्राणु या भ्रूण और सरोगेट्स के दाता होते हैं। इच्छुक माता–पिता विषमलैंगिक साथी या समान–लिंग वाले जोड़े या एकल माता या पिता भी हो सकते हैं। सहायता प्राप्त प्रजनन वैसे लोगों के बीच संबंध की वृहत संभावनाएं पैदा करता है जो रक्त या विवाह से आवश्यक रूप से न जुड़े हों। सहायता प्राप्त प्रजनन में संबंध की समझ ने नई शब्दावली का निर्माण किया है,उदाहरण के लिए सरोगेसी के माध्यम से भाई–बहन का वर्णन करने के लिए 'सरो–सिस्टर'शब्द का उपयोग। ये शब्द ना ही निश्चित हैं और न ही सार्वभौमिक, लेकिन कुछ संस्कृति के लिए विशिष्ट हैं। संबंध का अनुभव भी काल और परिवेश से है। इस खंड में,आइए देखते हैं कि शुक्राणु,अंडा, भ्रूण दान और सरोगेसी ने नातेदारी की पारंपरिक समझ को कैसे चुनौती दी है।

9.3.1 अंडा और वीर्य दान के माध्यम से संपर्क

दाता–सहायता प्राप्त प्रजनन में स्ट्रैथरन के अनुसार,नातेदारी विकेन्द्रित है (स्ट्रैथरन, 1995)। तीसरे पक्ष के युग्मकों (जैविक माता–पिता के अलावा) के एक समूह की भागीदारी है,बच्चे के साथ जिसका संबंध गर्भाधान से प्रारंभ हो जाता है। माता–पिता और संतानों के बीच अनेक स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के माध्यम से संबंध स्थापित होता है। हालाँकि, ज्यादातर मामलों में दाता गुमनाम होते हैं और सहायता प्राप्त प्रजनन के माध्यम से जन्मे बच्चों के साथ उनका कभी कोई संबंध नहीं होता है। दाता के गुमनाम रहने का कारण है कि दानकर्ता शुरुआत में हस्ताक्षरित कानूनी अनुबंध से बंध जाते हैं। दूसरी ओर,अंडों या शुक्राणुओं के दान से पैदा हुए बच्चों का आनुवंशिक संबंध नहीं होता है,लेकिन फिर भी उन्हें संतान माना जाता है। दाता द्वारा गर्भित परिवार के आपसी रिश्ते प्रजनन क्लीनिक में माता–पिता,बच्चों,दाताओं,डॉक्टरों और नर्सों के बीच जटिल संबंधों पर केंद्रित होते हैं। जैविक संबंध की अनुपस्थिति के बावजूद माता–पिता और बच्चे के बीच शारीरिक और भावनात्मक संबंध विकसित होते हैं। इस प्रकार, परिवार सांस्कृतिक संदर्भ में ही निर्मित होते हैं।

विषमलैंगिक जोड़े, जो चिकित्सा स्थिति के कारण सहायक प्रजनन पर निर्भर हैं, की सहायता करने के अलावा,अंडे और शुक्राणु दान समलैंगिक जोड़ों को भी माता–पिता बनने का विकल्प प्रदान करते हैं। एकल माता–पिता और समान–लिंग वाले जोड़े ने अपनी पसंदीदा परिवारनिर्माण के लिए दाताओं की सेवा का उपयोग किया है। इससे माता–पिता से जुड़ी संस्कृतकम निर्देशात्मक और अधिक लचीली हुई है। जिन पुरुषों और समलैंगिकों को पहले माता–पिता बनने से बाहर रखा गया था,उनके पास अब अपने पसंद के अनुसार का परिवार निर्माण का विकल्प है। साथ ही जिन महिलाओं को प्रजनन के लिए बाध्य किया जाता था, उनके पास भी प्रजननमुक्त होने का विकल्प है।

9.3.2 सरोगेसी (गर्भ) के माध्यम से संबंध का अनुभव

सरोगेसी दूसरे जोड़े के लिए एक बच्चे को जन्म देने के लिए महिला के गर्भ को किराए पर देना है। इसमें मौद्रिक होने के कारण सामाजिक और नैतिक दुविधाएँ लेनदेन होती है। शुक्राणु,अंडा और भ्रूण दान की तरह यह उन व्यक्तियों का जाल निर्मित करता है जो माता–पिता के अलावा बच्चे से संबंधित होते हैं। गर्भधारण करने वाली महिला बच्चे के जन्म के बाद कानूनी अनुबंध करती है कि उसका प्रजनन क्लिनिक से कोई संबंध नहीं होगा। सरोगेसी परिवार पारंपरिक परिवार की तरह ही रहता है, केवल इतना अंतर होता है कि मातृत्व की धारणा जटिल हो जाती है। मातृत्व को गर्भधारण की अवधि के बजाय गर्भ को किराए पर देने की क्षमता से परिभाषित किया जाता है। माँ और बच्चे के बीच गर्भकालीन जुड़ाव की अनुपस्थिति उनके शारीरिक और भावनात्मक संबंधों को प्रभावित नहीं करती। सरोगेसी उन व्यक्तियों को अवसर प्रदान करती है जो चिकित्सकीय कारणों, समान लिंग वाले और शादी के बंधन से मुक्त रहने वाले मगर बच्चों को पालने की इच्छा रखने वाले, से गर्भधारण नहीं कर सकते,समान–लिंग वाले साथी और जो बिना शादी के बच्चों को पालना चाहते हैं।

9.4 काल्पनिक नातेदारी का अर्थ और प्रासंगिकता

नृविज्ञान और सामाजिक विज्ञान में काल्पनिक नातेदारी को सामाजिक,अर्ध या छद्म नातेदारी के रूप में भी जाना जाता है जो एक सामान्य अवधारणा है। इसका तात्पर्य वैसे व्यक्तियों से है जो जन्म या विवाह से संबंधित नहीं है लेकिन एक दूसरे को नातेदार मानते हैं। इसमें विशेष रूप से नातेदारी से बाहर के व्यक्तियों के प्रति नातेदारी दायित्वों और संबंधों के पालन का विस्तार शामिल है। नातेदारी के अध्ययन के प्रारम्भ में सम्बन्धों के केवल दो रूपों को ही मान्यता दी गई– पहला रक्त का सम्बन्ध तथा दूसरा वैवाहिक सम्बन्ध। अन्य सभी संबंधों को नातेदारी से बाहर माना जाता था।

'काल्पनिक'शब्द का उपयोग वैसे सारे संबंधों का वर्णन करने के लिए किया जाता था,जिन्हें वास्तविक नहीं माना जाता था और शुद्ध ६ वास्तविक नातेदारी (रक्त और विवाह) और अशुद्ध या काल्पनिक संबंधों के बीच अंतर किया जाता था। 'काल्पनिक'शब्द का उपयोग बीसवीं शताब्दी के मध्य से लेकर अंतिम दशकों,जब नृविज्ञान को विखंडन द्वारा पुनर्संशोधित करने का प्रयास किया जा रहा था, तक सीमित था। यह अनुभव किया गया कि नातेदारीशारीरिक संबंधों का प्रतिबिंब मात्र नहीं है बल्कि विशिष्ट सांस्कृतिक संदर्भ में सामाजिक रूप से निर्मित भी है। प्रत्येक संस्कृति में काल्पनिक नातेदारी के अपने विशिष्ट तरीके हैं। दुनिया भर के अनेक समाजों में,'साझा पदार्थों'की धारणा के आधार पर ही काल्पनिक नातेदारी स्थापित की जाती है। इन पदार्थों के रूप में अंग प्रत्यारोपण,रक्त संचरण,वीर्य स्थानांतरण,माँ का दूध,आनुवंशिक

तत्व (जैसा कि प्रजनन तकनीकों के मामले में) शामिल हो सकते हैं,यानी ऐसा कुछ भी जो जीवन को सुनिश्चित करता है। इस अर्थ में,भोजन बाँटना भी पदार्थ माना जाता है,क्योंकि जीवन के मूल आधार रक्त को पोषित करता है।

9.5 काल्पनिक नातेदारी के रूप

विभिन्न समाजों में कल्पित नातेदारी संबंधों के भिन्न–भिन्न रूप होते हैं,उनमें से कुछ के उदाहरण निम्नांकित हैं।

1. **आत्माओं का भोज/पर्व –** यह प्रतिभागियों के बीच नातेदारी संबंधों की पहचान के लिएसमारोह की उपयोगिता को संदर्भित करता है। ऐसे अनुष्ठानों में शरीक होने वालों को एक ही संस्कार या अनुष्ठान पालन के कारण संबंधी समझा जाता है। इसके लिए आवश्यक था कि एक औपचारिक गठबंधन के रूप में स्वीकृत होने के लिए नातेदारी संबंधों के निर्माण के लिए किसी प्रकार का अनुष्ठान हो।

2. **मितरीदृ'मितरी'** शब्द का शाब्दिक अर्थ दोस्ती है जो काल्पनिक नातेदारी का एक रूप है। वैसे पुरुष जो काल्पनिक नातेदारी बंधन बनाते हैं उन्हें मितयऔरदूसरी महिला की महिला मित्र को मितिमी कहा जाता है। सामान्य मितरीको केवल हिंदू जाति और नेपाल के जातीय समूह के बीच काल्पनिक या अनुष्ठानिक नातेदारी के एक व्यक्तिवादी रूप में परिभाषित किया गया है। मितरी सदस्यता बनाने के दो नियम हैं,पहलाकि यह बंधन अपने ही कबीले या जाति से बाहरी व्यक्ति से बनता है और दूसरा कि यह केवल एक ही लिंग के लोगों के बीच बनता है।

3. **कॉम्पैड्रागो (Compadrazgo)–** यह काल्पनिक नातेदारी का एक प्रकार है जो पिछले कई वर्षों से मध्य मेक्सिको में पाया जाता है। "सह–माता–पिता"शाब्दिक अर्थ वाला,कॉम्पैड्रागो, एक ऐसा शब्द है जो बच्चे,उनके माता–पिता और उनके गॉडफादर के बीच के संबंधों का वर्णन करता है। बच्चे के बपतिस्मे से शुरू होकर,गॉडफादर और गॉडमदर बच्चे के आध्यात्मिक और भौतिक कल्याण को साझा करने के लिए सहमत होते हैं। यह गॉडपेरेंट्स,माता–पिता और बच्चों के बीच के बंधन को औपचारिक बनाता है।

4. **'रोड़ी'की गुरुंग परंपरा–** नेपाल में एक प्रसिद्ध गुरुंग परंपरा "रोड़ी" की संस्था है,जहाँ युवक–युवतियाँ काल्पनिक नातेदारी बंधन बनाते हैंसमाजीकरण,सामुदायिक कार्य और जीवनसाथी ढूँढने के लिए और रोड़ी सदस्य बनते हैं। यह समाजीकरण,सांस्कृतिक जिम्मेदारियों को साथ निभाने और शादी की संभावनाओं की तलाश के उद्देश्य से किशोरों द्वारा गठित एक संस्था है।

5. **अमेरिकी समुदायों के बीच सोरोरिटी–** यह महिलाओं का एक क्लब या संगठन है, खासकर युवा और छात्रों का जो मुख्यतः सामाजिक उद्देश्यों के साथ–साथ मुसीबत या जरूरत के समय एक–दूसरे की मदद करने के लिए बनाए जाते हैं। इस प्रकार के काल्पनिक संबंधों में,सामान्यतया सदस्य आपस मेंलड़कियों 'बहन'और लड़कों को 'भाई'बुलाते हैं।

क्रियाकलाप 1

इस खंड में हमने काल्पनिक नातेदारी की विभिन्न सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों पर चर्चा की है। अपने आस–पड़ोस में ऐसे संबंधोंपर ध्यान दें। अपने अध्ययन केंद्र पर इस विषय पर चर्चा करें।

बोध प्रश्न 4

1. आप काल्पनिक नातेदारी शब्द से क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

2. काल्पनिक नातेदारी के दो रूपों का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

9.6 सारांश

1970 के दशक के बाद सांस्कृतिक दृष्टिकोण ने नातेदारी अध्ययन को एक नई दिशा दी। श्नाइडर ने प्रजनन की केंद्रीयता, जिसे नृविज्ञानियों ने माना है, को चुनौती देने में सही साबित हुए। उनकी दृष्टि में, नातेदारी की श्रेणी का,क्योंकि इसकी परिभाषा पश्चिमी धारणाओं से ग्रस्त है, का कोई अंतर–सांस्कृतिक मूल्य नहीं है। नातेदारी के पारंपरिक सिद्धांतों में जिस प्रकार से नातेदारी को परिभाषित किया गया हैउसमें जैविक और सामाजिक के बीच का संबंध केंद्रीय था,और इन दोनों को अलग–अलग माना जाता था। लेकिन कार्स्टन ने मलय नातेदारी के अपने अध्ययन के माध्यम से दिखाया कि जैविक से सामाजिक का अंतर हमेशा स्पष्ट नहीं

होता है। संबंध जन्म लेने,साथ खाने और रहने से बनता है। विभिन्न संस्कृतियों में नातेदारी को समझने के विविध तरीकों को ध्यान में रखना बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे नातेदारी के अध्ययन में एक नए और अधिक लचीले दृष्टिकोण को अपनाने में आसानी होती है। संबंध की अवधारणा उन प्रौद्योगिकियों के उद्‌भव के साथ विस्तृत हुई जिससे सहायता प्राप्त प्रजनन प्रारंभ हुआ। वीर्य और अंडा दान के माध्यम से तीसरे पक्ष के युग्मकों ने जीव विज्ञान के माध्यम से नातेदारी निर्माण की अवधारणा को चुनौती दी। संबंध ने नातेदारी के प्रक्रियात्मक आयाम पर बल दिया।

9.7 संदर्भ

कार्स्टन, जेनेट 1991चिल्ड्रन इन बिटवीनः फोस्टरिंग एंड द प्रोसेस ऑफ किंशिप ऑन पुलाऊ लैंगकॉवी,मलेशिया. मैन न्यू सीरीज वॉल्यूम 26,नंबर 3 (सितंबर): 425–443.

.....1995 द सब्सटांस ऑफ किन्शिप एंड द हीट ऑफ द हर्थः फीडिंग, पर्सनहुड एंड रिलेटेडनेस अमंग मलयज इन पुलुआ लंगकावी. अमेरिकन एथ्नोलोजिस्ट, वोल्यूम. 22 नंबर. 2: 223–241.

.....2000 (सं.)कलचर्स ऑफ रिलेटेडनेसः न्यू अप्रोचेस टू द स्टडी ऑफ किन्शिप. यूनाइटेड किंगडमः यूनिवर्सिटी प्रेस, कैंब्रिज.

.....2000 नोइंग वेयर यू हैव कम फ्रॉमः रप्चर्स एंड कॉंटीन्युटीज ऑफ टाइम एंड किन्शिप इन नैरेटिव्स ऑफ एडॉप्शन रियूनियअंस इन द जर्नल ऑफ रियाल अन्थ्रोपोलोजिकल इंस्टिट्यूट. वोल्यूम. 6, नंबर. 4 (दिसम्बर): 687–703.

.....2007 कांस्टीट्युटिव नॉलेजः ट्रेसिंग ट्राजेक्टोरीज ऑफ इनफार्मेशन इन न्यू कॉन्टेक्स्टस ऑफ रिलेटेडनेस इन अन्थ्रोपोलोजिकल क्वार्टरली, वॉल्यूम. 80, नंबर. 2 किन्शिप एंड ग्लोबलाइजेशन (स्प्रिंग): 403–426.

.....2011 सब्सटांस एंड रिलेशनैलिटीः ब्लड इन कांटेक्सटस इन एनुअल रिव्यु ऑफ एंथ्रोपोलॉजी, वॉल्यूम. 40:19–35.

होली, लादिस्लाव 1996 अन्थ्रोपोलोजिकल पर्सपेक्टिव्स ऑन किन्शिप. लन्दनः प्लूटो प्रेस

उबेरॉय, पैट्रिसिया,1993.(सं) किन्शिप, फैमिली एंड मैरिज इन इंडिया. न्यू दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

गीता, वी. 2007. पैट्रिआर्की. कलकत्ताः स्त्री.

9.8 बोध प्रश्नों के उत्तर के नमूने

बोध प्रश्न 1

1. वंश और गठबंधन के सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को,जिसका उद्भव पश्चिमी नातेदारी सिद्धांतों में पश्चिम और विशेषतः पश्चिम से बाहर के मिश्रित संस्कृति को समझने के लिए हुआ था, जबरन फिट करने की कोशिश करने के बजाय, सांस्कृतिक दृष्टिकोण ने रोजमर्रा के जीवन में अनुभव किये जा रहे नातेदारी को समझने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया। नातेदारीकी संरचना की व्याख्या करने के बजाय, नातेदारी के प्रचलन में परिवर्तन किया गया।

2. डेविड श्नाइडर

बोध प्रश्न 2

1. संबंध लोगों के व्यवहार और अवधारणात्मक संबंधों के स्वदेशी तरीकों को संदर्भित करती है,जो नृविज्ञान के सिद्धांतों से अलग है। अनजान लोगों के बीच नातेदारी संबंधों के निर्माण के माध्यम से संबंध स्थापित किया जा सकता है। इसके स्वभाव में प्रवाह औरपरिवर्तनशीलता है।

2. संबंध के सिद्धांत के अनुसार नातेदारी "नाता निर्माण की एक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत लोग विवाह और जीव विज्ञान से परे संबंधों के एक नेटवर्क से जुड़ जाते हैं। अतः, नातेदारी को निश्चित या प्रदत्त इकाई, रक्त संबंध के संदर्भ में खोजी जाने वाली प्रक्रिया, और न ही आत्मीय जाल के संवाद के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। नातेदारी एक ऐसी प्रक्रिया है जो भोजन,निवास और मैत्री बंधन के साझेदारी के माध्यम से रोजमर्रा के जीवन में में निर्मित और निर्धारित होती है।

बोध प्रश्न 3

1. महिलाएँ चूल्हे से जुड़ी होती हैं और नए घर की स्थापना और निर्माण के दौरान केंद्रीय प्रथा की भूमिका निभाती हैं।

2. सहोदर या भाई–बहन की धारणा जन्म से पहले ही चलन में आ जाती है और जीवन भर व्यक्ति के भाग्य को प्रभावित करती रहती है। गर्भ में बच्चे को घेरने वाली गर्भनाल (यूरी) बच्चे की सहोदर मानी जाती है। भ्रूण और प्लेसेंटा मिलकर 'सहोदर'बनाते हैं।

बोध प्रश्न 4

1. काल्पनिक नातेदारी सामाजिक,अर्ध या छद्म नातेदारी को दर्शाती है जो नृविज्ञान और सामाजिक विज्ञान में एक सामान्य अवधारणा है। इसका संबंध उन व्यक्तियों से है जो जन्म या

विवाह से संबंधित नहीं होते, लेकिन एक दूसरेके साथ नातेदार जैसा व्यवहार करते हैं। इसमें विशेष रूप से नातेदारी से बाहर के व्यक्तियों के प्रति नातेदारी दायित्वों और संबंधों के पालन का विस्तार शामिल है।

2. काल्पनिक नातेदारी के दो रूप हैं–

अ. आत्माओं का भोजध्पर्व– यह प्रतिभागियों के बीच नातेदारी संबंधों की पहचान के लिएसमारोह की उपयोगिता को संदर्भित करता है।

ब. अमेरिकी समुदायों के बीच सोरोरिटी– यह महिलाओं का एक क्लब या संगठन है, खासकर युवा और छात्रों का जो मुख्यतः सामाजिक उद्देश्यों के साथ–साथ मुसीबत या जरूरत के समय एक–दूसरे की मदद करने के लिए बनाए जाते हैं।

इकाई 10 नातेदारी और जेंडर

संरचना

10.0 उद्देश्य

10.1. परिचय

10.2. क्लासिकल मानवविज्ञान और जेंडर का सवाल

10.2.1 नातेदारी भूमिकाओं पर पितृसत्तात्मक जकड़न

10.2.2 वंश और जेंडर

10.2.3 निजी/सार्वजनिक क्षेत्र की सार्वभौमिकता

10.2.4 नातेदारी के भीतर महिलाओं की प्रतिस्पर्धी पहचान

10.3. जेंडर की दृष्टि से नातेदारी की पुनरू पड़ताल

10.3.1 मौजूदा ज्ञान को चुनौतियाँ

10.3.2 1970 के दशक के बाद के परिवर्तन

10.4 शुरुआती मनवाविज्ञान में नारीवादी सोच

10.4.1 फ्रेडरिक एंगेल्स

10.4.2 मार्गरेट मीड

10.5 नारीवादी मानवविज्ञानी (1980 के दशक के बाद)

10.5.1 जेन फिशबर्न कोलियर और सिल्विया यानागिसाको

10.5.2 मर्लिन स्ट्रैथरन

10.5.3 लीला दुबे

10.5.4 रहेजा और गोल्ड

10.6 समकालीन नारीवादी बहस

10.7 सारांश

10.8 संदर्भ

10.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- क्लासिकल मानवविज्ञानी अध्ययनों में व्याप्त जेंडर पूर्वाग्रहों की प्रकृति की पड़ताल कर सकेंगे
- इस बात की व्याख्या कर सकेंगे कि जेंडर का विश्लेषण नातेदारी अध्ययनों की मौजूदा मान्यताओं के पुनर्सूत्रीकरण की ओर कैसे उन्मुख करता है।
- रोजमर्रा के जीवन के अनुभव में नातेदारी की भूमिका के महिलाओं के दृष्टिकोण को शामिल कर सकेंगे
- पूर्व–नारीवादी और नारीवादी मानवविज्ञानियों द्वारा किए गए अध्ययनों के आलोक में महिलाओं की जेंडर–भूमिकाओं और व्यवहार के बारे में रूढ़ियों का खंडन कर सकेंगे
- जेंडर की दृष्टि से नातेदारी को समझने के लिए नारीवादी मानवविज्ञानियों के महत्त्व और अवदान की चर्चा कर सकेंगे।

10.1 परिचय

किसी संस्कृति की नातेदारी व्यवस्था के अध्ययन के लिए मानवविज्ञानी उस संस्कृति के पुरुषों से जानकारी जुटाते आए हैं। इससे नातेदारी विषयक ज्ञान में जेंडरीय पूर्वाग्रह आरोपित होते रहे। उदाहरण के लिए भारतीय समाज को ही लें, जहाँ स्त्रियों के बाहर आने–जाने, उनके बाहर दिखलाई देने, उनकी गतिविधि पर नियंत्रण को रसूख और सम्मान की नजर से देखा जाता है, वहाँ शोधकर्ता को स्त्रियों के दृष्टिकोण का पता नहीं चल पाता। इस प्रकार, हालाँकि नातेदारी की अच्छी–ख़ासी व्याप्ति घरेलू क्षेत्र में होती है और उसे महिलाओं के इलाके के रूप में प्रचारित भी किया जाता है, लेकिन केवल पुरुषों के बयान या दृष्टि पर निर्भरता के कारण नातेदारी की एकतरफा तस्वीर ही सामने आती रही। पुरुषों की दृष्टि को ही समूचे समाज की दृष्टि मान लिया गया। महिलाओं की आकांक्षाएँ, भूमिकाएँ और स्थिति, पुरुषों के नियंत्रित व्याख्याओं के जरिए सामने आती रही हैं। ऐसे में, क्लासिकल मानवविज्ञान में नातेदारी संबंधों के बारे स्त्रियों की अपनी दृष्टि अमूमन छूटती ही रही।

नारीवादी मानवविज्ञानियों के आगमन के बाद ही जेंडर और नातेदारी एक साथ आबद्ध किए गए। कारण मानवविज्ञानियों और नारीवादियों दोनों ने यह महसूस किया किया कि महिलाओं की दृष्टि का ख्याल किए बिना नातेदारी का सिद्धांतीकरण उसे अपूर्ण और पुरुष–पक्षीय बना देगा। इस इकाई में, हम नारीवादी योगदान की चर्चा करेंगे, जिन्होंने नातेदारी की पुनरू पड़ताल करने की ओर उन्मुख किया।

10.2 क्लासिकल मानवविज्ञान और जेंडर का सवाल

मानवविज्ञान में शुरुआत के ज्यादातर मोनोग्राफ प्रायरू पुरुष एथनोग्राफरों के हितों द्वारा निर्धारित दृष्टिकोणों पर आधारित थे। घर–परिवार की व्यवस्था, व्यापार, विनिमय, श्रम, धर्म और आर्थिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी के किसी भी तरह के दस्तावेजीकरण का उनमें अभाव था। पुरुषों और महिलाओं के बीच के भेद को प्राकृतिक तथा आर्थिक और राजनीतिक संरचनाओं का निर्धारक माना जाता था।

क्लासिकल मानवविज्ञान में नातेदारी का अध्ययन आमतौर पर पुरुष–केंद्रित था, जो निम्नलिखित बातों से स्पष्ट होता हैरू

1. विकासवादी मॉडल, जिसमें मानव समाज की उत्पत्ति और विकास की व्याख्या करने के क्रम में पुरुष शिकारी की भूमिका को ज्यादा तवज्जो दिया जाता है और खाद्य–संग्राहक स्त्री की भूमिका को मामूली करके देखा जाता है।
2. वंश दृष्टिकोण, जिसमें नातेदारी संबंध का प्रस्थान बिंदु पुरुष 'ईगो' है।
3. गठबंधन सिद्धांत, जिसमें विवाह प्रणाली को पुरुषों द्वारा स्त्रियों के आदान–प्रदान के जरिए अपना नेटवर्क बनाने के रूप में विश्लेषित किया जाता रहा है।

चूंकि अधिकांश मानवविज्ञानी पुरुष थे, इसलिए एथनोग्राफी के लिए चुने गए क्षेत्र/समुदाय में उनकी पहुँच मुख्य तौर पर पुरुष सदस्यों के माध्यम से ही हो पाई। वे पुरुष उनके लिए जायज सूचना–प्रदानकर्त्ता बन गए। इस बात को बड़े ही निर्दोष भाव से मान लिया गया कि पुरुषों की अपनी संस्कृति के बारे में जो दृष्टि थी वही महिलाओं की भी थी। इस तरह की दृष्टि यौनिकता के बारे में कुछ भी

पूछने या पारंपरिक समुदायों में सत्ता और प्रतिष्ठा के जेंडर संबंधी आयामों की जाँच करने की अजीब अनिच्छा से भी उपजी थी।

10.2.1 नातेदारी भूमिकाओं पर पितृसत्तात्मक जकड़न

पितृसत्ता के जरिए पुरुषों के घरेलू क्षेत्र में वर्चस्व और नियंत्रण से जेंडर असमानता उभरती है। "पितृसत्ता पुरुषत्व और स्त्रीत्व की परिभाषित धारणाओं पर टिकी हुई है। इसे यौनिक और संपत्ति की उस व्यवस्था द्वारा बरकरार रखा जाता है जिसमें पुरुषों की पसंद, इच्छाओं और हितों को महिलाओं के हितों के ऊपर रखा जाता है। इसे ऐसे सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक प्रथाओं द्वारा भी बरकरार रखा जाता है जो विषमलैंगिकता, महिला प्रजनन क्षमता और मातृत्व का महिमामंडन करते हैं और पुरुष अधिकार के लिए महिला अधीनता को तवज्जो देते हैंश (वी. गीता, 2007ः 8)

समाज के सार्वजनिक और निजी, दोनों क्षेत्रों में पितृसत्ता की मौजूदगी है। यह पुरुषों को नियम बनाने और सार्वजनिक क्षेत्र में अपनी पहुँच का उपयोग करने के लिए ऐसे मानदंड बनाने के लिए सशक्त बनाता है जो उनके लिए फायदेमंद और महिलाओं के लिए हानिकारक साबित होते हैं। इतना ही नहीं, नातेदारी की भूमिकाओं और दायित्वों के बारे में पुरुषों की जो राय होती है, उसके आधार पर नातेदारी के नियम बनाए जाते हैं। पुरुषों की स्त्रियों से जो अपेक्षाएँ होती हैं उसके आधार पर आदर्श स्त्रीत्व की धारणा गढ़ी जाती है। इस प्रकार, परिवार और घर की देखभाल और पालन–पोषण के प्रति जिम्मेदारियों पर जोर देने के साथ माँ, बहन, बेटी और पत्नी की घरेलू भूमिकाओं के माध्यम से परिवार के भीतर महिलाओं की स्थिति को बढ़ा–चढ़ा कर पेश किया जाता है।

पुरुषों के मुकाबले गौण माने जाने के महिलाओं के अनुभव कई रूपों में देखे जाते हैं – बचपन के कमजोर बनाए वाले समाजीकरण, सीमित गतिशीलता, शिक्षा तक पहुँच की कमी, स्वास्थ्य देखभाल, पोषण, संपत्ति और विरासत के अधिकार और कानून, राजनीति और कार्यस्थल में प्रतिनिधित्व आदि। बीना अग्रवाल के अनुसार, घर और परिवार में महिलाओं की पुनरुत्पादक भूमिका के बरक्स पुरुषों की उत्पादक भूमिका को अधिक तवज्जो दी जाती है। इससे ये न्याय और समता को सुनिश्चित करने की जगह असमान जेंडर संबंधों का केंद्र बिंदु बन जाते हैं (वी.गीता, 2007ः

74)। यहाँ तक कि महिलाओं के उत्पादन में योगदान को भी लगभग गौण और नगण्य मूल्य के रूप में देखा जाता है।

रजनी पालरीवाला ने राजस्थान के शेखावती क्षेत्र में महिलाओं की संपत्ति और आवास तक पहुँच को प्रभावित करने में पितृवंशीयता की भूमिका का अध्ययन किया है। उनके (1999) अनुसार, महिलाओं की आय अर्जित करने के अवसरों की पूर्ण अनुपस्थिति या उन्हें कमतर माने जाने के कारण वे आर्थिक तौर पर पुरुषों पर निर्भर होती हैं। नतीजतन उन्हें असमान जेंडर संहिताओं का अनुपालन करना पड़ता है। इस तरह, उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे विनम्र, अनजान और दबी रहेंगीं।

10.2.2 वंश और जेंडर

वंश समूह, न्यायिक अधिकार और वंशावली तक पहुँचने में प्रवेश बिंदु होते हैं। ये राजनीतिक संगठन का आधार बनते हैं। जहाँ पितृवंशीयता का पालन किया जाता है, वहाँ पुरुषों के नाम–क्रम के आधार पर वंश के आधारित होने के कारण घर के भीतर और संपत्ति पर पुरुषों का अधिकार होता है। स्त्रियों की स्थिति निम्नतर रहती है।

यहाँ तक कि मातृवंशीय समाजों में, जहाँ महिला के नाम से वंश चलता है, संपत्ति पर नियंत्रण सबसे बड़े भाई के हाथों में होता है। तो यहाँ भी, अधिकार के मामले में महिलाओं का स्थान पुरुष से निम्नतर होता है। हालाँकि, विभिन्न क्षेत्रों के मातृवंशीय समाजों भिन्नता मौजूद हो सकती है। मातृवंशीय समाजों में, संपत्ति महिलाओं के नाम पर हस्तांतरित होता है। घरेलू संगठन और पारिवारिक अनुष्ठान के महिलाओं पर केन्द्रित होने के कारण महिलाएँ अधिक स्वायत्त होती हैं। तिप्लुत नोंगबरी के अनुसार, मेघालय में खासियों के बीच, विरासत के अधिकारों में महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह की कमी हमेशा फायदेमंद नहीं हो सकती है क्योंकि नाराज पुरुष हमेशा इस अधिकार का विरोध कर सकते हैं। दूसरी ओर, लीला दुबे बताती हैं कि लक्षद्वीप द्वीप समूह में, पुरुषों द्वारा मातृवंशीयता का स्वागत किया जाता है क्योंकि

उन्हें लगता है कि इस प्रणाली में उनके हितों का भी ध्यान रखा जाता है (वी. गीता, 2007)।

10.2.4 निजी/सार्वजनिक क्षेत्र की सार्वभौमिकता

सार्वजनिक/निजी क्षेत्रों के जेंडर द्विभाजन के लिहाज से पुरुषों की स्थिति उत्पादन के सार्वजनिक क्षेत्र के साथ उनकी पहचान पर निर्भर करती है। इसके परिणामस्वरूप परिवार के भीतर उनकी पहचान कमाने वालों के रूप में होती है। महिलाओं की उपलब्धियों को प्रजनन के निजी या घरेलू क्षेत्र में, माताओं और पालन–पोषण करने वालों के रूप में आँका जाता है। इस प्रकार, काम और राजनीति तक उनकी पहुँच को यदि पूरी तरह नहीं तो न्यूनतम रखा जाता है।

यह धारणा कि दो अलग–अलग क्षेत्र मौजूद हैं, जहाँ महिलाएँ और पुरुष सामाजिक रूप से निर्दिष्ट अलग–अलग भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के अनुसार काम करते हैं, समस्याग्रस्त है। यह समाजों की विविधता की उपेक्षा करता है। महिला प्रधान परिवारों, अनुपस्थित पिता, घर में रहने वाले पिता, गरीबी आदि और पुरुष व महिला दोनों की कमाई की जरूरत के संदर्भ में यह द्विभाजन काम नहीं करता। ऐसी स्थितियों में महिलाएँ केवल घरेलू क्षेत्र में ही सीमित नहीं रह जाती हैं।

10.2.5 नातेदारी के भीतर महिलाओं की प्रतिस्पर्धी छवियाँ

मानवविज्ञान में होने वाले नए अध्ययन, महिलाओं को अपनी जीवंत वास्तविकताओं के अनुभवों को साझा करने का मौका देते हैं और इस प्रकार, महिलाओं की मान ली गई अधीनस्थ प्रकृति की प्रतिस्पर्धी छवियाँ प्रदान करते हैं। महिलाओं के जीवन से जुड़े एक ऐसे पहलू का ताल्लुक उनकी प्रजनन क्षमता और यौनिकता के सामाजिक मानदंडों के दायरे में लाए जाने से है।

मातृत्व महिलाओं की प्रजनन क्षमता पर जोर देने से जुड़ा है। हालाँकि, लिहाज या शर्म से जुड़े होने के कारण महिला यौनिकता की स्वीकृति दुर्लभ है। भारत में आदर्श महिला की छवि के अंतर्गत प्रजनन के साथ उनके जुड़ाव से लेकर पुरुष सम्मान की रक्षा तक को रखा जाता है। मातृत्व के लिए उनसे यौनिक तौर पर

सक्रियता की अपेक्षा की जाती है वहीं पुरुष/समुदाय के सम्मान की खातिर उनसे शुचिता और शुद्धता बरकरार रखने की अपेक्षा पाली जाती है। महिलाओं की यह विभाजित छवि परस्पर विरोधी और इसलिए अनुचित मानी जाती है, जिसके कारण उन्हें रिश्ते–नाते वालों की अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए निरंतर जुटे रहना पड़ता है। उदाहरण के लिए, इस आधार पर कि वे ससुराल में हैं या मायके में, पत्नी और बहन के रूप में महिलाओं को विभिन्न विशेषाधिकार और वर्जनाएँ मिलती हैं। नातेदारी व्यवस्था के भीतर महिलाओं की विपरीत भूमिकाएँ, भिन्न जन्मगत और वैवाहिक संबंधों पर आधारित होती हैं अर्थात् एक ओर बेटी और बहन तथा दूसरी ओर पत्नी और बहू के रूप में। यह महिलाओं की यौनिकता और प्रजनन क्षमता के बीच संघर्ष को दर्शाता है।

इसे ऐसे कई समाजों के मामले में अच्छी तरह से समझाया गया है कि जहाँ महिलाओं की प्रजनक क्षमता को प्राथमिकता दी जाती है। कारण मातृत्व विवाहित महिला का प्राथमिक कर्तव्य है। हालाँकि, महिलाओं द्वारा कभी भी यौन–इच्छा व्यक्त नहीं की जानी चाहिए। इस प्रकार, नातेदारी मानदंडों द्वारा आरोपित व्यवहार को संबोधित करने में महिलाओं की दृष्टि हाशिए पर रहती है। नातेदारी के नियम पुरुषोन्मुखी रहते हैं। धार्मिक रूप से पवित्र रहने की माँग केवल महिलाओं पर लागू होती है, पुरुषों पर नहीं।

बोध प्रश्न 1

1. पितृवंशीय व्यवस्था महिलाओं की स्थिति को किस प्रकार अधीनस्थ करती है, चर्चा करें?

   ---

2. सार्वजनिक–निजी द्विभाजन का क्या अर्थ है? यह नातेदारी और जेंडर के बीच के संबंध को समझने में कैसे मदद करता है?

10.3 जेंडर की दृष्टि से नातेदारी की पुनः पड़ताल

नातेदारी के कमतर करके आँके गए पहलूओं को उजागर करने के इच्छुक मानवविज्ञानियों ने पाया कि जेंडर पर न के बराबर रोशनी डाली गई थी। इस इच्छा को हाल में और लोकप्रियता मिली जब श्नाइडर ने इस तरफ ध्यान दिलाया कि एक ही समय में विभिन्न संस्कृतियाँ और एक ही संस्कृति विभिन्न समयों में नातेदारी को कैसे परिभाषित करती हैं। नारीवादियों ने जेंडर की निर्मिति को समझने हेतु महिलाओं की स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए एथनोग्राफीय अध्ययनों की पड़ताल करनी शुरू कर दी। उन्होंने महिलाओं के बारे में ज़्यादातर जानकरी नातेदारी, विवाह और परिवार वाले अध्याय में पाई। इस प्रकार, यह पाया गया कि समाज में महिलाओं के स्थान को समझने के लिए नातेदारी एक आदर्श शुरुआती बिंदु है। जेंडर के लिहाज से नातेदारी अध्ययन को पूर्णता प्रदान करने के लिए यह जरूरी था कि महिलाओं को अन्वेषन विषय के रूप में और ज्ञान के सृजन में सक्रिय एजेंटों के रूप में केंद्र में रखा जाए (स्ट्रैथरन, 1987:277)।

नतीजतन जेंडर पर किए गए एथनोग्राफ़ीय अध्ययन ने जेंडर और नातेदारी दोनों की धारणाओं को पुनर्निर्मित किया। जिस कोशिश की शुरुआत मानववैज्ञानिक वृत्तांतों में महिलाओं के समावेश और प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करने से हुई थी, उसने महिलाओं की अपने जीवन के बारे में धारणाओं के आधार पर ज्ञान का निहायत ही नया इलाका खोल दिया। नातेदारी के दायरे में महिलाओं पर बढ़ते ध्यान के चलते कई रूढ़ियाँ टूटीं और वास्तविकताएँ सामने आईं।

10.3.1 मौजूदा ज्ञान को चुनौतियाँ

हाल के अध्ययनों ने सांस्कृतिक दृष्टिकोण से नातेदारी और जेंडर के बीच संबंध की जांच की है। इन अध्ययनों ने जेंडर की कार्यप्रणाली और उसके वंश, संपत्ति के अधिकार, आवास, संकट की स्थितियों में सगे–संबंधियों से सहायता की अपेक्षा आदि पर प्रभावों के स्तरों पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की है। हालाँकि कई जेंडर मानदंडों और भूमिकाओं की धारणाओं को भी चुनौती दी गई है। नातेदारी के भ्रामक वृत्तांतों को खारिज करने के लिए स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी।

जेंडर और नातेदारी के संबंधों के बारे में निष्कर्ष निकालने से पहले यह जरूरी है कि दुनिया भर में जेंडर के गठन की एकरूपता की धारणाओं, पुरुषत्व, स्त्रीत्व और तीसरे जेंडर के अर्थ की सार्वभौमिकता, जिस संस्कृति का अध्ययन किया जा रहा है उसकी अंतर्दृष्टियों की बजाय सेक्स और जेंडर के समीकरण की पश्चिमी धारणा को लेकर चलने, पितृसत्ता की प्रमुखता आदि की पुनर्पड़ताल की जाए, ताकि संस्कृति–विशेष की व्याख्याएँ समाविष्ट की जा सकें।

जेंडर विषमता पर विचार करने से पहले 'सत्ता' के अर्थ को स्पष्ट करने की आवश्यकता है। बाहरी ताकतों के साथ अंतर्क्रिया के कारण सामाजिक संरचना में हुए ऐतिहासिक परिवर्तन, नातेदारी और जेंडर के बारे में अतिरिक्त ज्ञान के महत्त्वपूर्ण स्रोत हो सकते हैं (सिंग और यानागिसाको, 1983रू 511)।

10.3.2 1970 के दशक के बाद के परिवर्तन

1970 के दशक में जाकर नारीवादी मानवविज्ञान को औपचारिक रूप से मानवविज्ञान के उप–अनुशासन के रूप में मान्यता दी गई। नारीवादियों ने मानवविज्ञान की कुछ प्रमुख मान्यताओं पर सवाल उठायाः

- महिलाओं की सार्वभौमिक अधीनता
- घरेलू बनाम सार्वजनिक क्षेत्र
- प्रकृति बनाम संस्कृति का सार्वभौमिक द्विभाजन
- नातेदारी विषमलैंगिक संबंधों और प्रजनन पर केंद्रित है

- नातेदारी की अवधारणा के लिए संदर्भ बिंदु के रूप में पिता–पुत्र संबंध

महिलाओं की सार्वभौमिक अधीनता को अक्सर सभी संस्कृतियों में पाए जाने वाले सार्वभौमिकों में से एक के रूप में उद्धृत किया जाता है। इसके बावजूद कि विभिन्न संस्कृतियों में महिलाओं की भूमिकाओं, स्थितियों, सत्ता और मूल्य भिन्नता लिए होते हैं, एंगेल्स ने इसे 'महिलाओं की वैश्विक ऐतिहासिक पराजय' घोषित किया।

मानवविज्ञान में दोनों क्षेत्रों के बीच द्विभाजन बहुत टिकाऊ रहा है। यह वंश सिद्धांत, गठबंधन सिद्धांत और वैवाहिक आदान–प्रदान के अध्ययनों में मौजूद है। नातेदारी सिद्धांत के केंद्र में 'घरेलू' बनाम 'राजनीतिक–न्यायिक' का विश्लेषणात्मक द्विभाजन विद्यमान रहा है। मॉर्गन और फोट्र्स द्वारा इस्तेमाल किया गया यह द्विभाजन मानवविज्ञान और संबंधित अनुशासन में काफी प्रभावशाली रहा। ऐसा माना जाता है कि घरेलू क्षेत्र बड़े पैमाने पर मातृ–शिशु बंधन द्वारा चिह्नित है और इसका मूल गठन प्राकृतिक है। जबकि सार्वजनिक क्षेत्र राजनीतिक–न्यायिक तथ्यों से बना है। पुनरू, ऐसा माना जाता है कि घरेलू क्षेत्र यौनिक और प्रजनक भूमिकाओं से संबंधित है जबकि सार्वजनिक क्षेत्र का वास्ता अधिकार, सत्ता, नियम–कायदों आदि से है।

इसलिए घरेलू क्षेत्र को मुख्य रूप से महिलाओं और सार्वजनिक क्षेत्र को पुरुषों से जुड़ा हुआ माना जाता है। नारीवादी मानवविज्ञानियों ने दिखाया है कि इन दो क्षेत्रों को अलग–अलग देखना अब पर्याप्त नहीं है। उन्होंने उस दृष्टिकोण पर सवाल उठाया है जो महिलाओं को नातेदारी में मुख्य रूप से बच्चे पैदा करने की क्षमता और पुरुषों को मुख्य रूप से सार्वजनिक जीवन में भागीदारी की क्षमता से लैस मानती है।

नारीवादियों ने जेंडर और नातेदारी में केंद्रीय स्थान प्राप्त इस द्विभाजन को खारिज किया। उन्होंने–

- बताया कि जेंडर और नातेदारी परस्पर निर्मित होते हैं।
- प्राकृतिक भेद (प्रजनन की क्षमता) के आधार पर जेंडर–विभाजन को पूर्व–सामाजिक और संस्कृति से परे व बाहरी माने जाने की धारणा को चुनौती दी।

- दोनों श्रेणियों का विश्लेषण हिस्सों के रूप में न करके समग्र के रूप में किया। इस प्रकार द्विभाजन को खारिज करते हुए नारीवादियों ने नर और मादा, पुल्लिंग–स्त्री, प्रकृति–संस्कृति आदि श्रेणियों को खारिज कर दिया।

बोध प्रश्न 2

1. उन दो तरीकों की चर्चा कीजिए जिनके द्वारा नारीवादी मानवविज्ञान ने 1970 के दशक के बाद नातेदारी को फिर से परिभाषित किया।

10.4 शुरुआती मनवाविज्ञान में नारीवादी सोच

शुरुआती नारीवादी मानवविज्ञानियों ने उन क्षेत्रों में महिलाओं की संलग्नता और अनुभवों का दस्तावेजीकरण करते हुए कई महत्वपूर्ण अध्ययन किए, जिन्हें पहले एथनोग्राफीय वृत्तांतों में शामिल नहीं किया जाता था। घरों और घरेलू व्यवस्थाओं, व्यापार, विनिमय, श्रम, धर्म और आर्थिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी की विस्तार से व्याख्या की गई, जिससे विभिन्न संस्कृतियों के अध्ययनों में व्याप्त चुप्पियाँ उजागर हुईं। यहाँ हम ऐसे चार मानवविज्ञानियों के योगदान की चर्चा करेंगे, जिनके अध्ययन नातेदारी और जेंडर के बीच संबंध को समझने की बुनियाद प्रदान करते हैं।

10.4.1 फ्रेडरिक एंगेल्स

एंगेल्स ने कहा कि पारंपरिक एकविवाही परिवार वास्तव में हालिया निर्मिति है, जो पूंजीवादी समाजों के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। आदिम साम्यवाद में– भूमि या कोई चीज निजी संपत्ति नहीं थी। इसका मतलब यह था कि मानवीय संबंध

समतावादी सिद्धांतों पर आधारित थे। एंगेल्स दिखाते हैं कि वर्ग की उत्पत्ति के साथ एक समूह (शासक वर्ग) को अपने हितों और संपत्ति की रक्षा करने की आवश्यकता होती है और इसलिए राज्य मशीनरी विकसित होती है।

एंगेल्स ने ऐतिहासिक विकासवादी परिप्रेक्ष्य प्रदान किया और दिखाया कि महिलाएं स्वतंत्र और समान उत्पादक सदस्यों से अधीनस्थ और आश्रित पत्नी और वार्ड में कैसे रूपांतरित हुईं। इस परिवर्तन के लिए दो मुख्य कारक जिम्मेदार थे, पहला निजी संपत्ति का विकास और दूसरा, विनियोग और शोषण की संस्था के रूप में परिवार का उदय। एंगेल्स ने परिवार की संस्था को परिभाषित करने के लिए आर्थिक आवश्यकता को प्रमुख माना। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि निजी संपत्ति की अनुपस्थिति के कारण पुरुषों के उत्पादक कार्य और महिलाओं के घरेलू कार्य समान महत्व के थे।

कैरन सैक ने गैर–वर्गीय समाजों में महिलाओं की स्थिति और निजी संपत्ति के परिणामस्वरूप उनकी अधीनता के एंगेल्स के तर्क पर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि यह जरूरी नहीं कि निजी संपत्ति की अनुपस्थिति वाले गैर–वर्गीय समाजों में महिलाओं की स्थिति पुरुषों के समान ही हो। पूंजीवाद ने महिलाओं को निचले स्तर पर लाकर जेंडर संबंध में वर्ग आधारित असमानता को और बढ़ा दिया है। उन्होंने यह समाधान सुझाया कि सामाजिक समता के लिए पारिवारिक काम को सार्वजनिक काम होना होगा।

10.4.2 मार्गरेट मीड

मार्गरेट मीड सबसे शुरुआती नारीवादी मानवविज्ञानियों में से एक थी, जिन्होंने मानवशास्त्रीय विचारों की श्रेणियों के रूप में सेक्स और जेंडर के बीच स्पष्ट रूप से अंतर किया था। अपने मानवशास्त्रीय कार्यों में, उन्होंने जैविक कारकों को सांस्कृतिक कारकों से अलग किया जो मानव व्यवहार और व्यक्तित्व विकास को नियंत्रित करते हैं।

वे *सेक्स एंड टेम्परामेंट इन थ्री प्रीमिटिव सोसाइटीज* (1935) और *मेल एंड फीमेल* (1949) – इन दो अध्ययनों के माध्यम से, जैविक रूप से निर्धारित पुरुष या महिला

लक्षणों या भूमिकाओं की एक सार्वभौमिक धारणा की आलोचना करने वाले शुरुआती विद्वानों में से एक थीं। उन्होंने कहा कि पुरुषों और महिलाओं के बीच का संबंध न तो 'प्राकृतिक' है और न ही सांस्कृतिक रूप से सार्वभौमिक। बल्कि स्त्रीत्व और पुरुषत्व संस्कृति–सापेक्ष होते हैं। दोनों जेंडर के बीच स्वभावगत अंतर जन्मजात जैविक के बजाय सांस्कृतिक रूप से निर्धारित होते हैं। उन्होंने जिन संस्कृतियों का अध्ययन किया उनमें से प्रत्येक में नर और मादा व्यवहार के पैटर्न भिन्न–भिन्न थे।

तीन समाज

•**अरपेश**– बच्चों के पालन–पोषण की जिम्मेदारी पुरुषों और महिलाओं के बीच समान रूप से विभाजित है

•**मुंडुगुमोर**– एक ही जेंडर के सभी सदस्यों के बीच प्राकृतिक शत्रुता मौजूद हैश।

•**तचंबुली**– पुरुष कला–कर्म में व्यस्त थे, महिलाओं के पास मछली पकड़ने और विनिर्माण को नियंत्रित करने समेत वास्तविक सत्ता थी ।

10.5 नारीवादी मानवविज्ञानी (1980 के दशक के बाद)

20वीं शताब्दी के दौरान और सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञान के उदय के साथ जेंडर का अर्थ और महत्व भी बदला है। शुरुआती एथनोग्राफी अध्ययनों में, जेंडर अक्सर नातेदारी या परिवार का पर्याय था। एक मोनोग्राफ में महिलाओं या पारिवारिक मुद्दों पर सिर्फ एक अध्याय होता था। नारीवादी ने महिलाओं को इस तरह जोड़ने और आगे बढ़ जाने की पद्धति को चुनौती दी और संरचनात्मक असमानताओं, आर्थिक असमानताओं की भूमिका, जेंडर राजनीति के वैश्विक आयाम, भाषा की भूमिका, यौनिकता और पुरुषत्व अध्ययन, तथा स्वास्थ्य और मानवाधिकार पर ध्यान देने की मांग की ।

नारीवादी मानवविज्ञानियों ने समाज में महिलाओं के स्थान और परिवर्तन की संभावनाओं को समझने हेतु उपकरणों के लिए नातेदारी अध्ययन की ओर रुख किया। नारीवादी मानवविज्ञानियों ने महिलाओं के काम को मानवशास्त्रीय अध्ययन के केंद्र में रखकर जेंडर और संस्कृति की क्लासिकल व्याख्याओं को चुनौती दी। नारीवादी मानवविज्ञान इस मान्यता के जवाब में उभरा कि तमाम उप–अनुशासनों में, मानव विज्ञान पुरुषत्व केन्द्रित प्रतिमानों द्वारा संचालित होता है।

10.5.1 जेन फिशबर्न कोलियर और सिल्विया यानागिसाको

1987 में जेन फिशबर्न कोलियर और सिल्विया यानागिसाको ने जेंडर और नातेदारी – इन दो क्षेत्रों के बीच की सीमा पर सवाल उठाते हुए जेंडर को 'मानव विज्ञान के सैद्धांतिक केंद्र' में रखने को अपना उद्देश्य बताया। उन्होंने महिलाओं के जीवन की चर्चाओं को घरेलू क्षेत्र और प्रजनन कार्य के विचारों तक सीमित कर दिए जाने पर सवाल उठाया। उन्होंने इस धारणा (स्पष्ट या निहित) को खारिज किया कि मातृ–बाल संबंध देश–काल निरपेक्ष होते हैं। साथ ही, उन्होंने ऐतिहासिक परिवर्तन को केवल सार्वजनिक क्षेत्र में राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों के संदर्भ में देखने की प्रवृत्ति पर संदेह जताया। जबकि पारिवारिक जीवन को स्थिर और अपरिवर्तनीय माना जाता था। अंत में, उन्होंने संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक लेखन की इस गलत धारणा को चिन्हित किया कि सभी समाजों में संस्थागत कार्य होते हैं जो तुलनीय होते हैं, भले ही इन संस्थाओं के रूप भिन्न हों।

10.5.2 मर्लिन स्ट्रैथरन

उन्होंने नए युग की प्रजनन तकनीकी के आने के बाद नातेदारी संबंधों का अन्वेषन किया है। उनका अध्ययन बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध की अंग्रेजी संस्कृति, उपभोक्तावाद और नई तकनीकी के उपयोग के चयन पर आधारित है। यहाँ, स्ट्रैथरन की दलील है कि नई तकनीकी ने प्रकृति को एक नया अर्थ प्रदान किया है, जिसे पहले प्रदत्त मान लिया जाता था। तकनीकी विकास ने ऐसे रास्ते खोल दिए हैं जो पहले उपभोक्ता के लिए उपलब्ध नहीं थे जिसके परिणामस्वरूप प्रकृति की पहले की धारणा बदल गई है।

मर्लिन स्ट्रैथर्न का आफ्टर नेचर, (1992) एक ऐसा काम है जिसने श्नाइडर के काम को आगे बढ़ाया था। आफ्टर नेचर में नए युग की प्रजनन तकनीकी के आने के बाद नातेदारी संबंधों पर पड़े प्रभावों की पड़ताल की गई है। शुक्राणु बैंक, इन विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) और सरोगेट मातृत्व जैसी नई तकनीकी के कारण प्रकृति के बरक्स चयन का विकल्प सामने आया तो नातेदारी संबंधों पर सवाल खड़े हो गए। स्ट्रैथरन प्रजनन प्रणाली में नए युग के तकनीकी विकास को महत्वपूर्ण बदलाव के रूप में दर्शाती हैं और कहती हैं कि जिसे प्राकृतिक रूप में लिया जाता था अब वह पसंद का विषय बन गया। प्रकृति तब्दील होकर उद्यम बन गई। प्रौद्योगिकी

द्वारा प्रकृति की जितनी अधिक सहायता की जाती है, कानून द्वारा मातृत्व–पितृत्व की पहचान का दायरा भी उतना बढ़ता है और प्रकृति को सामाजिक हस्तक्षेप से स्वतंत्र समझना उतना ही कठिन हो जाता है (1992 b: 30)।

10.5.3 लीला दुबे

लीला दुबे भारतीय मानवविज्ञानी थीं जिन्होंने भारत में नातेदारी प्रणाली के जेंडर आयाम की पड़ताल की। उनकी पुस्तक, *वीमेन एंड किन्शिप: कम्पेरेटिव पर्सपेक्टिव्स ऑन जेंडर इन साउथ एंड साउथ–ईस्ट एशिया* (1997), इस क्षेत्र में अग्रणी अध्ययनों में से एक है। उनका काम भारत में हिंदुओं, मुसलमानों और ईसाइयों, नेपाल के उच्च जाति परबतिया हिंदुओं और नेवार, बांग्लादेश और पाकिस्तान के मुसलमानों, प्रायद्वीपीय मलेशिया के द्विपक्षीय मलाया मुसलमानों, पश्चिमी सुमात्रा के द्विपक्षीय जावानीजों और मातृवंशीय मिनांगकाबाउ और नेग्री सेम्बलियन में उनकी शाखा, बौद्ध थाई और तराई ईसाई फिलिपिनो के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है (1997: 2)। दुबे की मुख्य चिंता यह पता लगाना था कि जेंडर भूमिकाओं की कल्पना कैसे की जाती है और उन्हें कैसे लागू किया जाता है, पुरुषों और महिलाओं को कैसे देखा जाता है और एक सामाजिक व्यवस्था के रखरखाव और पुनरुत्पादन के लिए इसके निहितार्थ क्या हैं। उनका मुख्य उद्देश्य नातेदारी प्रणालियों और पारिवारिक संरचनाओं के बीच के अंतर को समझना था जो विभिन्न समाजों में जेंडर भूमिकाओं में भिन्नता के लिए जिम्मेदार होते हैं।

दुबे का अध्ययन नातेदारी के विभिन्न पहलुओं – जैसे, विवाह, वैवाहिक संबंध, आवास के निहितार्थ, जगह और बच्चों पर अधिकार, पारिवारिक ढांचे और नातेदारी नेटवर्क, काम, महिला कामुकता, और एक तुलनात्मक अध्ययन में शारीरिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्धारित सीमाओं को ध्यान में रखता है। उनके अध्ययन ने दो क्षेत्रों के बीच उल्लेखनीय अंतर को दर्शाया। दक्षिण–पूर्व एशियाई महिलाओं ने आर्थिक और सामाजिक जीवन में असाधारण स्तर की स्वतंत्रता दिखाई। शिक्षा के कारण महिलाओं और पुरुषों के बीच सामाजिक समानता भी पाई गई। यह दक्षिण एशिया

की स्थिति के ठीक विपरीत है। कारण मजबूत पितृवंशीयता, पितृसत्तात्मक पारिवारिक संरचना, महिलाओं के अपने अधिकारों के संदर्भ में ज्ञान की कमी, और महिला यौनिकता के प्रति अत्यधिक चिंता, दक्षिण एशियाई समाजों की विशेषता है। कैथोलिक प्रभाव फिलिपिनो महिलाओं पर नियंत्रण में प्रदर्शित हुआ है। लेकिन उत्तराधिकार और अन्य संसाधनों के मामले में फिलीपींस और थाईलैंड की महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकारी पाया गया।

दुबे सभी समाजों में पुरुष आधिपत्य की धारणा पर गौर करने के लिए श्नाइडर और गॉफ के 1961 के अध्ययन को आधार बनाती हैं। पितृवंशीय समाज में वंश और आधिपत्य दोनों पुरुषों के हक में होता है। दरअसल यह मूल रूप से पुरुषों के बीच सत्ता का संघर्ष है, चाहे वह मातृवंशीय समाज हो या फिर, पितृवंशीय समाज। फिर भी ऐसे उदाहरण हैं जो इस नियम पर खरे नहीं उतरते। जैसे कि कालेपानी (लक्षद्वीप द्वीप) में यह पाया गया कि अधिकार का केंद्रीकरण गाँव की एक बुजुर्ग महिला के हाथों में था, जिसे नातेदारी का सम्मान हासिल था (एल. दुबे 1991 ए, बी, 1993, 1994)।

इस प्रकार, दुबे के अध्ययन ने दक्षिण एशिया और दक्षिण–पूर्व एशिया के बीच और खुद उन क्षेत्रों के भीतर महत्वपूर्ण भेदों को चित्रित किया। दुबे ने कहा कि बारीकी से जाँच करने से यह पता चलता है कि दोनों प्रकार की एकल वंश प्रणाली में जहाँ मातृवंशीयता है वहाँ पिता की भूमिका और जहाँ पितृवंशीयता है, वहाँ माता की भूमिका को कमतर करके देखने की जरूरत है। वे यहाँ इस संबंध में पोस्टेलकोस्टर (1987), प्रिंडीविल (1981) के अध्ययनों का हवाला देती हैं, जिन्होंने कहा है कि द्विवंशीय की तुलना में मातृवंशीय और पितृवंशीय नातेदारी समूहों में गठन और अंतरवैयक्तिक संबंधों के स्तर कम लचीलापन पाया जाता है (विमेन एंड किनशिप : 154).

10.5.4 रहेजा और गोल्ड

रहेजा और गोल्ड ने उत्तर भारत की महिलाओं की मौखिक परंपरा को एजेंसी और प्रतिरोध के रूप में टटोला है। विवाह और जन्म के गीतों, कहानियों और आख्यानों

पर ध्यान केंद्रित करते हुए, उन्होंने दिखाया है कैसे राजस्थान और उत्तर प्रदेश में महिलाएं, कई तरह की अभिव्यक्तियों और कामुक गीतों के माध्यम से अपनी पहचान को पुनर्निर्मित करती हैं। उन्होंने विभिन्न जीवन–संस्कारों और त्योहारों के अवसर पर गाए/प्रदर्शित किए जाने वाले गीतों और कहानियों के विश्लेषण के माध्यम से महिलाओं के आलोचनात्मक दृष्टिकोण को उजागर करने की कोशिश की है।

यह मौलिक विषय पुस्तक के शीर्षक के बगुले के प्रतीकवाद में समाहित है। मुख्य रूप से पुरुषों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली विधाओं में शिकारी बगुला पाखंड तथा शुद्धता व अशुद्धता के बीच के द्विभाजन को प्रदर्शित करता है। वहीं, महिलाओं के पाठों में, हालाँकि 'बगुले कथावाचक के रूप में कार्य करते हैं, लेकिन श्रोताओं को अवैध संबंधों और सत्ता के प्रतिरोध दोनों की कहानियों पर विचार करने के लिए आमंत्रित करते हैं (पृष्ठ xi)। इस प्रकार, बगुला हमें जेंडर, कामुकता और नातेदारी के वैकल्पिक विचारों से परिचित कराता है, जिन्हें 'महिलाओं द्वारा आकार दिया जाता है और कभी–कभार पुरुषों द्वारा साझा किया जाता है'।

अपने अध्ययन के माध्यम से, एन गोल्ड ने प्रजनन क्षमता और कामुकता पर महिलाओं के विचारों के संदर्भ में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की है, जो नातेदारी पर नई रोशनी डालते हैं। मौखिक परंपराओं पर 21 महीने से अधिक समय तक फील्डवर्क करते हुए, गोल्ड ने राजस्थान के एक गांव घटियाली में महिलाओं द्वारा गाए गए गीतों के बोलों के अर्थों का विश्लेषण किया। उन विषयों का अध्ययन करने के बाद, जिनमें व्यभिचार से लेकर मातृत्व की प्राप्ति के लिए यौन संबंधों के स्पष्ट संदर्भों की इच्छा शामिल है, गोल्ड स्वीकार करती है कि वे अब हिंदू महिलाओं की पवित्र सांस्कृतिक छवि को बनाए रखने में महिलाओं की भूमिका में विश्वास नहीं करती हैं। यह ग्रामीण उत्तर भारत की हिंदू महिलाओं की रूढ छवि है। अधिकांश नातेदारी मानदंड महिलाओं के आदर्श व्यवहार के बारे में पुरुषों की अपेक्षाओं का चित्रण हैं, इसलिए महिलाओं ने इन मानदंडों को पूरी तरह से अस्वीकार तो नहीं किया, लेकिन न ही वे समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने में मूक, आज्ञाकारी, निष्क्रिय भागीदार बनी रहीं। गोल्ड के अनुसार, जिन महिलाओं के साथ उन्होंने बातचीत की, उनके लिए गीतों के बोल उनकी नाराजगी, गुस्से और

हताशा को चित्रित करने के तरीके बन गए, जिन्हें अक्सर सीमित करने वाले नियमों का पालन करने के लिए मजबूर किया जाता है।

बोध प्रश्न 3

1. भारत में नातेदारी के जेंडर आयाम को समझने में लीला दुबे के योगदान की विवेचना कीजिए।

10.6 समकालीन नारीवादी बहस

जिन चिंताओं/सरोकारों ने नारीवादी मानवविज्ञान को आंच दी, वे बदले हैं। लेकिन सत्ता संबंधी आधारभूत सवाल अभी भी कायम हैं। धीरे–धीरे जेंडर और मानवविज्ञान के हालिया अध्ययनों का दृष्टिकोण व्यापक हुआ है, जो महिलाओं की पश्चिमी या एकायामी धारणाओं या जेंडर संबंधी अनुभव को चुनौती देता है। उदाहरण के लिए, जेंड–विषयक गैर–पश्चिमी लेखन यह दर्शाता है कि समकालीन संदर्भों में नारीवाद का अनुभव कितना विविध हो सकता है, जहाँ जेंडर की समझ को धार्मिक विश्वास, विकास के अनुभव और भाषा प्रभावित कर सकती है। आज मानवविज्ञान में किसी भी तरह के समग्र अध्ययन या पद्धतिगत दृष्टिकोण के लिए विभिन्न संस्कृतियों में महिलाओं, पुरुषों और जेंडर के प्रतिच्छेद (पदजमतेमबजपवद) का अध्ययन महत्वपूर्ण आयाम हो गया है।

समकालीन नारीवादियों की अब जेंडर विषमता के मुद्दे में कोई दिलचस्पी नहीं है क्योंकि यह समाज की समग्र समझ प्रदान नहीं करता है। अब उनका जेंडर,

नातेदारी, नस्ल और जातीयता के बीच के अंतरसंबंध पर अधिक ध्यान है। पुरुषों और महिलाओं के बीच के अंतर तक सीमित होने के बजाय, अब चिंता अलग–अलग जाति, धर्म और कई पहचान वाली महिलाओं के बीच मौजूद भेदों से है। सत्ता, नारीवादी मानवविज्ञान विश्लेषण की मुख्य चिंता बनी हुई है, क्योंकि यह अस्मिता द्वारा निर्मित होती है और उसे निर्मित भी करती है। इन अध्ययनों में अब उत्पादन और कार्य, प्रजनन और यौनिकता, तथा जेंडर और राज्य जैसे विषय शामिल किए जाते हैं।

10.7 सारांश

लोक गीतों के माध्यम से चित्रित जेंडर की पड़ताल, दक्षिण एशियाई स्त्रीत्व की वैकल्पिक तस्वीर प्रदान करती है। एशियाई महिलाओं के अदृश्य, कमतर आँके जाने और आवाजहीन होने की पश्चिमी रूढ़िवादी धारणाओं के विपरीत, ये गीत उस संतुलन को दर्शाते हैं जिसे महिलाएं अपनी नातेदारी की भूमिका के भीतर घरेलू क्षेत्र में बनाए रखती हैं। उनके योगदान को नजरअंदाज करने के बजाय महत्व दिया जाता है, जैसा कि महिलाओं की यौनिकता और प्रजनन क्षमताओं के उत्सव में देखा जाता है। महिलाओं ने सीधे टकराव की जगह गीतों में उपहास के माध्यम से सूक्ष्म रूप में पितृसत्तात्मक व्यवस्था के भीतर अपने उत्पीड़न को खत्म करने और अपने अधिकारों और इच्छाओं का दावा करने के तरीके खोजे हैं। लोकगीत में स्त्री प्रकृति की ऐसी छवि सामने आती है जहां यौनिकता विनाशकारी नहीं बल्कि पुरुषों के साथ पारस्परिकता की तलाश के रूप में व्यंजित है। महिलाओं के गीत यौन–इच्छा को प्रजनन के रूप में चित्रित करते हैं यानी यौन और मातृ पहलुओं को अलग–अलग और विनाशकारी दिखाने की बजाय उत्पादक के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। ये गीत महिला यौनिकता को विध्वंशक की जगह एकीकृत, शुभ और रचनात्मक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अपनी नातेदारी के बारे में महिलाओं के विचारों के अन्वेषन, जिस तरह वे नातेदारी की सीमाओं के भीतर खुद को मैनेज करती हैं, जिस हद तक वे पूर्व–प्रदत्त मानदंडों को लांघती हैं – इन सब पर विचार करने से पता चलता है कि नातेदारी की पुनर्रचना में जेंडर कितनी अहमियत रखता है।

10.8 संदर्भ

1. Butler, Judith. 2002. "Is Kinship Always Already Heterosexual?" Differences: A Journal of Feminist Cultural Studies, Vol. 13, No. 1, pp. 14-44.
2. Carsten, Janet. 2004. *After Kinship*. Cambridge, UK, New York: Cambridge University Press .
3. Dube, L. 2001. *Anthropological Explorations in Gender*. New Delhi: Sage.
4. Engels, F. (2007). *The Origin of The Family, Private Property, And the State*. New York University Press.
5. Gold,AnnGrodzins,1996, 'Sexuality,Fertility,andErotic Imaginationin RajasthaniWomen'sSongs',in *ListentotheHeron'sWords:Re-imagining Gender and Kinship in North India* by Gloria Goodwin Raheja and Ann GrodzinsGold, Delhi:Oxford University Press, Pp30-72.
6. Lewin E. (ed.) 2006, *Feminist Anthropology. A Reader*. Blackwell (Introduction and cap. 3; 4; 5; 6; 7; 19).
7. Mead, M. (1963). *Sex And Temperament in Three Primitive Societies* (Vol. 370). New York: Morrow.
8. Palriwala, Rajni 1999 (ed.) *Shifting Circles of Support: Contextualising Kinship and Gender Relations in South Asia and Sub-Saharan Africa*. Delhi: Sage Publications.
9. Palriwala, Rajni. 1999. "Negotiating Patriliny: Intra-household Consumption and Authority in Rajasthan (India)", in Rajni Palriwala and Carla Risseeuw (eds.), *Shifting Circles of Support: Contextualising Kinship and Gender Relations in South Asia and Sub-Saharan Africa*. Delhi: Sage Publications [pp.190-220]
10. Strathern, Marilyn 1987 *An Awkward Relationship: The Case of Feminism and Anthropology*. Signs 12(2): 276-292.
11. Stone L. 2006, *Kinship and Gende*r, Westview Press
12. Tsing, Anna Lowenhaupt and Sylvia Junko Yanagisako 1983 Feminism and Kinship Theory in *Current Anthropology*. Vol. 24, No. 4 (August- October): 511-516.
13. Uberoi, Patricia 1993 (ed.) *Kinship, Family and Marriage in India*. New Delhi: Oxford University Press.
14. V.Geetha 2007, *Patriarchy*. Calcutta : Stree

10.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. पितृवंशीय क्रम में आवास और उत्तराधिकार के बंटवारे के लिए पुरुष के खून को आधार बनाया जाता है। यह पितृ–स्थानीय आवास पर भी आधारित है जिसमें महिलाओं को अपना घर छोड़कर, पति के घर में रहना पड़ता है। विवाह के बाद आवास स्थान में बदलाव के कारण महिलाओं को हस्तांतरणीय संपत्ति माना जाता है। इसके अलावा पितृवंशीय समाज में, महिलाओं के पास संपत्ति का कोई स्वामित्व नहीं है और विरासत में मिली संपत्ति में कोई हक नहीं है।

2. नातेदारी सिद्धांत के केंद्र में 'घरेलू' और 'राजनीतिक–न्यायिक' क्षेत्रों के बीच विश्लेषणात्मक द्विभाजन किया जाता है, जिसे निजी–सार्वजनिक द्विभाजन भी कहा जाता है। मॉर्गन और फोट्र्स द्वारा इस्तेमाल किया गया यह द्विभाजन मानव विज्ञान और संबंधित अनुशासन में प्रभावशाली रहा। वे एथनोग्राफीय जानकारी के माध्यम से इस द्विभाजन के नतीजे पर पहुंचे।

बोध प्रश्न 2

1. नारीवादियों ने मानवविज्ञान की इन प्रमुख मान्यताओं पर सवाल उठायारू

- महिलाओं की सार्वभौमिक अधीनता
- घरेलू बनाम सार्वजनिक क्षेत्र
- प्रकृति बनाम संस्कृति का सार्वभौमिक द्विभाजन
- नातेदारी विषमलैंगिक संबंधों और प्रजनन पर केंद्रित है
- नातेदारी की अवधारणा के लिए संदर्भ बिंदु के रूप में पिता–पुत्र संबंध

बोध प्रश्न 3

दुबे का मुख्य सरोकार यह पता लगाना था कि जेंडर भूमिकाएँ कैसे संकल्पित की गईं, उन्हें कैसे लागू किया गया, पुरुषों और महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण क्या हैं और सामाजिक व्यवस्था के रखरखाव और पुनरुत्पादन के लिए इसके निहितार्थ क्या हैं। उनका मुख्य उद्देश्य नातेदारी प्रणालियों और पारिवारिक संरचनाओं के बीच अंतर को समझना था जो विभिन्न समाजों में जेंडर भूमिकाओं में भिन्नता के लिए

जिम्मेदार हैं। इस प्रकार, दुबे के काम ने दक्षिण एशिया और दक्षिण–पूर्व एशिया के बीच और खुद उन क्षेत्रों के भीतर महत्वपूर्ण अंतरों को चित्रित किया। दुबे ने कहा है कि बारीकी से जांच करने पर यह पता चलता है कि दोनों प्रकार की एकवंशीय प्रणाली में माता और पिता में से एक की भूमिका को कमतर करना आवश्यक है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 11 नवीन प्रजननीय तकनीक तथा नातेदारी

इकाई की रूपरेखा

संरचना

11.0 उद्देश्य

11.1 परिचय

11.2 नातेदारी अध्ययन में नवीन प्रजननीय तकनीकों को समझना

11.2.1 नवीन प्रजननीय प्रौद्योगिकी (एनआरटी) क्या है?

11.2.2 नातेदारी अध्ययन के केन्द्र–बिंदु में परिवर्तन

11.2.3 मातृत्व तथा प्रजनन के अभिप्राय को पुर्नपरिभाषित करना

11.3 एनआरटी (नई प्रजननीय प्रौद्योगिकी) के माध्यम से नातेदारी को समझनाः इजराइल के संदर्भ में

11.3.1 प्रौद्योगिकी के माध्यम से मातृत्वसुख प्राप्त करना

11.3.2 मातृत्व, पहचान तथा राष्ट्र

11.3.2 इजराइल में नवीन प्रजननीय प्रौद्योगिकी (एनआरटी) के उपयोग से उत्पन्न चिंताएं

11.4 नवीन प्रजननीय प्रौद्योगिकी (एनआरटी) की सामाजिक प्रासंगिकता

11.4.1 प्रौद्योगिकी तथा पितृसत्ता

11.4.2 प्रौद्योगिकी पर महिलाओं की बढती पहुंच तथा नियंत्रण

11.4.3 'पसंद के अनुसार परिवार' के गठन की अनुमति संभव होना

11.5 परिवार तथा नातेदारी पर नवीन प्रजननीय प्रौद्योगिकी (एनआरटी) के नकारात्मक प्रभाव

11.6 सारांश

11.7 संदर्भ

11.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप निम्नांकित बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे:

• नई प्रजनन तकनीकों या एनआरटी पर विचार–विमर्श करना

• यह समझने का प्रयास करना कि किस प्रकार से एनआरटी के कारण नातेदारी की पूर्व प्रचलित परिभाषाओं में परिवर्तन हो रहा है।

• एनआरटी किस प्रकार से मातृत्व/पितृत्व के अर्थ को परिवर्तित कर रहा है, व्याख्या करना।

• फर्टिलिटी क्लीनिक के संदर्भ में एनआरटी के प्रयोग का परीक्षण करना

• समाज में एनआरटी के अभिग्रहण पर टिप्पणी करना।

11.1 परिचय

प्रजननीय तकनीक में नवाचार नातेदारी की केंद्रीय अवधारणाओं के अर्थ में बदलाव ला रहे है जैसे मातृत्व, पितृत्व तथा व्यक्तित्व। नवीन प्रजनन तकनीकों के परिणामस्वरूप, नातेदारी के जैविक तथा सामाजिक आधार के बीच की सीमाएँ धुंधली हो गई हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इसने जन्म देने की क्रिया में क्रांति ला दी है। जन्म अब केवल एक जैविक घटना नहीं है बल्कि एक सामाजिक घटना है क्योंकि यह संबंध बनाती है। प्रजनन प्रौद्योगिकियां पहले से चली आ रही नातेदारी के सांस्कृतिक निर्माण को चुनौती देती हैं तथा नए प्रकार के सामाजिक संबंधों को लाती हैं, जिसमें नातेदारी की सीमाओं को पुर्नपरिभाषित किया जाता है। इस इकाई में, हम नई प्रजनन तकनीक का पता लगाएंगे तथा किस प्रकार से इसके द्धारा प्रजननीय कार्य में परिवर्तन आया है जिससे प्रजनन, मातृत्व तथा संतान के अर्थ को समझने की अनुमति मिलती है।

अपने पहले खंड में हम कोशिश करेंगे और समझेंगे कि नई प्रजनन तकनीकें (एनटीआर) क्या हैं। एनआरटी के विकास ने परिवार के गठन के लिए मार्ग प्रशस्त किया तथा जीव विज्ञान से परे पुनरुत्पादन की संभावना में वृद्धि हुई।

इसने परिवार और नातेदारी की सांस्कृतिक समझ को जन्म दिया है। इसलिए, हमारे बाद के खंडों में हम इस बात की जांच करेंगे कि जैविक आधार पर आधारित नातेदारी की कुछ मान्य धारणाओं को कैसे नकार दिया गया है। इसके बाद के अनुभागों में हम फर्टिलिटी क्लीनिकों की प्रकृति और उनकी स्वीकृति या अस्वीकृति तथा एनटीआर के लाभ तथा हानि के पक्षों को समझने का प्रयास करेगें।

11.2. नातेदारी के अध्ययन में नवीन प्रजननीय तकनीकों (एनआरटी) को समझना

प्रजननीय प्रौद्योगिकियां उन लोगों के लिए आशा की किरण हैं जो प्राकृतिक गर्भाधान की प्रक्रिया से बच्चे पैदा करने में असमर्थ हैं या परिवार स्थापित करने के लिए जैविक गर्भाधान के अलावा अन्य साधनों का चयन करते हैं। पूर्व के उदाहरणों में विवाहित बांझ जोड़े शामिल हैं, जबकि बाद वाले में समलैंगिक समुदाय तथा एकल पितृत्व का लक्ष्य रखने वाले शामिल हैं। इस प्रकार, प्रौद्योगिकी प्रजनन तकनीकों के प्रभाव में परिवार, पितृत्व, लिंग भूमिका तथा नातेदारी अध्ययन के भीतर विवाह की धारणाओं को बदल रही है। एनआरटी ने स्पष्ट कर दिया है कि वंश तथा गठबंधन ही नातेदारी गढ़ने का आधार नहीं है।

जबकि एनआरटी प्रजनन संबंधी चुनौतियों के बावजूद जैविक नातेदारी को आगे बढ़ाने की संभावना का सीमांकन करता है, क्या इन्हें नातेदारी संबंधों के रूप में मान्यता दी जा सकती है, यह एक अधिक जटिल प्रश्न है। उनकी स्वीकृति उन समाजों में समान नहीं रही है जहाँ उनका अभ्यास किया जा रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि विभिन्न संस्कृतियों में गर्भधारण के तरीके के आधार पर संतान को समाज के वैध सदस्य के रूप में शामिल करने के लिए कठोर नियम भिन्न–भिन्न होते हैं। वही कुछ समाज केवल जैविक माता–पिता से संबंधित प्रजनन पर जोर देते हैं, जबकि अन्य तकनीकी नवाचार को अधिक आसानी से शामिल करते हैं, जिससे गर्भधारण और बच्चे के जन्म की प्रक्रिया में बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी को स्वीकार किया जाता है। जैविक माता–पिता के अलावा, चिकित्सक तथा राज्य इस प्रजनन प्रणाली का हिस्सा बन जाते हैं।

सामाजिक मानदंड जो वर्ग, जातीयता, नस्ल, जाति, धर्म आदि के संदर्भ में उनकी कथित असमानता के कारण कुछ समूहों के बीच वार्तालाप को प्रतिबंधित

करते हैं, उन चिकित्सा प्रक्रियाओं को नहीं लेते हैं जो रोगियों और दाताओं के संबंध में इन विचारों की अनदेखी करते हैं। वे समाज जो एनआरटी के उपयोग की अनुमति देते हैं, वे नैतिक और धार्मिक संहिताओं के खंडित होने से बचाने के लिए सख्त जाँच तथा नियंत्रण सुनिश्चित करते हैं।

प्रजननीय प्रौद्योगिकियां कोई नई घटना नहीं हैं – दुनिया की पहली टेस्ट ट्यूब बेबी लुइसा ब्राउन का जन्म 1978 में यूके में हुआ था। लेकिन इन प्रक्रियाओं का विकास जैव आनुवंशिकी के अंर्तगत एक विशेष शाखा के रूप में बांझपन को सुधारने या नियंत्रित करने के लिए हाल ही में हुआ है। प्रजनन प्रौद्योगिकियां जैव प्रौद्योगिकी के विकास का परिणाम हैं। इसने प्रकृति से चुनने के लिए एक बदलाव को चिह्नित किया, जो कि जीव विज्ञान से अन्यथा बाधित होने वालों के लिए पितृत्व की संभावनाओं को खोल रहा है। उदाहरण के लिए, बांझपन, समान लिंग वाले जोड़े या एकल, तलाकशुदा, विधुर/विधवा, अर्थात् यौन साथी विहीन वाले। एनआरटी के विकास ने परिवार के गठन के लिए मार्ग प्रशस्त किया तथा जीव विज्ञान से परे पुनरुत्पादन की संभावना में वृद्धि हुई। इसने परिवार तथा नातेदारी की सांस्कृतिक समझ को जन्म दिया है।

11.2.1 नई प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) क्या है?

नई प्रजननीय तकनीक उन प्रौद्योगिकियों को संदर्भित करती है जो प्रजनन के जैविक कार्य में हस्तक्षेप करती हैं। यह जन्म, गर्भनिरोधक, गर्भपात तथा प्रसवपूर्व परीक्षण सहित प्रजनन की प्रक्रिया में सुविधा, रोकथाम या हस्तक्षेप कर सकता है। एनआरटी को सहायक प्रजनन भी कहा जाता है।

एनआरटी को तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया हैः (जेरी, डेविड और जूलिया जरी, 2000:515)

अ) **प्रबंधकीय प्रौद्योगिकियां,** जिसमें गर्भावस्था से पहले, गर्भावस्था तथा जन्म का प्रबंधन शामिल है।

ब) **गर्भनिरोधक प्रौद्योगिकियां,** जो गर्भनिरोधक या कंडोम की तरह गैर–हस्तक्षेपवादी हो सकती हैं, या इसमें हार्मोन दमन, अंतर्गर्भाशयी उपकरणों तथा नसबंदी का उपयोग शामिल है।

स) **कल्पनक गर्भाधान,** कृत्रिम वीर्यसेचन, सरोगेसी (स्थानापन्न मातृत्व), प्रजननक्षमता वर्धक दवाएं, तथा इन–विट्रो निषेचन सहित संकल्पनात्मक प्रौद्योगिकियां।

एनआरटी को समझने के लिए सबसे प्रमुख संदर्भ इन–विट्रो फर्टिलाइजेशन (आईवीएफ) है। इस प्रक्रिया में प्रजनन की संभावनाएं उत्पन्न करने के लिए अंडे को एक महिला के अंडाशय से शल्य चिकित्सा द्वारा हटा दिया जाता है तथा दूसरी महिला के गर्भ में स्थानांतरित कर दिया जाता है। एनआरटी न केवल एक चिकित्सा उपकरण है, बल्कि एक संस्था भी है जो ''अभिभावकता के निर्माण की अनुमति देती है, इस प्रकार यह वंशवृद्धि के नए रूपों को रास्ता देती है।(हर्टियर 1985) । व्यक्तियों के लिए प्रजनन विकल्प उपलब्ध कराने के लिए एनआरटी को मानव, मशीन तथा चिकित्सा पेशेवर के हस्तक्षेप की आवश्यकता है। प्रजनन में तीसरे पक्ष की अंतर्निहित आवश्यकता ने नातेदारी की समझ को प्रभावित किया है।

11.2.2 नातेदारी अध्ययन के केंद्र–बिंदु में बदलाव

1970 के दशक में उभरे सांस्कृतिक दृष्टिकोण ने नातेदारी संबंधों की अस्थिरता तथा निरंतर–परिवर्तित होने वाली प्रकृति पर जोर दिया। हाल के वर्षों में, इन परिवर्तनों को जैव प्रौद्योगिकी आधारित प्रजनन प्रक्रियाओं के विकास से आगे बढ़ाया गया है। ये नए आयाम जोड़ रहे हैं कि विभिन्न संस्कृतियों में नातेदारी को अलग तरह से कैसे समझा जाता है। परिवार अब केवल जैविक नहीं रह गया है, बल्कि आनुवंशिकी तथा प्रौद्योगिकी द्वारा भी परिभाषित किया गया है। माता–पिता बनने का अनुभव करने के लिए शादी अब एक मजबूरी के स्थान पर एक विकल्प है।

एनआरटी दिखाता है कि मातृत्व और पितृत्व की शर्तों का अर्थ किस तरह से विभिन्न समाजों में इनकी अवधारणा पर निर्भर करता है। वे दोनों सामाजिक संरचना हैं, विशेष रूप से नई प्रजनन तकनीकों के संदर्भ में। इन तकनीकों के उपलब्ध होने से पहले प्रकृति के तथ्यों को नकारा नहीं जा सकता था। निषेचन, गर्भधारण तथा प्रसव को पृथक नहीं किया जा सकता था। एनआरटी ने गर्भधारण की अवधारणा को जन्म से अलग कर दिया है। इसने न केवल बच्चे का पिता कौन है बल्कि बच्चे की मां कौन है (पहले मातृत्व स्पष्ट था, हालांकि

पितृत्व संदिग्ध हो सकता था) पर भी सवाल उठाया है। अगर अंडा एक मां का है तथा गर्भ दूसरी मां का है तो प्रश्न उठता है कि आनुवंशिकी कौन है।

डेविड श्नाइडर , इस तथ्य को चुनौती देने का मार्ग प्रशस्त करने वाले प्रमुख विद्वानों में से एक हैं, जिन्होंने विभिन्न समाजों के आख्यानों को शामिल किया। नातेदारी की निश्चित तथा स्थिर धारणाओं से नातेदारी का ध्यान हटाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जैसा कि कार्य, सामाजिक संरचना तथा नियमों द्वारा परिभाषित किया गया है, लोगों के दृष्टिकोण से सांस्कृतिक विविधताओं के आधार पर भिन्नता पर विचार करने के लिए, जैसा कि उन्होंने अपने दैनिक जीवन में नातेदारी संबंधों का अनुभव किया।

अमेरिकी रिश्तेदारी का अध्ययन करते समय, श्नाइडर के विचार नातेदारी में अस्थिरता को दर्शाते हैं जिसकी उन्होंने स्वयं वकालत की थी। उन्होंने कहा कि नातेदारी 'साझा जैव–आनुवंशिकी पदार्थ' तथा 'स्थायी विसरित एकात्मकता' के विचारों पर आधारित थी। उनके अनुसार, अमेरिकी संदर्भों में परिवार पर चर्चा में जीव विज्ञान का एक प्राकृतिक प्रक्रिया के रूप में कोई आवश्यक संबंध नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक निर्माण के लिए था तथा अनिवार्य रूप से प्रतीकात्मक थे। 'अमेरिकी सांस्कृतिक अवधारणा में, नातेदारी को जैव–आनुवंशिकी के रूप में परिभाषित किया गया है। यह परिभाषा कहती है कि नातेदारी जैव आनुवंशिक संबंध है। यदि विज्ञान जैव–आनुवंशिकी के विषय में नए तथ्यों की खोज करता है, तो यही नातेदारी है तथा सर्वदा थी, हालांकि उस समय यह ज्ञात नहीं हो सकता था '(श्नाइडर 1980: 23)।

श्नाइडर नातेदारी को पुर्नपरिभाषित करने में एक स्थान के रूप में जैव–आनुवंशिकी प्रौद्योगिकी में नवाचारों के लिए स्थान बनाते है। जिस तरह से संबंधों को नातेदार के रूप में पहचाना जाता है और तदनुसार समय के साथ पोषित किया जाता है, वह केवल जैविक कडी पर आधारित नहीं होना चाहिए। पितृत्व जैविक प्रजनन तक ही सीमित नहीं है। गोद लेने, पालक देखभाल जैसे विकल्प विभिन्न समाजों में समय तथा स्थान पर हमेशा मौजूद रहे हैं। लेकिन इन विकल्पों से गायब जैव–आनुवंशिकी कडी उन्हें जाति, नस्ल, जातीयता तथा धर्म के सामाजिक मापदंडों के अंदर रक्त के संबंध पर जोर देने वाले समाज की नजर में एक समझौता जैसा लगता है। तकनीकी प्रजनन में कुछ प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप सामाजिक रूप से मान्यता प्राप्त माता–पिता के अतिरिक्त अन्य

लोगों के साथ जैव–आनुवंशिकी संबंध होते हैं, लेकिन ऐसे मामलों में जैविक कारक का योगदान करने वाले व्यक्ति को पितृत्व से वंचित किया जाता है।

मर्लिन स्ट्रैथर्न के अनुसार, प्रौद्योगिकी के स्थान पर सामाजिक विचारों पर कम ध्यान दिया जा रहा है, प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग का अर्थ है पितृत्व पर कानून के माध्यम से सामाजिक हस्तक्षेप में वृद्धि (कार्स्टन, 2000: 10)। प्रजनन अब व्यक्तिगत दायरे में नहीं रहता है। इसे राज्य, चिकित्सा अधिकारियों तथा विधायी तंत्र से अनुमति के साथ नियंत्रित और स्वीकृत किया जाता है।

11.2.3 मातृत्व तथा प्रजनन के अर्थ को पुर्नपरिभाषित करना

प्रजननीय तकनीकों ने मातृत्व के विषय में हमारे सोचने के तरीके को बदल दिया है। इससे पहले, मातृत्व को सांस्कृतिक तथा कानूनी रूप से एक एकल परिवार संरचना के आधार पर आनुवंशिक नातेदारी दावों के माध्यम से स्थापित के रूप में देखा जाता था। आज प्रजननीय प्रौद्योगिकियों ने मातृत्व के एक नए वैधीकरण को अनुमति दी है तथा इस तरह मातृत्व के दायरे में व्यापक संभावनाओं को शामिल करने की अनुमति दी है जो अब साधारण जैविक दावों तथा पारंपरिक एकल परिवार मॉडल पर निर्भर नहीं है।

यह आदर्श परिवार मॉडल को चुनौती देता है तथा मातृत्व की सामाजिक समझ को परिवर्तित करता है क्योंकि ''माँ'' में एक डिंब दाता या एक सरोगेट शामिल हो सकता है, या दो पिता या दादी हो सकते हैं, या इच्छित माता–पिता की तुलना में अधिक प्रतिभागियों को शामिल कर सकते हैं। यह स्पष्ट है इसलिए, मातृत्व को अब केवल बच्चे पर जन्म के अधिकार के आधार पर परिभाषित नहीं किया जा सकता है।

एक जैविक घटना के रूप में मातृत्व की उत्पत्ति को अक्सर डिंब से संबंधित प्रौद्योगिकियों के विकास के साथ चुनौती दी जाती है। मातृत्व की जैविक भूमिकाओं को आनुवंशिक (अंडे) और गर्भावस्था (गर्भ) में विभाजित करके, ये नई प्रौद्योगिकियां मातृत्व के वैचारिक विखंडन को भी विवश करती हैं। जैसे ही एक महिला के अंडाशय से अंडे को शल्य चिकित्सा द्वारा हटा दिया जाता है और

दूसरी महिला के गर्भ में स्थानांतरित कर दिया जाता है, प्रजनन संभावनाएं पैदा हो जाती हैं।

1 बोध प्रश्न

1. नई प्रजनन प्रौद्योगिकियां क्या हैं?

.....

.....

.....

2. इन विट्रो फर्टिलाइजेशन या आईवीएफ क्या है?

.....

.....

.....

.....

11.3 नई प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) के माध्यम से नातेदारी को समझना: इजरायल के संदर्भ में

सुसान मार्था कहन ने अपने लेखनकार्य, *'एग्स एंड वॉम्ब्स: द ओरिजिन्स ऑफ ज्यूईसनेस'* में एनआरटी विषय के साथ ही एनआरटी ने कैसे नातेदारी की छवि को पुर्नकल्पित करने के लिए प्रेरित किया है, के प्रकरण पर प्रकाश डाला है । इनका लेखनकार्य इजराइल में प्रजनन क्लीनिक के नृवंशविज्ञान अध्ययन पर आधारित है। इजराइल में दुनिया के अन्य हिस्सों की तुलना में अधिक प्रजनन क्लीनिक हैं तथा इन–विट्रो निषेचन प्रक्रियाओं की प्रति व्यक्ति दर दुनिया में सबसे अधिक है। ये घटनाएं इजराइल में बांझपन की असामान्य रूप से उच्च दर का परिणाम नहीं हैं बल्कि यहूदी धर्म तथा यहूदी संस्कृति में प्रजनन की केंद्रीयता को दर्शाती हैं।

यह अध्ययन एक छोटे से धार्मिक यहूदी अस्पताल में किया गया था जिसमें अति–रूढ़िवादी यहूदी, मुस्लिम तथा ईसाई शामिल थे, जहां प्रत्येक प्रक्रिया को

यहूदी कानून के दायरे में सावधानी से किया जाता था, इस प्रकार इस 'अस्पताल' को धार्मिक बना दिया जाता था। अन्य अस्पतालों के विपरीत यहां कोई भी कैफेटेरिया, रोगी लाउंज के स्थान पर प्रार्थना की पुस्तकों के बुककेस को देखा जा सकता है। अस्पताल में प्रक्रियाओं को हलखा (यहूदी कानून और न्यायशास्त्र, तल्मूड पर आधारित) के विचार के साथ किया गया था। इजराइल में एनआरटी के विषय में मार्था कान के अध्ययन में दर्शाया गया है कि कैसे स्थानीय दृष्टिकोण, चिकित्सा समुदाय के प्रयासों, सहायक सरकारी नीतियों तथा रब्बी समुदाय के विश्वासों ने इस तकनीक को प्राप्त करने तथा नातेदारी के नए अर्थों को शामिल करने के तरीके को प्रभावित किया है।

11.3.1 प्रौद्योगिकी के माध्यम से मातृत्वसुख की प्राप्ति

डॉक्टर ने कान से कहा ''क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? हम उसे माँ बना रहे हैं!'' इस टिप्पणी के साथ डॉ. बेंजामिन ने ऑपरेटिंग रूम के चिकित्सा क्षेत्र तथा नातेदारी के प्रतीकात्मक क्षेत्र के बीच संबंध बनाया। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस तकनीक ने माताओं को बनाने का एक नया तरीका बनाया, मातृत्व की शुरुआत के लिए एक नया मूल मिथक, जो कि यह था। अब कुछ माताएं ऐसी हैं जिन्हें डॉक्टर मातृत्व की तकनीकी रचना करते है। (काह्न, 2004: 369)।

तकनीकी प्रगति के माध्यम से नातेदारी का पुनर्निर्माण किया जाता है, जो कि लोगों को उनकी यहूदी पहचान के पुनर्निर्माण तथा समूह की निरंतरता सुनिश्चित करने में मदद कर रहा है। इजराइल में यहूदी समुदाय के धार्मिक सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य और समाज के बीच संतुलन को सावधानीपूर्वक बनाए रखना होगा। नई प्रजनन तकनीक के उपयोग के साथ, इजरायल की संस्कृति ने धार्मिक कानूनों की अवहेलना किए बिना जैविक गर्भाधान में प्रौद्योगिकी के उपयोग को अपनाया है। गर्भाधान से जुड़ी सभी धार्मिक मान्यताओं को कायम रखते हुए चिकित्सा प्रक्रियाएं की जाती हैं, यानी मातृत्व प्रदान करने में विज्ञान तथा धर्म के बीच सावधानीपूर्वक संतुलित सह–अस्तित्व विद्यमान रहता है। यदि धार्मिक संहिता की अनदेखी की जाती है, तो प्रक्रियाओं को रोका जा सकता है। यह भावी मां के लिए, बच्चे के लिए एक नागरिक के रूप में स्वीकृति प्राप्त करने के लिए, डॉक्टर की प्रतिष्ठा के लिए और इस प्रकार समग्र रूप से समुदाय के विकास के लिए हानिकारक होगा।

11.3.2 मातृत्व, पहचान तथा राष्ट्र

इजराइल में, मातृत्व धार्मिक कानूनों के दायरे में रहता है क्योंकि यह न केवल नातेदारी के संदर्भ में, बल्कि धार्मिक समूह के भीतर किसी की सदस्यता और नागरिकता के अधिकार को भी परिभाषित करता है। यहूदीपन एक राष्ट्र से संबंधितता और नागरिकता के अधिग्रहण को निर्धारित करता है। नातेदारी की पहचान को मातृवंशीय रूप से परिभाषित किया जाता है, यदि बच्चे को वैधता प्रदान की जानी है तो मां की पहचान महत्वपूर्ण हो जाती है।

चूंकि नागरिकता तथा पहचान मातृत्व से निकटता से जुड़ी हुई है, इसलिए एनआरटी के उपयोग सहित धार्मिक संहिताओं के तहत दिए गए नियमों के तहत प्रजनन को बारीकी से प्रबंधित किया जाता है। एनआरटी का उपयोग सुचारू रूप से नहीं होता है। ऐसी आलोचनाएं हैं कि ऐसी प्रौद्योगिकियां मातृत्व की उत्पत्ति के विषय में पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती देती हैं। रब्बी असमंजस में हैं कि क्या अंडे के आनुवंशिक पदार्थ, गर्भ के तथा गर्भावस्था के वातावरण या दोनों में मातृत्व का पता लगाया जाए। ये बहसें नए यहूदी नागरिकों के गर्भाधान के लिए उपयुक्त नियम निर्धारित करती हैं क्योंकि महिलाओं के शरीर के संबंध में हलाखिक कानून का नैदानिक प्रोटोकॉल पर प्रभाव पड़ता है।

मिश्रित प्रजनन, शरीर से अंडे निकालने, अंडे तथा शुक्राणुओं को निषेचित करने तथा भ्रूण को महिलाओं के गर्भ में डालने की सभी प्रक्रियाओं में 'यहूदीपन' देखा गया। फर्टिलिटी क्लिनिक का धार्मिक रंग होता है तथा यह यहूदी पहचान के निर्माण में मदद करता है। क्लिनिक को धार्मिक माना जाता है क्योंकिः

1. सभी उपचार तथा प्रक्रियाएं यहूदी कानून के सावधानीपूर्वक विचार के तहत की जाती हैं।

2. प्रतीक्षा क्षेत्र में प्रार्थना पुस्तकों से भरी किताबों की अलमारी के साथ समायोजन दिखावटी नहीं है।

3. क्लिनिक में काम करने वाले कर्मचारियों को मस्कगिचोट ———हलाखिक निरीक्षकों द्वारा बारीकी से परीक्षण, निगरानी तथा पर्यवेक्षण किया जाता है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पिछली प्रक्रिया से एक ही सिरिंज, सूक्ष्म नालिका या कैथेटर के उपयोग के कारण शुक्राणु तथा अंडे का मिश्रण नहीं होता

है, जो किसी अन्य की आनुवंशिक सामग्री के पदार्थ को ले जा सकते हैं। ये निरीक्षक अपने कार्य को ''पवित्र कार्य'' मानते हैं।

4. हलखा धार्मिक कानून के अनुसार, केवल प्रजनन समस्याओं वाले विवाहित जोड़े ही उपचार का लाभ उठा सकते हैं। अविवाहित महिलाओं के लिए यह विकल्प नहीं है।

5. रोगी के चिकित्सा विवरण के साथ फ्लोचार्ट। उनमें हार्मोनल उपचार, रक्त परीक्षण, तापमान, अल्ट्रासाउंड परिणाम तथा मिकवेह में विसर्जन की तारीख की रिपोर्ट शामिल हैं ––– पवित्रता की स्थिति सुनिश्चित करने तथा अशुद्धता से बचने के लिए किए गए अनुष्ठान स्नान या पति के साथ यौन संबंध बनाने की प्रक्रिया से पूर्व महिला की ''निदाह'' की स्थिति महत्वपूर्ण होती है। यह गर्भाधान के संबंध में हलाखिक चिंताओं के लिए भी महत्वपूर्ण है।

मातृत्व का निर्धारण करने के लिए अलग–अलग भत्ते विशेष रूप से इजराइल में नातेदारी निर्धारित करने में एक समस्या पैदा करते हैं, जहां धार्मिक पहचान मातृवंशीय रूप से निर्धारित होती है तथा स्वचालित रूप से नागरिकता प्रदान करती है।

11.3.2 इजराइल में नई प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) के उपयोग से उत्पन्न चिंताएं

इजराइली समाज में एक उभरता हुआ अंतर्विरोध है, जो एक ओर, समाज में महिलाओं की स्थिति के लिए मातृत्व को परिभाषित करने वाले कारक के रूप में प्राथमिकता देता है और दूसरी ओर हलाखिक कानूनों के दायरे में गर्भाधान की अपेक्षाओं को लागू करके संतानों को वैध बनाने की शर्तें रखता है।

एनआरटी के उपयोग की अनुमति सख्त निगरानी तथा धार्मिक कानूनों के समर्थकों द्वारा बारीकी से जांच के उपरान्त दी जाती है। जो लोग एनआरटी के उपयोग का विकल्प चुनते हैं उन्हें प्रक्रिया से गुजरने के लिए अनुमति की आवश्यकता होती है। एनआरटी प्रक्रिया की कौन कर सकता है, इसकी सीमाएँ हैं। किसके अंडे तथा किसके गर्भ के संबंध में मातृत्व के प्रश्न और इस प्रकार जन्म लेने वाले बच्चे की 'असली' मां कौन है, ऐसी चुनौतियां हैं जो अनसुलझी हैं तथा एनआरटी की नकारात्मक छवि में योगदान दे रही हैं। प्रक्रिया के दौरान

जिन धार्मिक मापदंडों का कड़ाई से पालन करने की आवश्यकता हो सकती है ––– सभी इस प्रक्रिया को चुनने वाले जोड़े पर समाज के दबाव को दर्शाते हैं।

सीमाओं की छलयोजनाः पारंपरिक हलाखिक विचारों के तहत धार्मिक कोड के व्यापक ढांचे के अंर्तगत सर्जिकल प्रोटोकॉल में शुद्धता–अशुद्धता के विषय में अनदेखी, सीमाओं के साथ हेर–फेर के लिए अत्यधिक संभावना है। उदाहरण के लिए, डॉक्टर पर अपनी इकाई में आईवीएफ गर्भधारण की संख्या बढ़ाने का दबाव हो सकता है जिससे ग्राहकों को व्यवसाय चलाये रखने के लिए सुनिश्चित किया जा सके। डॉक्टर आईवीएफ प्रक्रिया के दौरान रक्तस्राव के स्रोत के विषय में कम जानकारी दे सकते हैं। इलाज करा रही एक मरीज अपने रब्बी को स्वेच्छा से ऐसी जानकारी नहीं देना चाहेगी जो उसके इलाज पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। एक रब्बी संतानहीनता से पीड़ित महिला को अनुमति देना चुन सकता है। यह भी संभव है कि रब्बी अपनी स्वयं की व्याख्या तैयार करें कि किसे माँ के रूप में पहचाना जाना चाहिए। डिंब–संबंधित तकनीक द्वारा मातृत्व के निर्धारण को स्पष्ट रूप से अस्थिर कर दिया गया है। फिर भी इस तकनीक को पारंपरिक रूढ़िवादी मान्यताओं के लिए एक चुनौती के रूप में नकारात्मक अर्थों में नहीं देखा जाता है। यह स्पष्ट है कि मातृत्व प्राप्त करने की इच्छा आधुनिक तकनीक के विषय में अवरोधों को दूर करने में मदद करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो रूढ़िवादी यहूदी धार्मिक विश्वासों से उभरी हो सकती है।

2 बोध प्रश्न

1. चर्चा करें कि किस प्रकार इजरायल में नागरिकता तथा पहचान, मातृत्व से निकटता से संबंधित है।

.....

.....

.....

2. इजराइल में फर्टिलिटी क्लीनिकों के सामने आने वाली किन्हीं दो चुनौतियों का उल्लेख करें।

.....

.....

.....

11.4 नई प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) की सामाजिक प्रासंगिकता

प्रजननीय प्रौद्योगिकियों में प्रगति के साथ, एक जैविक परिवार स्थापित करने की आकांक्षा को बांझपन तथा बंध्यता की समस्याओं के कारण समझौता नहीं करना पड़ता है। घर के व्यक्तिगत या घरेलू क्षेत्र की विशेषता के रूप में प्रजनन के क्षेत्र को नारीवादी विचार ने चुनौती दी थी। नारीवादियों ने पुरुष/महिला, मन/शरीर, संस्कृति/प्रकृति, उत्पादन/प्रजनन के बीच गलत लेकिन स्वीकृत द्विगुण पर ध्यान आकर्षित किया है।

11.4.1 प्रौद्योगिकी तथा पितृसत्ता

एनआरटी का विकल्प पितृसत्ता के संदर्भ में विशेष रूप से उपयोगी है, जो मुख्य रूप से महिलाओं को उनकी प्रजनन क्षमता के संदर्भ में परिभाषित करता है जिसमें बच्चे के साथ आनुवंशिक तथा रक्त संबंध पर जोर दिया जाता है। प्रजनन को एक प्राकृतिक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है जिस पर तकनीकी हस्तक्षेप के माध्यम से पुरुष नियंत्रण करते हैं। उन्हें पितृसत्ता को बढ़ावा देने तथा मातृत्व को नारीत्व के साथ जोड़ने के लिए दोषी ठहराया गया है, इस प्रकार संतानहीनता के लांछन के प्रश्न तथा विवाह से बच्चे के जन्म तक रैखिक प्रगति को लागू किया गया है। 'गर्भ धारण करने वाले बच्चों के नाम पर महिलाओं के शरीर को संवेदनाहीन, शल्य चिकित्सा द्वारा आक्रमण तथा घुसपैठ किया जाता है'। (कान, 2004: 363)

नारीवादी आलोचकों द्वारा एनआरटी को महिलाओं के शरीर के अंडे तथा गर्भ में लिंग–विखंडन के रूप में माना जाता है, जो महिलाओं को उनके शरीर को अलग करने योग्य भागों के रूप में बढ़ावा देकर अमानवीय तथा वस्तुनिष्ठ बनाता है जिसे मातृत्व बनाने के लिए जोड़ा तथा पुर्नसंयोजित किया जा सकता है। मां

बनने के लिए बेताब महिलाओं को प्रजनन तकनीकी प्रक्रियाओं का उपयोग करके ''पूर्ण'' बनने का मौका दिया जाता है।

11.4.2 प्रौद्योगिकी पर मांगलिकता की वृद्धि तथा नियंत्रण

एक सकारात्मक दृष्टिकोण यह है कि प्रजननीय तकनीक महिलाओं को घरेलू क्षेत्र में उनके निर्वासन को दूर करने में मदद कर रही है साथ ही उनकी प्रजनन क्षमताओं पर नियंत्रण भी सौंपा है – जैसे गर्भ धारण करना है, कब गर्भ धारण करना है और कैसे गर्भ धारण करना है।

एनआरटी का चयन करने वालों को सामाजिक कलंक को दूर करना होगा यदि उन्हें लगता है कि बच्चे को अपने समुदाय के सदस्य के रूप में स्वीकार करने के लिए यह आवश्यक हैं। क्योंकि कुछ व्यक्ति या सामाजिक समूह एनआरटी को कुछ शर्तों का उल्लंघन करने वाली तकनीक मान सकते हैं। वे शामिल दाता माता–पिता की पता लगाने योग्य संबंधितता तथा सामाजिक साख की अनिश्चितता और ऐसे व्यक्तियों को शामिल करने वाली तकनीक का उपयोग करके प्रजनन करने के लिए धर्म, नस्ल तथा जातीयता की कमी को अस्वीकार कर सकते हैं।

ऐसी तकनीक का उपयोग करने की उपयुक्तता के विषय में मिश्रित राय है। जबकि कुछ इस बात से सहमत हैं कि प्रौद्योगिकी उन लोगों के लिए मददगार है जो बच्चे पैदा करने में समस्याओं का सामना कर रहे हैं, दूसरों को लगता है कि प्रजनन तकनीकों का परिणाम मानव प्रजनन तथा प्रजनन के प्राकृतिक आधार को बदनाम करना है (कार्स्टन, 2000:11) साथ ही सांस्कृतिक तथा धार्मिक विश्वास आसपास के सामाजिक मानदंडों की जिम्मेदारी का प्रमाण है। जैसा कि रब्बियों का सामना करने वाली दुविधाओं तथा एनआरटी के विषय में इजराइल के मामले में देखा गया है।

11.4.3 'पसंद के अनुसार परिवार' के गठन की अनुमति देता है

प्रजननीय तकनीकों ने ''पसंद के परिवारों'' के गठन की अनुमति दी है – समान–लिंग, एकल पितृत्व आदि। पसंद से परिवार इस तथ्य का एक उदाहरण

है कि जीव विज्ञान नातेदारी की एकमात्र परिभाषित विशेषता नहीं है। रक्त तथा वैवाहिक संबंध साझा किए बिना लोग परिजन हो सकते हैं।

नातेदारी इन पारिवारिक संबंधों की विशेषता के लिए अपेक्षित प्रेम तथा स्थायी एकता पर आधारित है। इसके अतिरिक्त यह विषमलैंगिक पहचान के आधार पर प्रजनन के विचारों को भी नकारता है। परिवार को अब केवल प्रजनन की इकाई के रूप में नहीं देखा जाता है बल्कि यह एक गैर–प्रजनन इकाई हो सकती है।

इस तरह के पारिवारिक संबंध पसंद तथा प्रेम की विचारधारा पर आधारित होते हैं, साथ ही नातेदारी के जैविक प्रतिदर्श के विरूद्ध खड़े नज़र आते हैं। पसंद के परिवार नातेदारी के जैविक रूप से प्रतिरूपित विषमलैंगिक क्षेत्र पर सवाल उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में उभरे हैं, जो समलैंगिक महिलाओं तथा पुरुषों को सहायता और देखभाल प्रदान करने में विफल रहा है।

11.5 परिवार तथा नातेदारी पर नवीन प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) के नकारात्मक प्रभाव

एनआरटी की उपयुक्तता के विषय में बहस के कारण, यह आश्वासन नहीं है कि उन्हें अपनाने वाले समाज के सभी सदस्यों द्वारा उन्हें अच्छी तरह से समझा जाएगा तथा सकारात्मक रूप से स्वीकार किया जाएगा। एनआरटी इसके उपयोग के नैतिक, सामाजिक तथा कानूनी परिणामों के विषय में विधायी बहस छेड़ रहा है (लेविन 2008: 381)।

प्रजनन तकनीकों का अनियंत्रित प्रसार गंभीर प्रश्न लाता है जो प्रजनन प्रौद्योगिकी की आदर्शता पर पुनर्विचार करने के लिए विवश करता है। इस तकनीक में मानव शरीर को बिक्री योग्य आर्थिक पूंजी के लिए वस्तुओं के रूप में मान कर तथा चिकित्सा पर्यटन का सहारा लेकर पूंजीवाद को बढ़ावा देने के लिए माना जाता है। इसका परिणाम एक अनैतिक लेकिन संपन्न 'प्रजनन उद्योग' में होता है जहां मानव प्रजनन अंग जैसे अंडे, शुक्राणु, गर्भाशय तथा डिंब को 'खरीदा', 'बेचा' या 'किराए पर' लिया जा सकता है (मारवाह, 2011)। यह कम आर्थिक पारितोषिक के पैमाने तथा प्रक्रियाओं की अनियमित आवृत्ति से स्वास्थ्य जोखिमों के माध्यम से दाताओं का शोषण करके स्वास्थ्य अधिकारों और लिंग की चिंताओं को खत्म करता है। इसका परिणाम उनके प्रजनन शरीर के दोनों

ग्राहकों के रूप में उनकी बांझपन के इलाज के लिए साथ ही दाताओं के रूप में दूसरों को बच्चे पैदा करने की सुविधा के रूप में होता है (पटेल, 2013: 69)। एनआरटी को उसकी समस्याओं के कारण तथा कम सफलता दर के कारण मिश्रित प्रतिक्रिया मिली है, विभिन्न देशों में पहुंच तथा निम्न सफलता दर।

एनआरटी मौजूदा समझ को बदल रहा है कि कैसे मातृत्व तथा पहचान क्रमशः माता और बच्चे को प्रदान की जाती है, प्रदूषण, गर्भाधान और मातृत्व के निर्धारण के संबंध में धार्मिक विश्वासों के लिए खतरा बनने की कीमत पर। पुराने, अपरिवर्तित, मानदंड जो नए नवाचारों तथा प्रक्रियाओं के लिए कोई व्यवस्था नहीं करते हैं, उन्हें जल्द से जल्द उन्नत किया जाना चाहिए। परंपरा तथा आधुनिकता के मध्य की प्रतियोगिता को सामने लाया जाता है साथ ही वर्तमान में इजराइल में प्रजनन के मामले में यह अनसुलझा है।

प्रजनन तकनीक से बच्चे पैदा करना नए सवाल खड़े कर रहा है:

- क्या प्रजनन का कोई सार्वभौमिक अर्थ है?
- संबंध क्या होता है
- क्या मौजूदा नातेदारी सिद्धांत परस्पर–सांस्कृतिक रूप से नातेदारी की प्रथाओं के विषय में सिद्धांत देने के लिए पर्याप्त हैं?

बोध प्रश्न 3

1. समाज के लिए नवीन प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) की कोई दो प्रासंगिकता बताइए

.....

.....

.....

2. **क्या आपको लगता है कि मानव प्रजनन के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग का कोई नकारात्मक परिणाम है? अपने उत्तर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

11.6 सारांश

इस इकाई में हमने नई प्रजनन तकनीक का अर्थ समझा तथा कैसे इसने पितृत्व की समझ को पुर्नपरिभाषित किया है। प्रजनन के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग ने मातृत्व तथा प्रसूति की पारंपरिक समझ को चुनौती दी है। हमने सीखा है कि एनआरटी ने प्रजनन के प्राकृतिककरण को जन्म दिया है, जिसका अर्थ है कि जन्म अब केवल एक जैविक प्रक्रिया नहीं है बल्कि कुछ ऐसा है जिसे हमने चिकित्सा प्रयोगशालाओं में बनाया है। हमने यह भी देखा है कि एनआरटी ने न केवल नातेदारी अध्ययन के दायरे का विस्तार किया है बल्कि महिलाओं की स्थिति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसने महिलाओं को अधिक प्रजनन विकल्प दिए हैं और उन्हें जीव विज्ञान के जाल से बाहर आने की अनुमति दी है। प्रगति के बावजूद, प्रौद्योगिकी के उपयोग के कुछ नतीजे हैं तथा इसने सहायक प्रजनन के माध्यम से पैदा हुए बच्चों की पहचान के प्रश्न उत्पन्न किए हैं।

11.7 संदर्भ

1. कार्स्टन, जेनेट. (संस्करण) 2000, *कल्चर्स ऑफ रिलेटेडनेसः न्यू अप्रोच टू द स्टडी ऑफ किनशिप,* यूकेः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

2. ––––– *''कॉन्सट्यूटिव नॉलेजः ट्रेसिंग ट्रेजिक्टरिज ऑफ इन्फॉर्मेशन इन न्यू कॉन्टेक्सट ऑफ रिलेटेडनेस''* इन एंथ्रोपोलॉजी तिमाही वाल्यूम 80, नंबर 2 किनशिप एंड ग्लोबलाइजेशन (स्प्रिंग 2007) पृष्ठ 403–426।

3. होली, लादिस्लाव 1996. *एंथ्रोपोलॉजिकल प्रेस्पेक्टिव ऑन किनशिप,* लंदनः प्लूटो प्रेस।

4. काह्न, सुसान मार्था. 2004. *''एग्स् एंड वूम्बस्ः द ओरिजिन ऑफ ज्यूइसनेस''* रॉबर्ट पार्किन और लिंडा स्टोन (संपा0) में *किनशिप एंड फैमिलीः एन एन्थ्रोपोलॉजिकल रीडर,* यू.एस. ए.ः ब्लैकवेल पृ0 362–377।

5. लेविन, नैन्सी. 2008. *''ऑल्टरनेटिव किनशिप, मैरिज एंड रिपोडक्शन''* एन्यूल रिव्यू ऑफ एंथ्रोपोलॉजी में, वॉल्यूम 37 (2008) पृ0–375–389।

6. मारवाह, वृंदा और सरोजिनी एन. 2011. *''रीइन्वेंटिंग रिप्रोडक्शन, री–कॉन्सेविंग चैलेंजेजः एन एग्जामिनेशन ऑफ असिस्टेड रिप्रोडक्टिव टेक्नोलॉजीज इन इंडिया''*, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली में, वॉल्यूम 46, नंबर 43 (22–28 अक्टूबर)।

7. पटेल, तुलसी. 2013. *''असिस्टेड रिप्रोडक्टिव टेक्नोलॉजीज (एआरटी) एंड पब्लिक हेल्थः एक्सप्लोरिंग द ऑक्सिमोरोन''*, इंडियन एंथ्रोपोलॉजिस्ट में, वॉल्यूम 43, नंबर 1 (जनवरी–जून): 65–78।

8. श्नाइडर, आर. 1980. *अमेरिकन किनशिपः ए कल्चरल एकांउट,* शिकागोः शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

11.9 अपनी प्रगति की जाँच करें

1. बोध प्रश्नों के उत्तर

1. प्रजननीय प्रौद्योगिकियां जैव प्रौद्योगिकी के विकास का परिणाम हैं। वे प्रजनन की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने, रोकने या हस्तक्षेप करने के उद्देश्य से प्रौद्योगिकियों का उल्लेख करते हैं जैसे कि गर्भनिरोधक, गर्भपात, प्रसवपूर्व परीक्षण, जन्म तकनीक तथा गर्भनिरोधक प्रौद्योगिकियां।

2. नवीन प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) अलग आनुवंशिक तथा गर्भकालीन मां के रूप में नामित करके इजराइल में मातृत्व की धारणा को बदल देता है ––– एक अंडे को निषेचित करने के लिए तथा दूसरा भ्रूण के लिए गर्भ प्रदान करता है।

बोध प्रश्न 2

1. इजराइल में, मातृत्व धार्मिक कानूनों के दायरे में रहता है क्योंकि यह न केवल नातेदारी के संदर्भ में, बल्कि धार्मिक समूह के भीतर किसी की सदस्यता और नागरिकता के अधिकार को भी परिभाषित करता है। यहूदीपन एक राष्ट्र से संबंधितता तथा नागरिकता के अधिग्रहण को निर्धारित करता है। नातेदारी की पहचान को मातृवंशीय रूप से परिभाषित किया जाता है, अगर बच्चे को वैधता प्रदान की जानी है तो मां की पहचान महत्वपूर्ण हो जाती है।

2. इजराइल में फर्टिलिटी क्लीनिकों के सामने दो चुनौतियाँ हैं:

अ. धार्मिक परिस्थितियों से बंधा मातृत्वः इजरायली समाज में एक उभरता हुआ अंतर्विरोध है, जो एक तरफ, समाज में महिलाओं की स्थिति के लिए परिभाषित कारक के रूप में मातृत्व को प्राथमिकता देता है तथा दूसरी तरफ हलाखिक कानूनों के दायरे में गर्भधारण की अपेक्षाओं को लागू करके संतान को वैध बनाने की शर्तें रखता है।

ब. पुराने धार्मिक कोड तथा रब्बियों की राय में मतभेदः पारंपरिक रब्बी कल्पना में अंडाणु के किसी भी संदर्भ का उल्लेख नहीं है। इस प्रकार, रब्बियों के लिए, मातृत्व का निर्धारण करने में किसी ऐसी चीज की व्याख्या करना शामिल है जो धार्मिक ग्रंथों के अनुसार मौजूद भी नहीं है। रब्बी अपनी स्वयं की व्याख्या तैयार करते हैं कि किसे माँ के रूप में पहचाना जाना चाहिए।

बोध प्रश्न 3

1. समाज के लिए नवीन प्रजनन प्रौद्योगिकी (एनआरटी) की दो प्रासंगिकताएं हैं:

अ) प्रौद्योगिकी को पितृसत्तात्मक के रूप में अस्वीकार करना।

ब) महिलाओं को स्वतंत्रता तथा प्रतिनिधित्व देता है।

2. मानव प्रजनन के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग के नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। इसने जैविक प्रक्रिया में एक मौद्रिक मूल्य जोड़ा है साथ ही इसने अमीर और गरीब के बीच विभाजन पैदा किया है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाएं सरोगेसी के व्यावसायीकरण की शिकार हो गई हैं।

इकाई 12 लोकप्रिय संस्कृति तथा नातेदारी की पुर्नकल्पना

इकाई की रूपरेखा

संरचना

12.0 उद्देश्य

12.1 परिचय

12.2 लोकप्रिय संस्कृति क्या है?

12.3 नातेदारी की पुर्नकल्पना

1.3.1 परिवार

12.4 लोकप्रिय संस्कृति तथा नातेदारी की पुर्नकल्पना

12.5 सारांश

12.6 संदर्भ

12.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप निम्नांकित बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे:

- संस्कृति तथा लोकप्रिय संस्कृति के विभिन्न स्वरूपों को व्याख्यायित करना।
- नातेदारी में बदलाव का मूल्यांकन करना।
- एक संस्था के रूप में परिवार, इसके ऐतिहासिक परिपेक्ष्य तथा वर्तमान समय में परिवार की संकल्पना करना।
- लोकप्रिय संस्कृति में नातेदारी के स्वरूप में परिवर्तन की व्याख्या करना।

12.1 परिचय

19वीं शताब्दी के मध्य में लोकप्रिय संस्कृति सामाजिक विज्ञान में व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला शब्द बन गया, क्योंकि यह अभिजात वर्ग या उच्च वर्ग की संस्कृति के विपरीत जनता की संस्कृति का उल्लेख करता है। मानव–शास्त्र में लोकप्रिय संस्कृति का अध्ययन कला, लोककथाओं, संगीत आदि से संबंधित था। परिवार तथा विवाह पर लोकप्रिय संस्कृति के प्रभाव के साथ ही नातेदारी के अध्ययन की सीमाओं को पुर्नपरिभाषित किया जाने लगा। इसने रिश्तेदारी को स्वाभाविक रूप में देखने के स्थान पर नये पारिवारिक रूपों की समझ तथा विकल्पों की संभावना को जन्म दिया है।

रि–कास्टिंग नातेदारी पर पिछली इकाई में, हमने उन क्रमिक परिवर्तनों पर चर्चा की है जिनसे नातेदारी गुजरी है। नातेदारी के समाजशास्त्र पर पाठ्यक्रम में, यह इकाई लोकप्रिय संस्कृति और नातेदारी की पुनर्कल्पना पर केंद्रित है। इस इकाई का उद्देश्य उन परिवर्तनों को समझना है जिनसे नातेदारी की संस्था का स्वरूप विकसित हुआ है, विशेष रूप से परिवार तथा रिश्तों की पुनर्परिभाषा साथ ही किस प्रकार से लोकप्रिय संस्कृति समाज में इन परिवर्तनों को दर्शाती रही है। आइए पहले देखें कि लोकप्रिय संस्कृति क्या है और इसने रिश्तेदारी की पुनः कल्पना को कैसे चित्रित किया है।

12.2 लोकप्रिय संस्कृति क्या है?

लोकप्रिय संस्कृति क्या है, इसे समझने के लिए संस्कृति के अर्थ को समझना जरूरी है। संस्कृति उन विश्वासों, मूल्यों, भाषा, संचार तथा प्रथाओं को संदर्भित करती है जिन्हें व्यक्ति समाज के सदस्यों के रूप में साझा तथा सीख सकते हैं। यह वैसा ही है जैसे व्यक्ति समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से सीखता है क्योंकि वह किसी विशेष समाज, उसकी भाषा, रीति–रिवाजों, रूढियों, प्रथाओं, विश्वास प्रणालियों में आकार लेता है। संस्कृति में कई उप–संस्कृतियां हो सकती हैं, उदाहरण के लिए, भारतीय संस्कृति एक व्यापक शब्द है, तथा इसमें कई जातीय रूप से विविध उपसंस्कृति, छोटे समूह या जातीयताएं हैं जिनकी अपनी स्थानीय भाषा, रीति–रिवाज, परंपराएं आदि हैं। जैसे तमिल संस्कृति, मणिपुरी, कश्मीरी, महाराष्ट्रीयन उप–संस्कृति, आदि।

लोकप्रिय संस्कृति को उन विश्वासों, प्रथाओं के समूह के रूप में देखा जा सकता है जिन्हें समूह या समुदाय के अधिकांश सदस्यों द्वारा व्यापक रूप से साझा किया जाता है। इसमें फिल्म मीडिया, टेलीविजन, फैशन, मनोरंजन, साहित्य, खेल तथा भाषाई सम्मेलनों जैसे विविध माध्यमों पर समाज के प्रमुख विचारों (संस्कृति) का चित्रण शामिल हो सकता है। लोकप्रिय संस्कृति अक्सर जन संस्कृति या लोक संस्कृति से संबंधित होती है, जो श्रमिक वर्गों के साथ संबंधित होती है साथ ही उच्च संस्कृति तथा विभिन्न संस्थागत संस्कृतियों (कानूनी संस्कृति, राजनीतिक संस्कृति, शैक्षिक संस्कृति, आदि) से भिन्न होती है। यह उम्र, लिंग, क्षेत्र, धर्म, वर्ग इत्यादि की विभिन्न श्रेणियों से बहुत आगे जाती है। उदाहरण के लिए, लोकप्रिय संस्कृति अभिनेत्री माधुरी दीक्षित की हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता में स्पष्ट होती है जो कला / गंभीर फिल्मों की तुलना में आबादी के बड़े हिस्से को आकृष्ट करती है। अभिनेत्री कोंकणा सेन जिनकी फिल्में आम तौर पर विशिष्ट दर्शकों को आकर्षित करती हैं।

लोकप्रिय संस्कृति का विशेष ऐतिहासिक तथा सामाजिक संदर्भ होता है साथ ही यह अवधि विशेष की प्रमुख विचारधारा का प्रतिनिधित्व करती है। उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता के बाद की फिल्में जैसे नया दौर (1957), जिस देश में गंगा

बहती है (1961) ने स्वतंत्रता के बाद के भारत में नेहरूवादी राजनीति के राष्ट्र निर्माण के आशावाद को प्रमुखता से दर्शाया। उत्तर–औद्योगीकरण, नगरीकरण तथा आधुनिक समय में, लोकप्रिय संस्कृति (टेलीविजन, फिल्म, किताबें, टैब्लॉयड), समाचार पत्र / पत्रिकाएं, संगीत आदि उत्तर–आधुनिक युग में प्रौद्योगिकी में परिवर्तन के साथ इंटरनेट आधारित सोशल मीडिया (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, ब्लॉग, व्हाट्सएप, आदि) के माध्यम से कल्पनाओं को भी आकार दे रही है।

जन संस्कृति या लोकप्रिय संस्कृति, संरचनावाद के सिद्धांत के अनुसार 'प्रमुख विचारधारा का पुनरुत्पादन करती है। मार्क्सवादी सिद्धांतकार 'एंटोनियो ग्राम्शी' आधिपत्य' शब्द का उपयोग उस तरीके को संदर्भित करने के लिए करते हैं जिसमें बौद्धिक तथा नैतिक नेतृत्व की प्रक्रिया के माध्यम से समाज के प्रमुख समूह समाज के अधीनस्थ समूहों की सहमति हासिल करना चाहते हैं ...' (स्टोरी, 2001:10)। हमने देखा है कि मुख्यधारा की हिंदी फिल्में सामान्यतः उच्च जातियों, पुरुष–केंद्रित, शहरी कहानियों को चित्रित करती हैं तथा हमारे पास हाशिए पर (मजदूर वर्ग, किसान, दलित, आदिवासी, महिलाएं, अल्पसंख्यक, आदि) तथा उनकी कहानियों पर बहुत कम लोकप्रिय फिल्में हैं।

बोध प्रश्न 1

1. **संस्कृति क्या है?**

.....

.....

.....

.....

2. **लोकप्रिय संस्कृति से आप क्या समझते हैं? व्याख्या करें।**

.....

.....

.....

इस भाग में, हम इस तथ्य को समझेगे कि 'परिवार' की धारणा पर केंद्रित होते हुये नातेदारी की पुनः कल्पना कैसे की जा रही है।

12.3 नातेदारी की पुर्नकल्पना

जैसा कि हम जानते हैं, नातेदारी प्रणाली एक व्यक्ति के अन्य लोगों के साथ संबंधों के एक समूह को संदर्भित करती है, या तो रक्त संबंध (समरक्तता) के आधार पर या विवाह संबंध (आत्मीयता) के आधार पर। उदाहरण के लिए, समरक्तता संबंध माता तथा पुत्र/पुत्री, बहन तथा भाई/बहन, पिता और पुत्र/पुत्री के बीच होते हैं, जबकि वैवाहिक संबंधों को पिता/सास तथा पुत्री/दामाद के संबंधों के रूप में देखा जा सकता है।

भारत में परिवार प्रणाली पुरातनता तथा जटिलता के विषय में उल्लेखनीय रूप से अद्वितीय तथा विशिष्ट है, साथ ही देश की संस्कृति, जनसांख्यिकी, क्षेत्र तथा धर्म की विविधता के समान ही विविध है। भारत में, विभिन्न स्वरूपों में परिवार (एक या एक से अधिक माता–पिता और उनके बच्चे एक साथ एक सामाजिक–आर्थिक इकाई के रूप में रहते हैं), घर (एक घर और उसके निवासियों को एक इकाई के रूप में माना जाता है), प्राथमिक परिवार (एकल परिवार या वयस्कों की एक इकाई उनके साथ बच्चे), विस्तारित परिवार (दादा–दादी तथा अन्य रिश्तेदारों के साथ परिवार), तथा अन्य रूपों को सामान्यतः देखा जा सकता है। भारत में, वंश के संदर्भ में, पितृवंशीय परिवार (पुरुष रेखा के माध्यम से वंश) सामान्य हैं जबकि मातृवंशीय (महिला रेखा के माध्यम से वंश) आमतौर पर केरल के नायर तथा उत्तर–पूर्वी राज्यों में गारो और खासी जैसे कुछ समुदायों में देखे जाते हैं। भारतीयों में पितृवंशीय व्यवस्था अधिक प्रचलित है।

विवाह संस्था कई प्रकार से परिवारों के स्वरूपों तथा प्रकार को निर्धारित करती है। विवाह के लिए, भारत में जाति एक सामाजिक कारक बनी रही है। अंतर्जातीय विवाह आम हो गए हैं क्योंकि आज भारत में जातियों के बीच अंतर्विवाही विवाह आदर्श नहीं हैं। भारतीय परिवार में, पारिवारिक सहमति से विवाह अभी भी एक प्रथा है, हालांकि वे विशुद्ध रूप से पारिवारिक सहमति विवाह नहीं हैं। अधिकांश ऐसी शादियां ऐसी होती हैं जब संबंधित वर/वधू को

अपने साथी मिल जाते हैं और फिर वे अपने परिवारों की स्वीकृति लेते हैं जिससे विवाह का 'प्रबंध' हो जाता है। अपने स्वयं के जीवनसाथी को चुनने की स्वतंत्रता विशेष रूप से उदारीकरण के बाद के युग में महत्वपूर्ण हो गई है। लेकिन, भारत के कुछ हिस्से अभी भी ऐसे हैं जहां माता–पिता या परिवार के अन्य बुजुर्गों द्वारा जीवनसाथी का चयन किया जाता है। गिडेंस (2006) का मानना है कि अब जीवनसाथी के चयन के संबंध में अधिक स्वतंत्रता है, व्यवस्थित विवाह(अरेंज मैरिज) कम हो गए हैं, साथ ही महिलाओं और बच्चों के अधिकारों को पहले से कहीं अधिक मान्यता दी जा रही है। बच्चों के अधिकार, विशेषकर बालिकाओं के अधिकार अब पहले से कहीं अधिक सुरक्षित हैं।

कैस्टेल (1997) के अनुसार, पितृसत्तात्मक परिवार व्यवस्था जो पुरुष सत्ता के वर्चस्व पर आधारित है, संकट में है। जैसा कि सामान्यतः यह दृष्टिगत है कि विलंबित विवाह तथा विपरीत लिंगों के बीच विवाह के बिना भागेदारी के दो शक्तिशाली प्रचलनों ने परिवार की संरचना को बदल दिया है। कैस्टेल (1997) पुरुष–प्रधान पितृसत्तात्मक परिवार को कमजोर करने वाले चार प्रमुख तत्वों के संयोजन को संदर्भित करते हैं जो परिवार में महिलाओं तथा बच्चों पर संस्थागत पुरुष अधिकार की विशेषता है। सर्वप्रथम, अर्थव्यवस्था तथा श्रम बाजार दोनों में परिवर्तन जो कि महिलाओं को उपलब्ध कराए गए नए शैक्षिक अवसरों के साथ मिलकर काम करता है। दूसरा, जीव विज्ञान, औषधि विज्ञान तथा चिकित्सा के क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन, जिसके परिणामस्वरूप बच्चे पैदा करने तथा मानव प्रजनन पर एक नियंत्रण विकसित हुआ है। तीसरा, पहले दो तत्वों की पृष्ठभूमि के विपरीत, नारीवाद का विकास है जिसने पितृसत्तात्मकता को कम कर दिया है। चौथा, एक वैश्वीकृत संस्कृति तथा परस्पर जुड़ी दुनिया में विचारों का तेजी से प्रसार जिसके कारण महिलाओं की आवाज को पहले से कहीं अधिक स्पष्ट तथा उच्च स्वर में सुना जा रहा है। (सूर्यमूर्ति, 2012, पृष्ठ 5)

हाल के दिनों में, समकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। इसी तरह, सार्वजनिक क्षेत्रों में अधिक प्रत्यक्षता के साथ गतिविधियों तथा मान्यता के साथ परिवार और समाज में उनके जीवन में सामान्य रूप से सुधार हुआ है। वे पारिवारिक आय में योगदान कर रही हैं, साथ ही पारिवारिक मामलों में निर्णय लेने में उनकी अहम् भूमिका होती है। शिक्षा तथा नौकरी के अवसरों तक पहुंच के कारण उनके क्षितिज का विस्तार हुआ है परिणामतः परिवार में उनकी भूमिकाएं, कार्य तथा स्थिति को और मजबूती मिली है। कामुकता केवल

विषमलैंगिकता (पुरुष और महिला के बीच) के विषय में नहीं है जिसे विवाह के संबंध में गंभीर रूप से परिभाषित किया गया है, इसने समलैंगिकता को स्वीकार करने के लिए स्थान दिया है। समलैंगिक संबंध सामान्य हो गये हैं। भारतीय न्यायालयों के हाल–फिलहाल के फैसले समलैंगिकता को पहचानने तथा सामान्य बनाने में ऐतिहासिक रहे हैं, लेकिन भारत में, समलैंगिक जोड़े अभी भी खुद को ''विवाहित'' के रूप में पंजीकृत नहीं कर सकते हैं। ''समान–लिंग विवाहों के वैधीकरण की मांग करने वाली तीन याचिकाओं के जवाब में, सरकार ने कहा कि विपरीत लिंग के व्यक्तियों को विवाह की मान्यता को प्रदान करने में ''वैध राज्य हित'' मौजूद है। कानून की वैधता पर विचार करने में ''सामाजिक नैतिकता'' के विचार प्रासंगिक हैं साथ ही यह विधायिका के लिए आवश्यक है कि वह भारतीय लोकाचार के आधार पर ऐसी सामाजिक नैतिकता तथा सार्वजनिक स्वीकृति को लागू करे। कानून तथा न्याय मंत्रालय का एक जवाब कहता है ... ''मौलिक अधिकार अनुच्छेद 21 के तहत कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अधीन है और इसका विस्तार नहीं किया जा सकता ... कानूनों के तहत समान लिंग विवाह को मौलिक अधिकार में शामिल किया गया है ... जो वास्तव में इसके विपरीत अनिवार्य है, ''केंद्र का प्रत्युत्तर'' (इंडियन एक्सप्रेस , २६ फरवरी २०२१)

रूढ़िवादी पारंपरिक भारतीय समाज तथा इस विषय में भी भारत सरकार द्वारा बड़े स्तर पर परिवर्तनों का विरोध किया गया है। गिडेंस (2009:30) का कहना है कि विषमलैंगिकों के बजाय समलैंगिक वास्तव में रिश्तों की नई दुनिया की खोज करने तथा इसकी संभावनाओं की खोज करने में अग्रणी रहे हैं। उन्हें होना ही था, क्योंकि जब समलैंगिकता कोठरी से बाहर आ गई, तो समलैंगिक पारंपरिक विवाह के सामान्य समर्थन पर निर्भर नहीं थे। उन्हें अधिकांशतः प्रतिकूल वातावरण नवप्रवर्तक बनना पड़ा है।

नातेदारी तथा किसी भी समाज का एक महत्वपूर्ण अंग परिवार होता है। आइए चर्चा करें कि परिवार की संस्था में कैसे बदलाव आ गया है।

12.3.1 परिवार

जब बाहर की दुनिया महत्वपूर्ण तरीकों से बदलती है तो परिवार भी बदलते हैं, सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों के कारण जिनका परिवारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। परिवार कई तरह से भिन्न होते हैं – परिवार के सदस्य के रूप में किसे शामिल किया जाता है, रहने की व्यवस्था, विचारधाराएं, भावनात्मक वातावरण, सामाजिक तथा नातेदारी समूह, आर्थिक तथा अन्य कार्य। उदाहरण के लिए, 1960 के दशक में पश्चिम द्वारा बाल शोषण को केवल एक सामाजिक समस्या के रूप में ''खोजा'' गया था। हाल ही में, पारिवारिक शोधकर्ता पारिवारिक जीवन के तनावों को बेहतर ढंग से समझने के लिए पारिवारिक हिंसा जैसे बच्चो के साथ या पति–पत्नी के र्दुव्यवहार का अध्ययन कर रहे हैं। पारिवारिक हिंसा के अध्ययन से पता चलता है कि यह अनुमान से कहीं अधिक व्यापक है, इसे आसानी से मानसिक बीमारी के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, तथा यह निम्न वर्गों तक ही सीमित नहीं है। पारिवारिक हिंसा मनोवैज्ञानिक तनावों तथा बाहरी तनावों का एक उत्पाद प्रतीत होती है जो सभी सामाजिक स्तरों पर सभी परिवारों को प्रभावित कर सकती है।

यहॉ केवल माता अवलम्बित परिवार हैं, केवल पिता अवलम्बित परिवार हैं, दादा–दादी पोते–पोतियों की परवरिश करते हैं, और समलैंगिक परिवार हैं। व्यक्तियों में परिवार शामिल है यह एक सामाजिक इकाई भी है, तथा एक बड़े समाज का हिस्सा है। यह अभी भी प्रजनन–देखभाल तथा बच्चों ,वयस्कों के समर्थन से निपटने वाले परिवार की बुनियादी भूमिका को पूरा करता है।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, एक इकाई के रूप में परिवार अपने आसपास हो रहे परिवर्तनों से अछूता नहीं है, परिवार की कुछ विशेषताओं की पहचान इस प्रकार की जा सकती हैः (1) न्यूनतम दो वयस्क व्यक्ति एक साथ रहते हैं। (2) श्रम विभाजन के कुछ स्तर है अर्थात, वे दोनों समान कार्य नहीं करते हैं। (3) सदस्यों के बीच आर्थिक और सामाजिक आदान–प्रदान होता है यानी वे एक दूसरे के लिए कार्य करते हैं। (4) सदस्य सामान तथा सामाजिक गतिविधियों के अतिरिक्त भोजन, निवास जैसी चीजों को साझा करते हैं। (5) वयस्क सदस्यों के अपने बच्चों के साथ ही माता–पिता के साथ संबंध होते हैं, क्योंकि उनके बच्चों के साथ उनके पारिवारिक संबंध होते हैं माता–पिता संरक्षण पोषण और सहयोग के साथ–साथ अपने बच्चों पर कुछ अधिकार का प्रयोग

करते हैं। (6) बच्चों में, भाई–बहन का रिश्ता प्यार, आत्मीयता तथा एक दूसरे की मदद करने जैसी भावनाओं को साझा करना है।

उपरोक्त शर्तों की उपस्थिति का उपयोग 'एक परिवार' को इकाई के रूप में प्रस्तुत करने के लिए किया जा सकता है। जैसा कि हम घरों में परिवर्तन देख रहे हैं, परिवर्तन जो कि व्यापक स्तर पर समाज में हो रही घटनाओं का परिणाम है।

पूर्व–औद्योगिक युग में, ज्यादातर कृषि प्रधान परिवारों में पिता परिवार का मुखिया था साथ ही व्यवसाय का नेतृत्व भी करता था। उसके अधीन पत्नी/माँ, बच्चे, नौकरीपेशा मजदूर उच्च/मध्यम जाति/वर्गीय परिवार में काम करते थे। औद्योगीकरण तथा शहरीकरण के परिवर्तन के फलस्वरूप प्रवासन के कारण संयुक्त परिवार का एकल परिवार में परिवर्तन हुआ साथ ही काम तथा परिवार का अलगाव हो गया। उन्नीसवीं सदी के मध्यवर्गीय शहरी परिवार में सामान्यतः घर में रहने वाली मां तथा कामकाजी पिता होते थे। निम्न वर्ग के परिवारों में परिवार की महिलाओं–पत्नियों, माताओं तथा बेटियों से अधिक आर्थिक योगदान प्राप्त होता था।

बीसवीं सदी की शुरुआत में कई बदलाव देखे गएः उत्तर–औद्योगिक सेवा तथा सूचना अर्थव्यवस्था की दिशा में परिवर्तन, चिकित्सा विज्ञान की प्रगति से मृत्यु दर तथा प्रजनन क्षमता में नियंत्रण संभव हुआ तथा शिक्षा के स्तर में वृद्धि। इन बदलावों से महिलाओं पर ध्यान केंद्रित हुआ, उन्हें बदलाव का अग्रदूत बना दिया। मृत्यु दर में गिरावट का आशय महिलाओं की लंबी उम्र तथा कम बच्चे पैदा करना था। विवाह की संस्था में बदलाव आया जो कि माता–पिता के बच्चों के बच्चों को पालने के स्वरूप से अधिक दो व्यक्तियों के बीच एक व्यक्तिगत संबंध के मिलन के रूप में बदल गई साथ ही, साहचर्य तथा यौन अंतरंगता को अब विवाह के केंद्र के रूप में परिभाषित किया गया था।

शहरीकरण, प्रवास तथा औद्योगीकरण की प्रक्रियाओं का भारतीय परिवार पर भी प्रभाव पड़ा है। साथ ही, इन प्रक्रियाओं के अतिरिक्त, कुछ क्षेत्र–विशिष्ट कारक हैं जो पारिवारिक जीवन को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, परिवार के आसपास के क्षेत्रीय संघर्ष परिवार के भीतर सामंजस्य तथा बंधन को प्रभावित करते हैं, विशेष रूप से जम्मू–कश्मीर, नक्सलवाद प्रभावित क्षेत्रों आदि जैसे हिस्सों में। शहरी भारतीय एकल परिवार वैवाहिक संघर्ष, अलगाव, तलाक,

अंतर–पीढ़ीगत मतभेद आदि जैसे कई मुद्दों का सामना करते हैं। ग्रामीण भारत में परिवार पुरुष तथा महिला द्वारा पति–पत्नी के रूप में निभाई जाने वाली लैंगिक भूमिकाओं में असमानता दिखाते हैं।

''पारंपरिक परिवार में, बच्चे एक आर्थिक हित थे। इसके विपरीत, आज पश्चिमी देशों में एक बच्चा, माता–पिता पर एक बड़ा वित्तीय बोझ डालता है। बच्चे को जन्म देना पहले की तुलना में एक अलग तथा विशिष्ट निर्णय है, साथ ही यह मनोवैज्ञानिक तथा भावनात्मक जरूरतों द्वारा निर्देशित निर्णय है। बच्चों पर तलाक के प्रभावों तथा कई पितृहीन परिवारों के अस्तित्व के विषय में हमारे मन में जो चिंताएँ हैं, उन्हें बच्चों की देखभाल तथा सुरक्षा के बारे में हमारी बहुत अधिक अपेक्षाओं की पृष्ठभूमि के विपरीत समझना होगा। ऐसे तीन क्षेत्र हैं जिनमें भावनात्मक संचार प्रभावी है, जो लोगों के निजी जीवन को एक साथ बांधते थे– यौन तथा प्रेम संबंध, माता–पिता के संबंध तथा दोस्ती, यही कारण है कि अंतरंगता, पुराने संबंधों का स्थान ले रही है। (गिडेंस, 2009, पृष्ठ 29)

अब, हम अपने अंतिम खंड पर आते हैं जहाँ हम लोकप्रिय संस्कृति पर चर्चा करने जा रहे हैं तथा इसने नातेदारी की पुर्नकल्पना की।

बोध प्रश्न 2

1) नातेदारी को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

2) भारत में पितृसत्तात्मक व्यवस्था को कमजोर करने वाले किन्हीं दो तत्वों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

12.4 लोकप्रिय संस्कृति तथा नातेदारी की पुर्नकल्पना

''कला विश्व की संस्कृति का सबसे अच्छा संभव परिचय है। मैं इसे दबी हुई आशाओं, संचित यादों, कोमल भावनाओं के लिए प्यार करता हूं जो इसे एक स्पर्श में बुला सकती हैं। यह आत्मा से रोजमर्रा की जिंदगी की धूल को धो देती है।'' पाब्लो पिकासो (जीवन, 11 सितंबर 1964)। उपरोक्त उद्धरण में पिकासो कला के विषय में बात कर रहे हैं, लेकिन यह सिर्फ कला नहीं है बल्कि लोकप्रिय संस्कृति है जो बड़े समाज को दर्शाती है तथा विभिन्न समाजों की संस्कृति का परिचय है साथ ही हम कहानियों को उनके निर्माण की समयावधि में संदर्भित कर सकते हैं। पारंपरिक परिवारों के रूप में उन्हें नेहरू युग की फिल्म भाभी (1957) से लोकप्रिय संस्कृति में चित्रित किया गया था, जहां एक विधुर तथा एक बच्चे के पिता के नेतृत्व में एक ही घर में एक चाची के साथ चार भाइयों का एक बड़ा परिवार रहता है, बलराज साहनी जो एक अधिक शिक्षित शांता से शादी करता है जो अपने परिवार की देखभाल करने के लिए आती है तथा परिवार को एक साथ रखने के लिए वह जो प्रयास करती है।

1950 तथा 1960 के दशक की अधिकांश फिल्मों ने बड़े भारतीय परिवार को चित्रित किया जहां भाइयों के बीच संघर्ष अंत में हल हो गया और परिवार खुशी से रहता था। प्रेम कहानियों में, लड़के और लड़की के परिवारों ने ज्यादातर वर्ग के मानदंडों (अमीर लड़का गरीब लड़की तथा इसके विपरीत) पर शादी का विरोध किया और अंततः शादी के लिए राजी हो गए। इस दौर की ज्यादातर फिल्मों में परिवार की इच्छाएं अहम होती थीं।

1970 के दशक ने हिंदी फिल्मों में अधिक हिंसा दिखाई, समाज का परिवर्तन और उसका गुस्सा तथा निराशा दो भाइयों की कहानी के माध्यम से *दीवार (1975)* जैसी फिल्मों में दिखाई दी, जिसमें एक बेटा पुलिस वाला और दूसरा एक डाकू होता है, जहां मां अपने धर्मी बेटे को चुनती है और अंततः अपराधी बेटे को मरना पड़ता है। *मदर इंडिया (1957)* की मां–बेटे की कहानी के समान ही। *शोले (1975)* में जया बच्चन द्वारा निभाई गई विधवा का किरदार था, अमिताभ और जया के बीच का प्रेम धर्मेंद्र और हेमा मालिनी की दूसरी जोड़ी के प्रेम की तुलना में काफी सूक्ष्म है। पारंपरिक मानदंडों के अनुसार, हिंदू धर्म में विधवा पुनर्विवाह आम नहीं था और यह पारंपरिक धारणा अछूती रही क्योंकि अमिताभ अंत में दर्शकों को प्रचलित सामाजिक मानदंडों के लिए किसी भी तरह की

चुनौती से बचाते हुये मर जाते हैं। गुलजार की आंधी (1975) फिल्म में सुचित्रा सेन को एक शक्तिशाली राजनेता के रूप में दिखाया गया, जो अपने पति से अलग हो गई थी, अपने राजनीतिक कार्यों के कारण बच्चे की उपेक्षा करने पर उनसे पति ने आपत्ति जताई थी। वे बाद में मिलते हैं और सुलह कर लेते हैं, शादी बरकरार रहती है।

सिलसिला (1981) फिल्म दो पूर्व प्रेमियों अमिताभ और रेखा के बीच एक विवाहेत्तर संबंध पर आधारित थी, लेकिन अंत में दोनों अपने जीवनसाथी के पास वापस आ जाते हैं। शादी एक ऐसा बंधन है जिसे तोड़ना नामुमकिन है, ज्यादातर हिंदी फिल्मों ने यही संदेश दिया, चाहे कुछ भी हो जाए। विवाहेत्तर संबंध पर एक और कहानी, महेश भट्ट द्वारा निर्देशित *अर्थ (1982)* शबाना आजमी द्वारा निभाई गई एक महिला की यात्रा पर केंद्रित है, जो उसके पति के दूसरी महिला स्मिता पाटिल के साथ संबंध के कारण टूट गई थी। दोषी पति और उसके मनोवैज्ञानिक रूप से परेशान महिला साथी के कारण शबाना तथा उसके पति के रिश्ते को नुकसान होता है, जो अपने दम पर जीवन जीने वाली एक मजबूत, आत्मविश्वासी महिला के रूप में उभरती है।

1980 के दशक में पितृसत्ता को चुनौती देने वाली महिलाओं की शक्ति को दर्शाने वाली कई और महिला केंद्रित फिल्में आईं। *मिर्च मसाला (1987)* 1940 के भारत में स्थापित किया गया था जहाँ महिलाएं एक सूबेदार (कर संग्रहकर्ता) और गाँव के कुछ पुरुषों के खिलाफ लड़ती हैं। 1990 के दशक में, उदारीकरण के बाद के युग में समाज ने परिवर्तन देखा और लोकप्रिय संस्कृति में बड़े पैमाने पर परिवर्तन हुए। दीपा मेहता की फिल्म *फायर (1996)* दो देवरानी–जेठानी (शबाना आजमी और नंदिता दास) के बीच समलैंगिक संबंधों पर आधारित समलैंगिकता पर आधारित पहली हिंदी पूर्ण फिल्म थी। समाज में हो रहे बदलावों को दिखाने की दिशा में यह एक बड़ा कदम था। 1990 के दशक में शेखर कपूर ने यूपी की डाकू फूलन देवी पर *बैंडिट क्वीन (1994)* फिल्म बनाई, जो अपने जमाने में आतंक का पर्याय थी।

1990 के दशक में राजश्री प्रोडक्शंस द्वारा हिट परिवार–उन्मुख फिल्मों की श्रृंखला में एक तेजी से बदलते समाज के बीच संयुक्त परिवार का प्रेम भी देखा गया, जैसे *हम आपके हैं कौन (1994)* से *हम साथ साथ हैं (1999)* में पारिवारिक मूल्यों तथा पारिवारिक एकजुटता को विशेष रूप से दर्शाया गया है। यश चोपड़ा

की दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे – डीडीएलजे (1995) ने भी पारिवारिक मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्यार की भावनाओं पर परिवार की सहमति को सर्वोपरि बताया।

बॉक्स 1

हिंदी सिनेमा में प्रेम तथा विवाह पर पेट्रिसिया उबेरॉय के विचार

पेट्रीसिया उबेरॉय, एक मानवविज्ञानी हैं, जिन्होंने नातेदारी, परिवार तथा विवाह पर व्यापक रूप से शोध तथा लेखनकार्य किया है, ने विश्लेषण के लिए दो बहुत लोकप्रिय हिंदी फिल्मों का चुनाव किया है, *दिलवाले दुल्हनिये ले जाएंगे (डीडीएलजे)* और *परदेस (1997)*। उनका मानना है कि ''समकालीन लोकप्रिय सिनेमा भारतीय मध्यवर्गीय डायस्पोरा से उत्पन्न समस्याओं के साथ जुड़ाव तथा एक वैश्वीकृत दुनिया में भारतीय पहचान की अभिव्यक्ति के लिए एक महत्वपूर्ण पर्याय के रूप में उभरा है'' (उबेरॉय, 1998: 310)। विश्लेषण की गई दोनों फिल्में विदेशों में बसे भारतीयों के इर्द–गिर्द घूमती हैं, जो ''पारिवारिक जीवन की विशिष्टताओं के संदर्भ में भारतीयता, विशेष रूप से प्रेमालाप तथा विवाह की संस्थाओं'' को परिभाषित करते हैं (उक्तः 305) ये फिल्में प्रेम कहानियां हैं जो ''नैतिक'' पसंद की कुछ दुविधाओं को विस्तृत करती हैं जो समकालीन भारतीय समाज में गहराई से प्रतिध्वनित होती हैं। ये दुविधाएं दो प्रकार की होती हैं, जो सिनेमाई कथा में तथा उसके माध्यम से परस्पर जुड़ी होती हैं। पहला व्यक्तिगत इच्छा, सामाजिक मानदंडों तथा पसंद के विवाह के संबंध में अपेक्षाओं के बीच का संघर्ष है। इन दोनों फिल्मों में इसका सुखद समाधान 'अरेंज्ड लव मैरिज' का समकालीन आदर्श है, यानी मंगनी की एक शैली जिसके तहत पहले से ही बनाई गई प्रेम पसंद को माता–पिता की मंजूरी से समर्थन दिया जाता है तथा उसके बाद 'अरेंज मैरिज' की तरह व्यवहार किया जाता है। (वहीः 306)। उबेरॉय लिखती हैं कि कई ''समाजशास्त्रियों ने उम्मीद की थी कि भारतीय समाज के आधुनिकीकरण से 'व्यवस्थित विवाह'(अरेंज्ड मैरिज) की प्रथा को कमजोर पड जाएगी, दोनों ही कारणों से, एक व्यक्तिवादी लोकाचार को प्रोत्साहित करके तथा अंतर्विवाह के नियमों को तोड़कर'' (वहीः 308)। वह पाती है कि यह

उम्मीद सच्चाई से बहुत दूर दिखाई देती है, आधुनिकीकरण ने अपनी भूमिका निभाई हो सकती है, लेकिन उस सीमा तक नहीं जिसकी अपेक्षा की गई थी, पारिवारिक विवाह तथा पितृसत्तात्मक व्यवस्था की संस्था को मध्यवर्गीय परिवारों के बीच अंतरराष्ट्रीय विन्यास में पुनः पेश किया जाता है। वह लिखती हैं कि अंतरराष्ट्रीय भारतीय परिवार को एक पितृसत्तात्मक संस्था के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहां परिवार के मुखिया–पिता के पास अधिकार तथा जिम्मेदारी है कि वह अपने बच्चों के लिए विवाह की व्यवस्था करें। वह लिखती हैं कि ये फिल्में ''पितृवंशीय संयुक्त परिवार के आदर्शीकरण तथा प्राकृतिककरण'' का समर्थन करती हैं।

इस प्रकार, उदाहरण के लिए, दोनों फिल्में मानती हैं कि घरेलू सदस्यता में शामिल होने का स्वरूप स्वचालित रूप से पितृस्थानिक निवास के सिद्धांत का पालन करेगा। इसी तरह डीडीएलजे में वरिष्ठ मल्होत्रा तथा परदेस में किशोरी लाल दोनों अपने बेटों की पत्नियों को 'लाने' के लिए भारत लौटते हैं'' (वहीः 332)। गठबंधन के रूप में विवाह का सिद्धांत रिश्तेदारी का एक और पहलू है जिसे अंतरराष्ट्रीय विन्यास में पुनः पेश किया जाता है। वह लिखती हैं कि प्यार में एक युवा जोड़े के बीच सिर्फ एक व्यवस्था के बजाय, शादी परिवारों के बीच एक गठबंधन है। वह आगे कहती हैंः "भारतीय रिश्तेदारी की व्यापक भारतीय संस्कृति से अपरिचित लोगों के लिए, परदेस की प्रेम कहानी एक उत्सुक अंत प्रतीत होता है। यहां हम युवा जोड़े को एक–दूसरे को गले लगाते या माता–पिता के आशीर्वाद से एक–दूसरे के साथ एकजुट होते हुए नहीं पाते हैं। इसके विपरीत, अंतिम दृश्य में एक ओर पिता और (पालक) पुत्र और दूसरी ओर पिता और पुत्री को गले लगाते हुए दिखाया गया है। खुश युवा जोड़े केवल अपने पिता के संबंधित कंधों पर एक दूसरे को देखते हैं "(उक्तः 333)। उबेरॉय ने निष्कर्ष निकालती है कि ''डीडीएलजे और परदेस दोनों में, रिश्तेदारी की भारतीय संस्कृति के सभी तीन प्राथमिक सिद्धांतों (यानी, संयुक्त परिवार की संस्था, पितृसत्तात्मक अधिकार तथा अंतर–पारिवारिक गठबंधन के रूप में विवाह) को प्रवासी के संदर्भ में चुनौती दी जाती है– और अंत में फिर से पुष्टि की जाती है'' (वही;333)

(उबेरॉय, पी. (1998), *द डायस्पोरा कम्स् होमः डीसिपलिन डिजायर इन डीडीएलजे*, कन्ट्रीब्यूशन टू इंडियन सोशियोलॉजी, 32 (2), 305–336)

अलीगढ़ (2015) फिल्म में दिखाया गया है कि कैसे एक कॉलेज के प्रोफेसर को उसकी यौन पसंद पर परेशान किया गया था कि उन्हें आत्महत्या करनी पड़ी। इस्मत चुगताई की लघु कहानी लिहाफ (1942) ने हंगामा खड़ा कर दिया जहां उन्हें समलैंगिकता पर लिखने के लिए अश्लीलता के आरोपों के साथ कानूनी मामलों का सामना करना पड़ा।

समाज अभी भी पश्चिमी देशो के विपरीत समलैंगिक संबंधों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है, जहां इन विषयों को कला, सिनेमा (ब्रोकबैक माउंटेन, समलैंगिक संबंधों पर 2006 की फिल्म), पत्रिकाओं आदि जैसे विभिन्न माध्यमों के माध्यम से लोकप्रिय संस्कृति में काफी लोकप्रिय तथा चित्रित किया गया है। उदाहरण के लिए, प्रभावशाली समलैंगिक फोटोग्राफर जॉन ई. बिरेन (जिन्हें जेईबी के नाम से जाना जाता है) को 1979 की अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक *आई टू आईः पोर्टेट्स ऑफ लेस्बियन्स* को उन लोगों के लिए स्वयं प्रकाशित करना पड़ा, जिन्हें उन्हें सबसे अधिक देखने की आवश्यकता थी। मुख्यधारा के समर्थन की कमी के बावजूद, जेईबी ने सभी उम्र तथा पृष्ठभूमि की समलैंगिक / समलैंगिक महिलाओं के श्वेत–श्याम चित्रों का एक संग्रह प्रकाशित किया, जो कारों को ठीक करने, अपने प्रेमियों के साथ आराम करने, अपने बच्चों को गले लगाने, राजनीतिक कार्रवाई का विरोध करने जैसे रोजमर्रा के काम करते थे। तस्वीरों के साथ लघु साक्षात्कार के साथ। इस पुस्तक की छवियों में समलैंगिकों को उनकी शिष्टता, मानवता, सुंदरता तथा प्रतिभा के साथ पूर्ण रूप से प्रदर्शित करने के तरीके को बदल दिया।

चित्र। 1. ग्लोरिया एंड चर्मेन, बाल्टीमोर, मैरीलैंड, 1979 (जोन ई. बिरेन) 'आई टू आई', पोर्टेट्स ऑफ लेस्बियन्स', एंथोलॉजी एडिशन द्वारा प्रकाशित

टीवी सोप ओपेरा ''प्रकार्यात्मक, पितृसत्तात्मक परिवार'' के अपने चित्रण को एकल (जस्सी जैसी कोई नहीं) या संयुक्त परिवार (बालाजी प्रोडक्शंस के अधिकांश सोप ओपेरा) के रूप में दिखाते हैं। अमेरिकन शो *लीव इट टू बीवर,* से *द सिम्पसन्स टू मॉडर्न फैमिली* तक, आदर्श को बढ़ावा देने से लेकर अब बिना किसी आदर्श की स्वीकृति को बढ़ावा देने तक। मॉडर्न फैमिली टीवी 21वीं सदी के परिवार के दैनिक संघर्षों को दिखाता है जहाँ शो मातृत्व, मिश्रित परिवारों, किशोरावस्था, लैटिन महिलाओं तथा समलैंगिकता के आसपास की रूढ़ियों को उजागर करता है।

अमेरिका में आधुनिक परिवार की टूटी हुई शादियों की प्रवृत्ति को दर्शाने का माध्यम सौतेला परिवार भी है। शो में, जे अपनी पत्नी डेडे को तलाक देता है, फिर ग्लोरिया से शादी कर लेता है। डेड के साथ जे के दो बच्चे थे, क्लेयर (उसका एकल परिवार, विशेषतः अमेरिकी परिवार) और मिशेल (समलैंगिक चरित्र ने कैम नाम के एक व्यक्ति से शादी की और साथ में उन्होंने एक एशियाई छोटी लड़की, लिली को गोद लिया), जे से शादी के एक पहले ग्लोरिया का एक बच्चा था, मैनी। एक अन्य लोकप्रिय शो, *ऑरेंज इज द न्यू ब्लैक, 2013* से चल रहा है, जिसने नियमित रूप से दिखने वाले समलैंगिक, उभयलिंगी तथा ट्रांसजेंडर

पात्रों को पेश करके एलजीबीटीक्यू आंदोलन में मदद की। लोकप्रिय संस्कृति के विभिन्न माध्यमों पर विभिन्न कहानियों तथा पात्रों के चित्रण नातेदारी और समाज में बदलाव की ओर इशारा करते हैं।

गतिविधि

अपने अध्ययन केंद्र पर अन्य छात्रों के साथ 1960 से 2020 तक विभिन्न युगों की लोकप्रिय हिंदी फिल्मों की एक सूची बनाएं और हिंदी फिल्मों में 'भारतीय परिवार' के संक्रमण के प्रस्तुतिकरण के विषय में चर्चा करें।

12.5 सारांश

लोकप्रिय संस्कृति तथा नातेदारी की पुनर्कल्पना पर आधारित इस इकाई में, हमने संस्कृति और लोकप्रिय संस्कृति विषय पर चर्चा के साथ शुरुआत की। फिर हमने नातेदारी और परिवार की संस्थाओं में हुए परिवर्तनों की जाँच की। और अंत में, लोकप्रिय संस्कृति जैसे फिल्मों, साहित्य, टीवी धारावाहिकों के विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से, हमने लोकप्रिय संस्कृति में नातेदारी में परिवर्तन के चित्रण पर बहस की। जबकि एक अवधि में पारिवारिक रचनाओं में कुछ व्यापक परिवर्तन होते हैं, यह भी सच है कि परिवार, विवाह तथा नातेदारी की संस्थाओं के आसपास की पारंपरिक धारणाओं को पुनः पेश किया जाता है। दो फिल्मों के विषय में पेट्रीशिया उबेरॉय का विश्लेषण, जिस पर हमने बॉक्स सेक्शन में चर्चा की, हमें बताता है कि कैसे प्रवासी संदर्भ में पितृसत्तात्मक पारिवारिक संरचना के बावजूद अंतरराष्ट्रीय विन्यास को पुनः प्रस्तुत किया जाता है। यह इकाई लोकप्रिय संस्कृति के विभिन्न माध्यमों पर विभिन्न कहानियों तथा पात्रों के चित्रण को पकड़ने की कोशिश करती है, जो नातेदारी तथा समाज में बदलाव की ओर इशारा करती है।

12.6 संदर्भ

गिडेंस, एंथोनी. 2009, द ग्लोबल रिवोल्यूशन इन फैमिली एंड पर्सनल लाइफ इन *फैमिली एंड ट्रेडिशन (सं0)*, पंद्राहवा संस्करण, पियर्सन, न्यूयॉर्क।

स्टोरे, जॉन. 2001, *कल्चरल थ्योरी एंड पॉपुलर कल्चर*, पियर्सन/प्रेंटिस हॉल, लंदन।

सूर्यमूर्ति राधामणि. 2012, *"द इंडियन फैमिलीः नीड्स फॉर ए रिविजिट"*, जर्नल ऑफ कम्पेरेटिव फैमिली स्टडीज, वॉल्यूम 43, नंबर 1 (https%//www-jstor-org/stable/41585377 30 मार्च, 2021 को एक्सेस किया गया)।

स्कोल्निक अर्लेने एस. एंड स्कोलनिक जेरोम एच. 2009. *फैमिली इन ट्रांजिशन* (सं0) पंद्राहवा संस्करण, पियर्सन, न्यूयॉर्क।(https://www.them.us/story/jeb-eye-to-eye-photo-book-portraits-of-lesbians 3 अप्रैल, 2021 को एक्सेस किया गया)

https://indianexpress.com/article/india/same-sex-marriages-legal-recognition-centre-7204303/ 10 अप्रैल, 2021को एक्सेस किया गया

http://nybyu.com/pop-culture-analysis/modern-family-promotes-the-acceptance-of-all-types-of-families/10 अप्रैल, 2021 को एक्सेस किया गया

12.7 अपनी प्रगति की जांच के लिए बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. संस्कृति उन विश्वासों, मूल्यों, भाषा, संचार तथा प्रथाओं को संदर्भित करती है जिन्हें व्यक्ति समाज के सदस्यों के रूप में साझा करते तथा सीख सकते हैं। यह वही है जो व्यक्ति समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से सीखता है क्योंकि वह किसी विशेष समाज, उसकी भाषा, रीति–रिवाजों, रूढियो, प्रथाओं, विश्वास प्रणालियों आदि में उत्पन्न होता है।

2. फिल्म मीडिया, टेलीविजन, फैशन, मनोरंजन, साहित्य, खेल और भाषाई सम्मेलनों जैसे विविध माध्यमों पर लोकप्रिय संस्कृति का चित्रण, एक निश्चित समय पर प्रमुख विचारों का प्रतिबिंब है। श्रमिक वर्ग के साथ लोकप्रिय संस्कृति का संबंध इसे समाज के चरित्र तथा बहुसंख्यक आबादी के चरित्र को और भी अधिक प्रतिबिंबित करता है जो उच्च संस्कृति (कलागृह सिनेमा / कला) और विभिन्न संस्थागत संस्कृतियों (कानूनी संस्कृति, राजनीतिक संस्कृति, शैक्षिक संस्कृति) से भिन्न हो सकती है।)। यह उम्र, लिंग, क्षेत्र, धर्म, वर्ग आदि की विभिन्न श्रेणियों को पार कर सकता है।

बोध प्रश्न 2

1. नातेदारी प्रणाली एक व्यक्ति के अन्य लोगों के साथ संबंधों के एक समूह को संदर्भित करती है, या तो रक्त संबंध (समरक्तता) के आधार पर या विवाह संबंध (आत्मीयता) के आधार पर।

2. सर्वप्रथम, अर्थव्यवस्था तथा श्रम बाजार दोनों में परिवर्तन के कारण जो अवसर महिलाओं को उपलब्ध कराए गए वे नए शैक्षिक अवसरों के साथ मिलकर काम करता है। दूसरे, जीव विज्ञान, औषधि विज्ञान तथा चिकित्सा के क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन, जिसके परिणामस्वरूप बच्चे जन्म देने तथा मानव प्रजनन पर एक नियंत्रण प्रदान की गयी।

उपयोगी पुस्तकें

Carsten, Janet. 1995. 'The Substance of Kinship and the Heat of the Hearth: Feeding, Personhood, and Relatedness among Malays in Pulau Langkawi' *American Ethnologist*, 22 (2): 223-24.

Carsten, Janet.2004. *After Kinship*, Cambridge University Press

Dube, L, (2000) Doing Kinship and Gender: An Autobiographical Account in *Economic and Political Weekly*, Vol. 35, No. 46, pp. 4037-4047

Dube, Leela. 1974.*Sociology of Kinship*. Popular Prakashan: Bombay

Dumont,L., 1968,'MarriageAlliance',inD.Shills(ed.),*International Encyclopedia of the SocialSciences*,MacmillanandFreePress.

Giddens, Anthony, 2009. The Global Revolution in Family and Personal Life in *Family in Transition* (ed.) FIFTEENTH EDITION, Pearson: New York.

Gough, K.E. *The Nayars and the Definition of Marriage*, The Journal of the Royal Anthropological Institute of Great Britain and Ireland, Vol. 89, No. 1 (Jan. - Jun., 1959), pp. 23-34

Karve, I. 1953. *Kinship Organisation in India. Deccan College Monograph Series*. Poona: Deccan College Post-Graduate and Research Institute

Karve, I. 1994. "The Kinship Map of India". In Patricia Uberoi (ed.) Family, Kinship and Marriage in India. Oxford University Press: New Delhi

Lévi-Strauss,Claude. 1969. *The Elementary Structures of Kinship*, London: Eyre andSpottiswoode.

Needham, Rodney.1971. (ed). *Rethinking Kinship and Marriage*, London: Tavistock

Parkin, Robert and Linda Stone (eds.) 2004. *Kinship and Family: An Anthropological Reader*. Oxford: Blackwell Publishing Ltd.

Parkin, Robert. 1997. *Kinship: An Introduction to Basic Concepts*. Oxford: Blackwell Publishers Ltd.

Rivers, W. H. R., Firth, R., & Schneider, D. M. (1968). *Kinship and social organization* (No. 34). Athlone Press.

Schneider D.M 1980.*American Kinship: A Cultural Account*, University of Chicago Press

Uberoi, Patricia. 1993 (ed), *Family, Kinship, and Marriage in India* Oxford University Press:Delhi

Vogel, E. F., & Bell, N. W. (Eds.). (1960). *A Modern Introduction to the Family*. Free Press.

Weston, Kath .2013. *Families We Choose: Lesbians, Gays, Kinship*. Columbia University Press

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

शब्दावली

वैवाहिक संबंध : विवाह द्वारा वजूद में आया संबंध, जैसे सास/ससुर और बहू–दामाद आदि

पितृबंधु : पुरुष–वंश–क्रम द्वारा किसी एक पूर्वज के वंशज, जो एक साथ एक पुरुष मुखिया के अधिकार में रहते हैं।

पितृबंधुत्व : वंशज का निर्धारण, पुरुष–वंश–क्रम की अखंडित शृंखला से होती है

गठबंधन : समाज की ऐसी दृष्टि जिसमें सामाजिक सम्मिलन और समूह की परिभाषा के लिए वंश–क्रम समूहों के बीच वैवाहिक संबंध (अक्सर बार–बार) पर ज़ोर रहता है।

संदिग्ध पक्षीय वंश : इसमें वंश की पहचान बिना किसी तय नियम के माता या पिता में से किसी भी पक्ष से की जाती है।

जाति : जन्म के आधार पर स्तरीकरण (ऊँच–नीच) की यह प्रणाली विशेष तौर पर भारतीय उपमहाद्वीप में पाई जाती है।

वर्ग : इससे सामाजिक रुतबा या स्थिति का बोध होता है। कार्ल मार्क्स ने उत्पादन प्रणाली पर नियंत्रण होने या न होने के आधार पर इसे परिभाषित किया। वहीं, वेबर ने इसके साथ 'रुतबा' (सामाजिक सम्मान या प्रतिष्ठा के आधार पर सामाजिक समूहों के बीच अंतर) और 'पार्टी' (सामान्य पृष्ठभूमि, उद्देश्य या हित के आधार पर एक साथ काम करने वाले व्यक्तियों का समूह) जैसे कारकों को भी जोड़ा।

वर्गात्मक नातेदारी प्रणाली : वर्गीकरण की एक रूप जिसमें संपार्श्विक परिजन को लाइनियल परिजन के साथ समान रूप से समझा जाता है (उदाहरण के लिए पिता के भाई के बच्चों को भाई या बहन के समान शब्दों से बुलाया जाता है)

मातृ–बंधु : रक्त से संबंधित दोनों पक्षों के सभी रिश्तेदार।

मातृबंधुत्व : माता या पिता के पक्ष से पूर्वज और व्यक्ति के संबंध

कमेन्सलिटी : एक साथ भोजन करना, भोजन साझा करना। इसके पैटर्न में घरेलू और सामाजिक दोनों संबंध प्रदर्शित होते हैं।

दाम्पत्य : विवाह आधारित बंधन या संबंध, जैसे पति और पत्नी के बीच।

समरक्तमूलक संबंध : माता और बेटे/बेटी, भाई–बहन, भाई–भाई, बहन–बहन, पिता और बेटे/बेटी आदि के बीच के संबंध

समरक्त : जन्म या समान रक्त आधारित संबंध।

संस्कृति : संस्कृति उन विश्वासों, मूल्यों, भाषा, संचार और प्रथाओं को संदर्भित करती है जिन्हें व्यक्ति समाज के सदस्यों के रूप में साझा करते हैं और सीख सकते हैं।

वंश : माता–पिता–बच्चे के संबंधों के सांस्कृतिक रूप से मान्यता प्राप्त अनुक्रम – पिता से पुत्र के पुत्र (पितृवंशीय) और माता से बेटी की बेटी (मातृवंशीय) के वंशज – के माध्यम से पूर्वज (या पूर्वजों) से जुड़ाव आधारित संबंध।

वर्णनात्मक नातेदारी प्रणाली : वर्णनात्मक प्रणालियाँ संपार्श्विक रिश्तेदारों से वंश को अलग करती हैं। इस प्रकार, 'कज़िन' वर्णनात्मक प्रणाली में एक शब्द है। हालाँकि, इस शब्द को एक वर्गीकृत शब्द कहा जा सकता है क्योंकि इसमें कई अलग–अलग प्रकार के रिश्तेदार शामिल हैं।

घरेलू समूह : मेयर फोर्ट्स ने घरेलू समूहों को एक हाउसहोल्डिंग और हाउसकीपिंग समूह के रूप में परिभाषित किया है जो अपने सभी सदस्यों के विकास के लिए आवश्यक संसाधनों को व्यवस्थित करने में मदद करता है।

अंतर्विवाह : अपने समुदाय के के भीतर विवाह करना

बहिर्विवाह :अपने समुदाय के बाहर विवाह करना

विस्तारित परिवार : दादा–दादी और अन्य परिजनों से युक्त नाभिकीय परिवार

फ़िलिएशन : उस संबंध को संदर्भित करता है जो एक व्यक्ति एक निर्दिष्ट माता–पिता के बच्चे होने के तथ्य के रूप में विकसित करता है। यह किसी के माता–पिता की वैध संतान होने के तथ्य से निर्मित संबंध को दर्शाता है।

संतानत्व : माता–पिता और संतानों के बीच संबंधों की पहचान के लिए एक मानवशास्त्रीय शब्द।

दत्तक : ऐसे बच्चे का पालन जो रक्त संबंध से नहीं जुड़ा है

गे : समलैंगिक पुरुष

जेंडर : जेंडर, स्त्रीत्व और पुरुषत्व से जुड़े कुछ मानदंडों और मूल्यों के संदर्भ में पुरुषों और महिलाओं के बीच सामाजिक या सांस्कृतिक भेद को संदर्भित करता है।

सामान्यीकृत विनिमय : विवाह–विनिमय की एक प्रणाली जिसमें महिलाओं को समूहों के भीतर परिसंचारी के रूप में देखा जाता है। पत्नी देने वाले पत्नी लेने वाले नहीं हो सकते।

जेनेट्रिक्स : जैविक माता

विषमलैंगिक : अपने से इतर लिंग के प्रति आकर्षण रखने वाले लोग

एचआईवी : ह्यूमन इम्युनोडेफिशिएंसी सिंड्रोम

गृहस्थी : यह मूल आवासीय इकाई है जहाँ आर्थिक उत्पादन, उपभोग, विरासत, बच्चों का पालन और आश्रय का आयोजन और संचालन किया जाता है। घर एक आवासीय और घरेलू इकाई है जिसमें एक या एक से अधिक व्यक्ति एक ही छत के नीचे रहते हैं और एक ही चूल्हे का पका हुआ खाना खाते हैं

प्रत्यक्ष विनिमय : गठबंधन की एक प्रणाली जिसमें परिजन समूह अप्रत्यक्ष रूप से पत्नियों का आदान–प्रदान करते हैं, ताकि एक पुरुष को अपनी वास्तविक या

वर्गीकृत माँ के भाई की बेटी (एमबीजेड–मातृवंशीय गठबंधन) या पिता की बहन की बेटी (एफजेडडी – पितृवंशीय गठबंधन) से विवाह करना पड़े।

प्रतिच्छेदन : विभिन्न सामाजिक श्रेणियों जैसे जाति, वर्ग, जेंडर और नस्ल के बीच अंतर्संबंध, प्रतिच्छेदन को संदर्भित करता है।

संयुक्त परिवार : माता–पिता, दादा–दादी, भाई–बहन और संतानों से बना परिवार

लेस्बियन : समलैंगिक महिला

लेविरेट : पुरुष का अपने मृत भाई की विधवा पत्नी से विवाह के अधिकार का नियम

सहजीवन (लिव इन) : दो वयस्कों का बिना विवाह किए, अंतरंग संबंध में स्थायी तौर पर लंबे समय तक एक साथ रहना

भौतिकतावादी सिद्धांत : यह कार्ल मार्क्स की सोच पर आधारित है, जिनके लिए भौतिक या आर्थिक परिस्थितियाँ सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं की नींव थीं।

मातृवंशीयता : माता की तरफ से वंश–क्रम तय करना

नया नातेदारी अध्ययन : जेंडर, व्यक्तित्व, समलैंगिक परिवार, नई प्रजनन तकनीकों और अन्य संबंधित मुद्दों के अध्ययन पर अधिक ध्यान देने के साथ 1990 के दशक में नए नातेदारी अध्ययन सामने आए। इसमें जोर सत्ता और अधीनता के विभिन्न आयामों के रोजमर्रा के अनुभव और प्रतिनिधित्व में समझने पर है। साथ ही, अंतर्विरोधों, विरोधाभासों और द्वैधों पर ध्यान देने का प्रयास किया जाता है।

नॉन एग्नेटिक : कम–से–कम एक महिला लिंक से उत्पन्न वंशज

नाभिकीय परिवार : केवल माता–पिता और उनके बच्चों से बना परिवार

पितृवंशीय : पिता की तरफ से वंश–क्रम तय करना

पितृस्थानीय : विवाह के बाद दंपत्ति का पति के परिवार के साथ रहना

मातृस्थानीय : विवाह के बाद दंपत्ति का पत्नी के परिवार के साथ या उसके नजदीक रहना

बहुपति विवाह : एक महिला का एक से अधिक पुरुषों से विवाहित होना

बहुपत्नी विवाह : एक पुरुष का एक से अधिक महिलाओं के साथ विवाहित होना

लोकप्रिय संसकृति : लोकप्रिय संस्कृति को उन विश्वासों, प्रथाओं के समूह के रूप में देखा जा सकता है जो समूह या समुदाय के अधिकांश सदस्यों द्वारा व्यापक रूप से साझा किए जाते हैं। इसमें समाज के प्रमुख विचारों (संस्कृति) का फिल्म, मीडिया, टेलीविजन, फैशन, मनोरंजन, साहित्य, खेल और भाषाई कन्वेन्शन जैसे विविध माध्यमों द्वारा चित्रण शामिल हो सकता है।

सोरोरेट : पुरुष का मृत पत्नी की बहन से विवाह का नियम

सौतेला परिवार : ऐसा परिवार जिसमें माता और पिता में से कम–से–कम की संतान/संतानें पूर्ववर्ती विवाह से जन्मी होती हैं।

सरोगेसी : सरोगेसी परिवार का प्रयोग ऐसे परिवार के लिए किया जाता है जो किसी ऐसे अन्य (आम तौर पर महिला) के शामिल होने से बनता है जो भ्रूण के विकास के लिए अपनी कोख किराए पर देती है।

ट्रांसजेंडर : वे जिनकी जेंडर अस्मिता उन्हें बचपन में प्रदान किए गए सेक्स से भिन्न होती है।

एकलवंशीय वंश–क्रम : इसमें वंश–क्रम या तो पिता की तरफ (पितृवंशीय) से चलता है या फिर, माता की तरफ से। एक साथ दोनों से नहीं।

मातृस्थानीय : महिला के घर में निवास

पितृस्थानीय : पुरुष के घर में निवास